

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178579

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 891.431
R 14 A

Accession No. H 1034

Author राघव, रंगिय

Title अजेय स्वर्ग 1944

This book should be returned on or before the date
last marked below.

अजेय खण्डहर

‘रंगेय राघव’

जुलाई १९४४

मूल्य २) रु०

मुद्रक—

राजपूत एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस,
आगरा ।

भङ्गार

चमचमाती
वेगवाली
राजपूती नाजवाली
आग पानीदार चल
कज्जाक की तलवार
सा यह गीत

पार कर यह भूमि
नभ में घूम
रह रह भूम
पार कर सतलज गभीरा, व्याम
पार शैलों के उधर ईरान
पार कर यूराल
बनकर मुक्ति की नवज्योति
मेरा शब्द स्तालिनघ्न द
फिर से चल उठे भङ्गार
रह रह—

नाज़ियों के बीच
उठी हैं शक्ति फ़ासिस्टी
कुचलना है हमें इनको
बनेंगे दास मृत्युञ्जय ?
भुकादो दर्प कातिल का
खड़ा हर मुल्क लड़ने को
कुचल दो आज पूंजीवाद का
अंतिम प्रयत्न विधात यह
ओ गीत !
एक भोंका वायु का बन
यह जगादे देश
भूला देश

लग रही जो आग
हिंद का हर भाग
जो झुलमता जा रहा है हार
एक बादल सा घुमड़ कर रो
फिर मिटादे भूख यह
दासत्व बंधन तोड़

एक नंगा वृद्ध
जिमका नाम लेकर मुक्त
होने को उठा मिल हिंद
काँपते थे सिंधु औ' साम्राज्य
सिर झुकाते थे मिनमगर त्रमन
आज वह है बंद
मेरे देश हिंदुस्तान
बर्बर आ रहा जापान
जागो जिंदगी की शान
निबल करती फ़ट है यह ?
क्या हुआ गर लूट है यह
क्या हुआ यदि भूख है यह
शक्ति जनता की अमर है
शक्ति वह जिसकी भुजा पर
ताज औ' पिरमिड बने थे
सिकन्दर की विजय जिमकी दास
बैज़न्टार्डन बैबीलोनिया औ' गुप्त
मुगलिया वैभव म्वयं ज्यों श्वास
जागे भूल मदमय भूल
लहरों से उठे, पर धूल
हों हों धूल के बन ढेर
बिखरे छोड़ टूटा गीत

शक्ति वह जनशक्ति
महलों की तड़पती नींव
अब भी है
पराजित हो नहीं सकती
दबाये दब नहीं सकती
उठो ओ वीर !
भीषण शैल से गंभीर
जागो मुक्त माँ की आन
फिर हिमालय सा उठे यह शीश
यमुना घाघरा गंडक,
कि पतली गोमती की धार
मिल मंदाकिनी मी'मुक्त
एके की अमिट यह धार
साँचे फिर भुलमता देश
लहरें शक्ति के ही खेत
जागो अमरता के गान !

आह वे साम्राज्य
बन दुःस्वप्न के अभिशाप
वे इतिहास कारा बद्ध
ननशिर त्याग गरिमालाम
ठोकर खा प्रबल जनशक्ति
की, करते विकल चीत्कार
प्यारे देश हिन्दुस्तान !
मिट गये साम्राज्य
बंधन भाव
एक शिशु पग चिन्ह से वे
समय पथ से मिट चले हैं
मिट न पाया कौन
जनता, यह प्रबल जनशक्ति
जीवन युद्ध की अभिव्यक्ति
मानव बंधनों की मुक्ति
तोड़ कर इतिहास का तम

देख अपनी शक्ति
जीवन की अपरिमित शक्ति
युग युग से खड़ी चट्टान !
वर्ग वैभव के अनेकों
दीप तम में झिलमिलाये
किन्तु उठता लाल सूरज
देख निष्प्रभ सकपकाये
किंतु यह जनशक्ति
सागर सी थपेड़े मार
मेघों सी घुमड़ घनघोर
अतय अमरता अभिराम
अब भी बढ़ रही जयमान !

आर्य आये द्रविड़ बांधे
किन्तु उनके रंग का अभिमान
नील जलधर वर्ण में लयमान
पृष्ठता सत्ता भटकता आज
और आये, और खोये,
यवन, पल्लव, शक, कुशान,
हूण आये
लड़खड़ाकर गुप्त-वैभव
गिर गया अभिभूत
किंतु जनता-मिधु में वे
खो गये जैसे लहर अनवृक्ष
और बाबर के विरुद्ध
उठे लोदी, उठे सांगा
बाहरी पा शक्ति
किंतु
अकबर एक एके की
प्रबल धर नींव था मजबूत
वह शिवाजी उठा केवल
ले मराठा शक्ति
शोषित त्रस्त ले जनशक्ति

भिक्खु बल वह हो गया था चूर
 क्योंकि जनता से रहा था दूर,
 अरे वह जनक्रान्ति
 जिसमें ध्वनित अब भी फ्रांस—
 युवक वह नैपोलियन भी,
 उठा जनबल साथ;
 वह मुहम्मद और ईसा
 वह कबीर, अनेक,
 और वह तुलसी हंसा था
 मुगल वैभव देख
 और मन्त्रहमौ छहत्तर ईस्वी कर याद
 गरजता अतलान्त अबतक
 उठे सब जनशक्ति पर ही;
 आज जो माधारणों से
 सतत अभिमानी विशद इंगलैंड
 का बना मंत्री खड़ा है कौन ?
 अरे वह जनशक्ति का ही—है प्रतीक !
 और दस दिन माँस्को के
 हिल गया था विश्व !

आज मैं
 तुमको सुनाऊँ गीत
 रूस की यह जीत !
 चीन जिसको देखकर बलमान
 जाग मेरे त्रस्त हिन्दुस्तान
 मन अठारह, मन बयालिस
 एक जारिस्मिन लड़ा था
 एक स्तालिनग्रेद
 हिंद के हित युद्ध दो यह
 एक.....
 विजय जनता की अपरिमित
 आग है दिल में घुमड़ती
 नू युगों का एक तारा

छिप गये सब तू न हारा
 हिमालय सा प्रबल उन्नत
 सिंधु सा गंभीर भीषण
 विन्ध्य सा उन्मत्त बीहड़
 युगान्तर की ज्योति तुझ में
 देख—
 भूखा आज है बंगाल
 तिरवांकूर मालाबार
 सारा देश
 जन जन आज
 जाग मेरे देश
 लहरों सा चले यह पाश
 भोंकों का मिला तूफान
 देखें कौन ऐसा ज्वान
 सम्मुख कर सके अभिमान
 मेरे हृदय हिन्दुस्तान !
 भूल मत संसार आगे
 बढ़ रहा है तोड़ बंधन
 भूल मत अब भी गगन में
 भर रहे हैं विकल क्रन्दन
 कौन है जो दाब लेगी
 यह धधकती अग्नि भीषण
 शक्ति—ऐसी शक्ति
 कुचलेगी विषैले शत्रु के फन
 बाहनी
 उन्मादिनी
 तेरी चलेगी विजयिनी
 संसार कापेगा
 कि जग में ज्वार आयेगा
 बहेंगे सब कलुष धुलकर—
 उठेगा चीन विजयी हो
 उठेगा हिन्द विजयी हो

उठेगा रूस विजयी हो
 उठेगा वह विकल यूरुप
 कटेंगे बांध साम्राज्यी
 मिटेंगे बांध पूंजी के
 कि अमरीका
 कि अफरीका
 सभी हैं एक
 वह इंगलैंड जागेगा
 न क्यों विश्वास
 यह जनशक्ति शाश्वत है
 अमर है, मुक्ति है
 कायर !
 न डर
 भला जुल्मों से डरता तू
 भला बाधा से रुकता तू
 तड़पता भूख से व्याकुल
 सड़ा अपमान में गल गल
 विजयिनी कौन ?
 मानवता
 कि यह जनता
 उठा मिर
 देख गिरता है
 किमी के शीश से वह ताज

हिलते आज मिहामन
 अनेकों पीढ़ियों के पाप
 धो दे आज तेरा खून
 जागो नये हिन्दुस्तान !
 गगन चमका
 भरे तारे
 खो गये पर सब भ्रमण कर
 दूर बिखरे
 टिमटिमाये
 किंतु ध्रुव तारा
 न हारा
 आज भी सब घूमते हैं
 भ्रमण करते भूमते हैं
 देख मानव मुक्तिका यह दीप
 इसकी ज्योति में तू जीत
 गा। उठ-गीत—
 बंदी जाग
 घर में लग गई है आग
 चल बागी प्रबल हुंकार
 जागो याद कर गत मान
 मेरे प्राण हिन्दुस्तान
 स्तालिनघ्रे द हिन्दुस्तान ।

एक प्रबल विस्फोट भयानक
धुंआधार फिर अधियारा
गरज उठी बासठवीं सेना—
आया दुश्मन हत्यारा
निर्भय बन्दूकें कंधों पर
आँख खोल कर तत्पर थीं
तोपों में से लाल जवानों
करतीं रह रह लपलप थीं
कंधे ऊँचे, गर्दन ऊँची
एन्टीएयर-क्राफ्टगन कर
आस्मान से आँख लड़ाये
ताक रही थीं आज निडर
सब पर हिस्मत सी छाई थी
आज हुए सब मृत्युञ्जय
नई सृष्टि रचने वालों पर
उमड़ रहा था आज प्रलय
तूफानी लहरों में उठकर
खड़ी हुई चट्टान अभेद
जर्मन सेनाएं बढ़ती थीं
और खड़ा था स्तालिनभेद
आज रूस की लाल शान पर
बार कर उठा था बर्बर
जिसका चिर विरोध करती सी
थी बोलगा में मत्त हहर
बर्फ गिर रही थी गई सी
अंधा करना चाह रही
कहती थी फासिस्टो भागो
यहाँ मिलेगा पार नदीं

चारों ओर भयानकता है
चारों ओर कठोर हृदय
यहाँ मौत जीना न रहा है
लड़ कर लेनी आज विजय
और एक हमला, बन्दूकें
उगल उठीं अंगारों को
तड़प तड़प गिरते थे योद्धा
सह न सके हुंकारों को
दुनिया की आँखें हैं हम पर
यहाँ लाल भंडे की टेक
बच्चा बच्चा गरज रहा था
खड़ा रहेगा स्तालिनभेद
चौबिस बरस बाद तेड्स को
और अगस्त माम में ही
बार किया है फिर दुश्मन ने
अपने अधेपन में ही
ये घन शीघ्र बिलस जायेंगे
फिर भी करने बज्र प्रहार
वह अधियाली बीत चुकी थी
यह घिरते आते हर बार
टैंक बैटरी पैदल सब ही
आये थे लेकर गर्जन
मनु अट्टारह का रण शंकित
देख रहा था खोल नयन
बदल गये रण बदल गये दिन
पर आजादी जीवित है
हिस्मत है हर जन में, दुर्गम
यह जन क्रान्ति असीमित है

अब के गर्जन बधिर बनाता
 अब के मृत्यु सतत खेली
 स्तालिनघ्रेदी चिर साहस ने
 जो गर्वोन्नत ही भेली
 जला नगर ज्वाला में खोया
 धूँए में हुंकार उठा
 गगन भूमि का भेद छिप गया
 तम का पारावार उठा
 एक बार फिर आयुध गूँजे
 बर्बरता का घोष उठा
 ईंट ईंट से मानवता की
 गर्जन करता रोष उठा
 क्रान्ति दुर्गसा जारिस्मिन यह
 स्तालिन की ले शक्ति अपार
 उठा नृत्य करने को युग युग
 गूँजेगा बन रिपु की हार
 मन अट्टारह में उठ पाया
 लास्य चरण जो राग लिये
 बयालीस में उठा दूसरा
 तांडव का उन्माद लिये
 गिरते जर्मन यूरुप भर में
 राष्ट्र उठ रहे हैं एक एक
 रवि गिरते ही बुदबुद करते
 जगते ज्यों नन्त्र अनेक
 बोल्गा की दुस्तर धाराएँ
 पग धोती रहती जिमका
 उत्तर दक्षिण-निशा दिवा को
 भोरमदश ज्यों मिला रहा
 रेतीले तट छहरा करते
 और काजकिस्तान विशद
 अपने स्टैपी लहराता है
 पीछे छाया सा अविरत

डोन और क्यूबन की सुन्दर
 मोहित श्यामल उपत्यका
 थोड़ा सा देखा करता है
 दृढ़ वक्षस्थल फुला फुला
 और क्रान्ति की मंजिल बनकर
 आज खून से न्हाता है
 जिसकी प्रतिध्वनि से कंपित हो
 नभ भी झुक अलसाता है
 स्तालिनघ्रेद नगर युग युग से
 मर्यादा अनुगुण लिये
 खड़ा हुआ है बना महागिरि
 रिपु की धारा छिन्न किये
 मन चौदह के महायुद्ध में
 यहीं मान था जीवन का
 निर्भरथा कण-कणपर सुखदुःख
 और भाग्य वह जन जन का
 मन अट्टारह में मजलूसों
 ने जीता था जारिस्मिन
 अरे प्राण दे रक्षा की थी
 करती जो अबतक प्रतिध्वनि
 क्रैम्सोनोव की वह सेनाएँ
 उत्तर दक्षिण के अभियान
 स्तालिन के उन भुजदण्डों ने
 लौटाये थे जर्जर स्तान
 तब तो लेनिन भी जीवित था
 और ट्रौट्स्की निर्बल था
 महाक्रान्ति के सफल चरण ने
 नृत्य किया था चंचल सा
 अरे भोर की लालिम ने ही
 तब धो डाली रात गहन
 अब दुर्दिन के ये भीषण घन
 अभिमान की करते गर्जन

किर्गिज कौसेक रुमी उज्ज्वल
मंगोली सब भाई हैं
अपनी अपनी संस्कृति बढ़ती
सब ने राह मुझाई हैं
बर्फ चीर कर साइबेरिया
जिनके बल से हारा मा
मोना उगल रहा है रह रह
बहा रहा वैभव धारा
कल तक उसमें मानवता के
फूल सड़ाये जाते थे
आज उन्हीं की गंध फैलती
चेतन संस्कृति लाने से
यह ज़ारिस्किन अरे यहीं तो
नींव पड़ी इस संस्कृति की
स्तालिनग्रेड चिन्ह का उन्नत
मानवता की उन्नति की
शांति और कल्याण कूकते
बोल्गा लहरें शांति मयी
आलिंगन थे कर्त्तव्यों के
आशाएँ थी कांतिमयी
मरकत सी हरियाली हँसती
हीरों से घर ज्योति भरे
नीलम मानभ और स्वर्ण की
लहरों ने थे राम रचे
बोल्गा पर स्टीमर आते थे
गूँजे गीत अमल सुन्दर
श्रृंखला सी बिछला करती
तरु तरु में कोमल मर्मर
धूआँ-ट्रैक्टर प्लांट विशद मे
रैड ऑक्टोबर बैरीकेड
चिमनी में से घुमड़ लहरता
श्याम लहरियाँ करती खेल

बाजारों में स्वस्थ मनुज हैं
मुनते मशीनरी का नाद
प्रबल ठहाके मार रहा ज्यों
सागर का भीषण उन्माद
जीवन जीवन शक्ति अपरिमित
और प्रकृति से है संघर्ष
क्रम क्रम मानव जीत रहा है
नृतनता आती हर वर्ष
शुभ्र बने घर फिर हरीतिमा
नगर अनोखा लगता है
बोल्गा की धारा में जिसका
बिंब स्वप्न सा लगता है
रात कभी जब तारे नभ में
टिमटिम झलका करते हैं
बोल्गा की लहरों पर सांझी
अपने स्वर को भरते हैं
दूर नगर में जलती जगमग
बिद्युत ज्योति प्रखर उज्ज्वल
एक ज्योति की श्रृंखला सी ही
लहरों तक आती चंचल
कलरव हलचल खेल कूद वे
नाटक मर्कम होटल स्टोर
जन जाग्रति की शक्ति मचलती
भरती दिग्दिगंत में रोर
महानगर से गीत उमड़ते
स्वर बोल्गा को मिहराता
गुंजित लहरों में कंपनमय
ज्योति लहरियाँ झितराता
नहीं विश्व ने देखी अबतक
वह समृद्धि घर घर आई
चिर समानता की सुहृदयता
जन जन में भर भर लाई

यही सोवियत् संस्कृति विरली
 पूंजीवादी दुनिया में
 जिसकी उन्नति देख रहे हैं
 स्वार्थ भरे जन दिल थामे
 आज कितु अणु अणु से उठती
 महा साम्य ध्वनि गीतों में
 मानव निर्माता हैं जग के
 नव रचना की जीतों में
 पर न सोवियत के बाहर है
 ऐसा दृश्य मधुर सुन्दर
 मानव कर न विभाजन पाया
 अपने उत्पादित श्रम पर
 आज हाथ यह भूला मानव
 भटक रहा है डगर डगर
 उमका असंतोष छाया है
 इस जीवन की लहर लहर
 यहाँ निरंतर शोषण होता
 एक दूसरे का अविरत्
 यहाँ मधुर श्रम वह जाता है
 रह जाता जन मूक दुःखित
 रंग भेद से बनी सभ्यता
 वर्ग भेद से विकल समाज
 जन्म भेद से सुख दुःख मिलते
 जीवन भर विकृत अभिशाप
 यहाँ स्वप्न सुपने ही रहते
 जाग्रत मानव रोग ग्रसित
 यहाँ वामना के दुर्बल पशु
 अपमानों में पड़े तृपित
 अधिकारों के अहंकार में
 जीवन नित्य नई पीड़ा
 यहाँ ज्ञान का दीपक धुंधला
 जलता है, कायर कीड़ा

एक भार सा यौवन आता
 जिसमें 'स्वार्थों' की तृष्णा
 और जरा में मानव भुकता
 घेर रहीं आंधी कृष्णा
 यहाँ परस्पर द्वेष क्लेश में
 अपनी ज्योतिर राह भुला
 क्षण-भंगुरता के पाशों में
 नियम हीन जीवनी भुला
 बना लिया भगवान एक है
 एकच्छत्र प्रबल शोषक
 धर्म न्याय का दंड वर्ग-सुख
 अत्याचारों का पोषक
 रन्ध्र रन्ध्र में असन्तोष है
 तंतु तंतु में शोक रहे
 प्रकृति नियम से यह विरोध
 कर अंधकारमय ओक करें
 यहाँ मृत्यु की मीठी निद्रा
 में यह मूर्ख कांप डरता
 यहाँ युगान्तर का प्रकाश भी
 तम में बद्ध विकल रहता
 हिंसा की स्वार्थी ज्वाला में
 सत्ता का है युद्ध मचा
 यहाँ रक्त के प्यासे मानव
 प्रकृति साम्य ही नहीं बचा
 जीवन भर श्रम करता कोई
 नहीं पेट भर खा पाता
 और आलसी वर्ग मजे में
 अधिकारों का निर्माता
 यहाँ स्त्रियाँ हैं पेट दिखातीं
 विकती हैं दर दर भूखी
 यहाँ स्वामिनी दासी ही हैं
 उलभी सी दुर्गम गुत्थी

यहाँ पड़ा करते अकाल हैं
 वितरण ठीक न हो पाता
 अपने दोषों को ईश्वर की
 छलना के सिर धर आता
 यहाँ महल है एक, मगर हैं
 सड़े हुए घर लाखों ही
 यहाँ चोर घूमा करते हैं
 सज्जा रखकर शाहों की
 यहाँ बात के दीपक जलते
 पर कर्मों का अधियारा
 ऐसी दुनिया में उठता है
 अरे सोवियत् का तारा
 लंदन औ' न्यूयार्क नगर में
 नारी बिकती फिरती हैं
 कलकत्ता मदरास आदि में
 भिखमंगों की बस्ती हैं
 मास्को स्तालिनग्रेद नगर में
 मानव ऐसा दीन नहीं
 अरे पेट के लिये वहाँ है
 कोई ऐसा हीन नहीं
 बर्लिन, रोम, टोकियो भाँगे
 मजदूरों के खून भरे
 यहां स्वयं मजदूर शक्ति है
 वह क्यों कोई भेद करे
 अमरीका ब्रिटेन आदिक से
 इनके हैं साम्राज्य नहीं
 यहां फूट वैषम्य गुलामी
 के विषमय व्यापार नहीं
 यहां गांव का एक खेत है
 यहां कारखाने अपने
 यहां सभी की शक्ति सम्मिलित
 मूर्तिमान करती सपने

आज अनेकों महालैंट हैं
 जिनमें हैं लाखों मजदूर
 अब जहाज बनते हैं अविरत्
 विद्युत् शक्ति बनी भरपूर
 कल की नीरवता को तोड़ा
 कई कारखानों ने भी
 बनी पुरानी, उठती, नूतन
 किन्तु नहीं रुकती श्रेणी
 बीस बरस में यौवन आया
 विद्यालय बन गये अनेक
 आज उफनती शक्ति नई है
 अपने श्रम का उन्नत वेग
 भोंका आते ही पानी में
 लहरें ज्यों कर उठतीं रोर
 पग पग पर संस्कृति गति भरती
 सभी चले उन्नति की ओर
 आज न पथ पर धूल मिल रही
 सड़कें नई बनाई हैं
 जिन पर मानव की मेधा ने
 माधन शक्ति लगाई हैं
 अंधकार की सघन विकलता
 बिजली ने बिखराई है
 ठौर ठौर हैं स्तम्भ प्रकाशित
 ज्योति नई उमगाई है
 आज न मानव दास यहाँ पर
 जन्म वर्ग के भेद नहीं
 एक शक्ति बन कर वे दृढ़ हैं
 भौतिक बंधन खेद नहीं
 नारी नर सी ही स्वतंत्र हैं
 शिशु भी शिक्षा पाते हैं
 जन जन मानवता के सुख
 की बातें उन्हें सिखाते हैं

मंथ्या की धुंधली छाया में
 उपवन में हँसियाँ गूँजीं
 उत्साहों के प्रबल वेग लख
 ममता ने आशा चूमी
 छोटे झुके हुए घर उन्नत
 युग स्तंभों से उठ आये
 जिनमें से प्रतिध्वनित रेडियो
 स्वर समीर पर लहराये
 बीत चुके हैं चौबिस जाड़े
 चौबिस बार भरे पत्ते
 चट्टानों से खड़े हुए हैं
 वे उस दिन के मृदु बच्चे
 चौबिस बार भ्रमण कर पृथ्वी
 घूम रही अब भी! अविराम
 सतत चल रही जीवन पथ पर
 मानवता अब भी अभिराम
 इन वर्षों में रूस देश पर
 जग भर की थी दृष्टि गड़ी
 किन्तु सोवियत शक्ति अपरिमित
 महा सूर्य सी मुक्त अड़ी
 काले काले केश पक गये
 और समय ने रेखायें
 भिन्ध मुखों पर खींचीं रह रह
 किन्तु न बुझती लिप्याएँ
 वे घर हृद् प्रस्तर पेशी मे
 ऑरलौक से खड़े अभेद
 जो कल शैशव में मृदुतन था
 आज युवक था स्तालिनघ्रेद
 मजदूरों ने अपने बल से
 नये विश्व की नींव धरी
 सींच खून से फसल उगाई
 उम पर बिजली आज गिरी

जो मिट्टी के बना घरोंदे
 खेला करते थे पथ पर
 आज दुर्ग के ग्रहरी बन कर
 खड़े हुए थे मुक्त निडर
 अंध तमस में ज्योति जली थी
 संस्कृति पथ पर चल मजदूर
 पूँजीवादी वर्ग-मान को
 करता था रह रह कर चूर
 कल के मिट्टी के ढेले ही
 लोहा बन कर गरज उठे
 कल के पौधे महावृक्ष बन
 छाया देते भूम उठे
 ढंका समय ने घास पेड़ से
 कल के युद्ध स्थलों को था
 जाग चलाता था अपने कर
 जो कल तक शिशु मा सोता
 मन्सत्रह की अमिट अमानत
 आज बचानी ही होगी
 शान शहीदों की मर कर भी
 आज निभानी ही होगी
 संस्कृति के इस नये पक्ष को
 तम से रक्षित करना है
 अरे धरा पर सागर लहरें
 पर इस घर को बचना है
 यह पैरिस का गर्व नहीं जो
 रहे पराजय पर बाकी
 जीवन है तो सभी शक्तियाँ
 बन जायें अपनी दासी
 लेनिनघ्रेद नगर चिल्लाया
 ब्लेडीवोस्टक गूँज उठा
 एक शब्द बन क्रोध अगन का
 फिर शस्त्रों को चूम उठा

रक्त शोषकों के जुल्मों को
 भूलेगा इतिहास नहीं
 फिर मजदूर किमान उठे हैं
 दब पायेगी आग नहीं
 अरे पाँच घंटों का दिन है
 पहले तो दिन रात मरे
 अब जो है वह सब अपना है
 पहले अपना किमे कहें
 अब जीवन के ये सुख सारे
 हर मानव के साधन हैं
 पहले वर्गों के हित मरते
 अपराधों के ताड़न में

अरे आज हिटलर की फौजें
 मजदूरों के उठीं विरुद्ध
 कुचल रही हैं देश देश को
 आज आ रही भीषण क्रुद्ध
 अगर बह गये इस धारा में
 फिर तो कोई पार नहीं
 उठो उठो—मब फिर चिल्लाये
 आज रोक दो धार यहीं
 शंकाओं से हृदय भरे थे
 तत्परता का था संदेश
 लुब्ध हो रहा था नभ भूला
 विचलित सा था स्तालिनग्रद

घेर रहे हैं जर्मन रह रह
 स्तालिनभेद नगर क्षण क्षण
 गोलाकार पंक्ति में बढ़कर
 दाब रहे करते गजन
 पीछे बोल्गा थी कोनों से
 जिसको जर्जर करते थे
 एक ढाल में ढाँप साँप को
 बिल्कुल निर्बल करते थे
 जैसे वह बोल्गा कमान थी
 जर्मन-वृत्त धनुष सा था
 इनके बीच आज रूसी बल
 कारा में धिरता जाता
 एक चपेट कि इन लालों को
 आज डुबा दें बोल्गा में
 प्रलय सिंधु की लहरें बनकर
 जर्मन बढ़ते तृष्णा में
 अरे यही है अंतिम बंधन
 आज इसी को खोलेंगे
 भग्न विमर्दित मजदूरों का
 रक्त धूलि में धोलेंगे
 बिजली बनकर गरज उठा था
 हिटलर यूरुप शम्यों पर
 टूट पड़ा था जला दिये थे
 उन्मद हँसता विजयों पर
 खून बार्साई का बोला
 जड़े काँपती लन्दन की
 थहर उठा न्यूयार्क दूर पर
 महमी आशा जन जन की

उठा वेग से उठा प्रबलतम
 उठा कि झुकना क्या जाने ?
 घास फूस सा यूरुप कुचला
 आर्य्य दंभ के गा गाने
 साम्राज्यी ईगल जिसका वह
 लगा गगन में मँडराने
 प्रेमीथियस बद्ध विह्वल था
 आज पराजित भय माने
 पृथ्वी जीती नभ को जीता
 देश देश चरणों पर भ्रांत
 हाहाकार कर उठे रह रह
 रक्त बहा उर उर से क्लांत
 जिनकी शक्ति अक्षुण्ण वेग थी
 फ्रांस विकल हो चरणों पर
 उफने वैभव का विलास अब
 पटक रहा पाषाणों पर
 आज दासता के वे बन्धन
 सारा जीवन घोट रहे
 अभिमानों के महल भग्न हो
 विकल धूलि में लोट रहे
 वह ब्रिटेन जो साम्राज्यों का
 अंतिम बना खलीफा है
 काँप गया लख कर कमाल यह
 मान हो रहा ढीला है
 यह समुद्र था और नहीं तो
 गगन भरा फासिस्टों से
 खंडहर से वे महानगर थे
 गिरते भीषण चोटों से

लोहे के अभिमानी इंगलिश इस गर्जन से भीत हुए महा घृणा में उस हिटलर की भुन भुन कर वे त्रस्त हुए जो भारत को कुचल रहे थे उन पर जब आघात हुआ साम्राज्यी वर्गों के कारण जनता का ही नाश हुआ वह मजदूर ब्रिटेन देश के बचा सके वह ही पानी चेम्बरलेनी घृणित चक्र थे भूल चुके अपनी वाणी हिटलर भी बल में मदमाता अवहेला कर जनता की खून पी रहा नरमुण्डों में जड़े खोद मानवता की मनु इकतालिस में मजदूरों पर निशि में बढ़ बढ़ आया मोता सिंह बाँध कर उसमें दुगना दर्प समुद्र छाया वह ब्रिटेन की साम्राज्यशाही जो कि रूस की दुश्मन थी आज बढ़ाती थी अपना कर मलिन लिये श्री आनन की मजदूरों ने थामा कर को वह ब्रिटेन भी अपना था मजदूरों के मुल्क सभी हैं साम्राज्यशाही ढंकना मा छः हफ्ते छः वर्ष बन गये दम हफ्ते दम युग से थे रूसी दुर्गम जनसमुद्र में थके हाथ उसके खेत

विजित भूमि में पूंजीवादी संस्था फिर से बना बना हिटलर पूर्ण शक्ति योजित कर देख रहा अपना सुपना जो नैपोलियन भी न कर सका आज करेगा हिटलर ही ? पर चंगेज हँसा—बीते वह महल पड़े हैं खंडहर ही तीन डिवीजन मोटर भीषण ग्युडेरियन टैंकों की फौज ट्यूला बोरोनेज तोड़ कर घेर घेर बढ़ती, ख घोर हिटलर स्तालिनग्रेद नगर पर गड़ा रहा था अपने दाँत विजय हुई थी एक खेल सा काँप रही थी दुनिया भ्रांत वह ब्रिटेन की फौज पड़ी जो उस ईरान देश में मूक हिटलर की चोटों की मनुकर साहम रह रह जाता टूट साम्राज्यशाही एक रखेली फामिस्टी तो वंश्या है पातिव्रत की आड़ बना कर धन पर जीवन बेचा है पर यह ऐसा देश मिला था नारी भी है जहाँ स्वतंत्र कोई दवा न सकता जिसको कण कण है जिसका निशंक टैंक डिवीजन वह मोलहवाँ क्लीस्ट टैंक सेना का भाग सोकल, दुबनो, किवोग्रेद औ' नीप्रोपैत्रोवस्क अपार—

खंड खंड कर विजय पताका
 फहराती-रोस्तोव विशीर्ण
 बढ़ती आती थी हुंकृत सी
 रौंद धूलि पथ की विस्तीर्ण
 हिटलर के इंगित पर गरजों
 महाप्रलय की यह लहरें
 जिनकी पगध्वनि के विध्वंस में
 आज राष्ट्र भयमय सिहरें
 'अरे आर्य्य जीतेंगे निश्चय
 वीरो निर्भय बढ़े चलो'
 हिटलर स्वयं संचलन करता
 कहता—'विजयी बढ़े चलो
 यह रण आर्य्य कीर्त्ति कामणि है
 उसे मुकुट में जड़ना है
 उसकी विजय अनार्य्य कलुष का
 इस पृथ्वी से मिटना है
 वह आठवीं पदातिक टुकड़ी
 ग्रीनो, मिन्स्क, ज्हात्स्क स्मोलैन्स्क
 भग्न और विदलित कर उमड़ी
 महाशक्ति भर कर ज्यों टैंक
 अगणित बल ले विजय वाहिनी
 स्तालिनग्रेद घेर चलती
 आज गिरादो स्तम्भ, ढहेगा
 बोल्शेविक घर निश्चय ही
 आर्य्य पताका फहरायेगी
 विश्व दास बन जायगा
 सरक गयी धरती नीचे से
 सुनकर हिटलर आयेगा
 भग्न करो बस ध्वंस करो ब्रम
 महानाश का तांडव हो
 शत्रु रक्त पीकर यह ईगल
 युग युग फहरे हर्षित हो'

दिशा दिशा व्याकुल कंपती थी
 पृथ्वी थर थर दहल रही
 महापिपासा नाजीबल की
 विदलित करने मचल रही
 'आओ मेरे श्वास तुम्हारे
 जीवन को यौवन देंगे
 नवल स्फूर्ति की महाशक्ति से
 आर्य्य रक्त भर भर देंगे
 स्तालिनग्रेद ! अरे लेकर ही
 जीत सकेंगे हम संग्राम
 युग युग तक कोने कोने में
 गूँज उठेगा उज्ज्वल नाम'
 क्रदम क्रदम नव शक्ति मचलती
 भुजा भुजा में था उन्माद
 नयनों में वैभव की छाया
 उर में विजय विजय की आग
 चले रक्त पर चले मांस पर
 चले कुचलते देशों को
 जिनकी छाया में बर्बरता
 उगा रही थी क्लेशों को
 सूर्य्यपुत्र 'जापान उधर था
 आर्य्यपुत्र था इधर चला
 देव सृष्टि का यह जलप्लावन
 मानवता पर उमड़ चला
 'स्तालिनग्रेद नहीं बच सकता'
 हिटलर कह कर पुलक उठा
 महाशक्ति की भीषण ज्वाला
 थहराता वह उमँग उठा
 जिसकी आकांक्षा पर नत हो
 रोते बालक हँसते थे
 जिसकी आज्ञा से भाई भी
 भ्रातृरक्त से रँगते थे

यहूदियों की अंतिम आहें
 जिसके क्रोध जगाती थीं
 स्वतंत्रता की सत्ता जिसके
 गर्वों को उकसाती थीं
 मजदूरों की उन्नति जिसके
 आदर्शों को ठोकर थी
 शक्ति केन्द्र मजदूर बना वह
 अधिकारों का नौकर ही
 'हम मुट्ठी में पीस उठेंगे
 बर्बरता का वह अवशेष
 कोई शक्ति न रोक सकेगी
 लेना होगा स्तालिनघ्रेद !'
 वह पोलैंड वाहिनी जिसकी
 जग भर में भय कारण थी
 चौदह दिन में धूँआ बनकर
 उड़ी गगन में व्याकुलसी

एक एक दिन में ही हमने
 राष्ट्रों को अभिभूत किया
 वह 'मैगीनो लाइन' विवश कर
 रिपु को चकनाचूर किया
 मेरे पीछे आओ आर्य्यों !
 जग थर्राता है यह देख
 तुम न जीत पाओगे ऐसा
 क्या वह दुर्गम स्तालिनघ्रेद ?
 यह समस्त यूरुप साथी है
 इटली आदिक वीर यहाँ
 यह समग्र बल जीत न जाये
 बोलो ऐसा धीर कहाँ
 बहुत दिनों से लाल लाल कह
 रूस हुआ अभिमानी था
 आज रक्त वह जाये भू पर
 मिल मिल करता पानी था

संध्याका वह भिलमिल अंचल
धीरे धीरे फहर रहा
पीत पराग बना किरणों का
मलय चलित मन बिखर रहा
स्टैपी रोम रोम से मृदु थे
भूमि सो रही थी तृप्ता
वे घर शांति भरे अणु अणु में
सुधियां खेल रहीं दृप्ता
बोल्गा की कोमल लहरों में
गुंजित अंगराई लेती
दिनकी शिथिलित वह आकुलता
पलकों को मूंदे लेती
आज किन्तु इस टीढ़ी दल का
देख उमड़ घिरता आता
संस्कृति-पालक हर किसान में
नया जोश भरता जाता
रैड ऑक्टोवर का निनाद वह
नभ में रह रह डोल उठा
आवाहन या मंथर मंथर
धीर उभरता बोल उठा—
क्या है यदि अंधियाली आई
चंदा भी तो आया है
भूलो मत रजनी जाते ही
नभ में सूरज आया है
यह अंधियारा दास बनेगा
दीप जलाने वाले मुन
बर्बर भंभा मिर पर आती
पहले ही फूलों को चुन

कांटों को रहने दे, निर्भय
वह तो रिपु को भेदेंगे
फूलों की रक्षा के हित ही
अपना जीवन दे देंगे
वह दीपक जो अभी जले हैं
और स्नेह इनका कोमल
दोनों रहें अडिग कल ही यह
काटेंगे वह तम बोभल
स्त्रियों और बालकों हीन अब
चमक रहा था बनकर तेरा
म्यान हट गई, लगी प्यास थी—
तड़प रहा था स्तालिन प्रंद
ज़ारित्सिन के भीषण रक्तक
वृद्ध होगये थे भुक्त
पर वाणी में चिर साहस के
भोंके रह रह कर उठते
आज गरजती तोंपें भीषण
बंदूकें हैं कड़क रहीं
स्फोटों से है कंपित पृथ्वी
दीवारें हैं तड़क रहीं
अरे याद है बोल्गा तट पर
रक्त बहा कर हम आये
ज़ारिगिमिन की रक्षा में ही
अपने साथी बिलमाये
हाथ नहीं है मेरा बांया
उसका जो है नेत्र नहीं
कौन ले गया रूप हमारा
पूछो सब से आज यहीं

उस दिन हममें नवयौवन था
 युवती थी यह वृद्धाएं
 पृष्ठो माताओं से पृष्ठो
 जिनके ढग भर भर आयें
 युवको तुम केवल मृदु शिशु थे !
 मांएँ छ्छाती से चिपका
 दौड़ दौड़, गोली देती थीं
 विस्फोटों में भी अचला
 हां ! स्तालिन भी यौवनमय था
 पर वह लड़ता है अब भी
 हम भी युद्ध करेंगे पल पल
 हटना आज न डग भर भी
 बीत गये वह दिन कलुषों के
 बांत गये वह काले दिन
 अत्याचारी-रक्त बहा कर
 धोये हमने पाप अगन
 पर जो खाद बने गिर भू पर
 खोये थे उस दिन अज्ञात
 फूल बने तुम उस वैभव के
 आज उगे गंधित अवदात
 वह थारक्त किंजिससे मिंचकर
 आज खड़ी है जागृति ये
 अरे प्रगति के प्रहरी जागो
 घहराँ काली आकृति वे
 जो उस दिन बरबाद हुए थे
 बे हृदयों में जीवित हैं
 जीवित हैं वह मुख में जग के
 संस्कृति मार्ग असीमित हैं
 व्हाइट गार्ड्सको मिला धूलमें
 हमने यह निर्माणित कर
 बूंद बूंद कर सिंधु बना है
 आया रिपु अपमानित कर

तुम क्या जानो जीवन क्या था
 जारों के भय शामन में
 कैसे पशु बन कर मरते थे
 हम अनबूझे ताड़न में
 हम केवल सत्ता के धारी
 सदा गरीबी में सड़ते
 तब राहों पर गंदे भूखे
 आंतों को पकड़ा करते
 तब जुल्मों का भयद प्रभंजन
 बुझा रहा था अपने दीप
 लुटता था अभिभूत मान यह
 पृष्ठो माताओं से मीख
 शाही वैभव खड़ा हुआ था
 धधकाता था सूने दिल
 चूहों से भांका करते थे
 खोल खोल हम अपने बिल
 जुध हुए नयनों में आंसू
 निशि दिन जलते रहते थे
 चकनाचूर हुए वे अरसाँ
 सबके भीतर पलते थे
 यह जो वैभव आज ग्वड़ा है
 यह जो तुममें यौवन है
 अरे पूर्वजों की बलियों पर
 करना अब अभिनन्दन है
 पहले सर्कस होटल थियेटर
 स्टोर स्कूल क्लब बाइसकोप
 हम क्या जान सके थे क्या हैं
 अरे निरक्षरता का घोप !
 पर स्तालिन आया था उस दिन
 नयनों में लेकर विश्वास
 अनबूझों में ज्योति जगाई
 उमने भर जीवन की श्वास

वे बूढ़े कज्जाक कि जिनका
 जीवन सेना की बलि था
 समझ न पाते थे कैसे भी
 खुलना जनता की कलि का
 युग युग से वह पशु से नत थे
 बुद्धि बेच कर जीवित थे
 जार बिना जीवन न सोचते
 अगन भोंति 'से पीड़ित थे
 बोल्शेविक पार्टी ने हम पर
 था इतना विश्वास किया
 इसी लिये तो मर कर भी हम
 रहे, उसे उत्साह दिया
 जनता पर विश्वास करो वह
 कभी नहीं धोखा देगी
 वही न्याय की असली पारख
 सच्ची राह सुझायेगी
 बोल्शेविक पार्टी अपनी है
 उसने यह सुख दिखलाए
 बेटा ! जीवन के विकास के
 प्रथम चरण पर हम आये
 अंधकार के गंदे कीड़े
 मानव बनकर आज स्वतंत्र
 पूंजी के खूनी दाँतों को
 किया हमारे बल ने भंग
 अब किसान की गाढ़ी मेहनत
 नहीं पसीना बन बहती
 उगती है जो फसल उमी की
 सुख उन्नति में है लगती
 अरे घृणा करना हम भूले
 पर फिर उसको जगना है
 आज नाज़ियों की ज्वाला में
 तुम्हें स्वर्ण सा तपना है

वह कायर है जो अपने हित
 सोचा करता है संसार
 फूलों का रस लेकर करता
 भूल भुलैया सी गुंजार
 जागो वीरों की गोदी के
 लाल ! आज तुम ग्रहरी हो
 ऐसी चोट करो दुश्मन पर
 मार अनोखी गहरी हो
 अरे रक्त वह जो कि बहाया
 आज वही है बैरीकेड
 रैड ऑक्टोबर आज वही है
 आज वही है अपना वेग
 चौराहों पर कला मूर्तियाँ
 अपनी ही रचनाएँ हैं
 ईंट ईंट इस महानगर की
 मानव की कविताएँ हैं
 स्टैखैनोव प्रगति गुंजित है
 वह भी तो मजदूर रहा
 पड़ो शोषण के स्तंभों से
 किसमें इतना वेग रहा
 आज भयद फासिस्ट यान वह
 नभ को रह रह घेर रहे
 क्या तुम शीश भुका जाओगे
 रिपु को बढ़ता देख रहे
 बोलो देख सकोगे चुप हो
 आज राष्ट्र को तुम जलते
 कायर बन कर देख सकोगे
 मां बहिनों को भी लुटते
 देख सकोगे बच्चों को तुम
 संगीनों पर कट जाता
 देख सकोगे खेत जलेंगे
 दूटेगा घर पथ सारा

'नहीं नहीं' ईट चिल्लाई
 नहीं नहीं सैनिक गरजे
 स्तालिनग्रेद नगर के वैभव
 प्रतिध्वनि करते से थहरे
 'नहीं नहीं' बोल्गा हुंकारी
 'नहीं नहीं' नभ-तड़प उठा
 दूर दूर तक खेत पुकारे
 नहीं नहीं का घोष उठा
 एक मुस्कराहट होठों पर
 तब वृद्धों के खेल उठी
 पुलक सहस्रों कंठों को वह
 बाणी उनकी ठेल उठी
 'हमें गर्व है हमने मर कर
 घायल होकर क्षत विक्षत
 जारिस्तिन की रक्षा की थी
 उस दिन धिर कर भी अविरत
 शत्रु भले ही कैसा निर्बल
 फिर भी जीवित छोड़ नहीं
 पीछे बाधाएँ रख कर नू
 अपनी गति को मोड़ नहीं
 आज तुम्हारे ऊपर केवल
 भार सोवियत का ना एक
 लाल किले को दुनिया भर की
 जनता आशा भरती देख
 तुम्हें खिलाया है गोदो में
 ऊष्मा छाई है अब तक
 वीरों के चुंबन गालों पर
 सुख नहीं पाये अब तक
 अरे तुम्हारी किलकारी वे
 अब भी मन में गूँज रहीं
 अरे तुम्हारी हठ करने की
 रीमें अब तक भूम रहीं

सुख दुख के तुम ही साथी हो
 तुम ही आशा हो केवल
 अरे तुम्हारे ही यौवन में
 पाते जीवन-बिंब अमल
 बोलो वीरों के जय गायन
 झुक जाओगे कायर बन
 अरे अचल यूराल झुकोगे
 तुम दूर्वा से भग्न विमन
 जागो जीवन की गरिमा तुम
 कोई ऐसा वीर नहीं
 जनता को जो कुचल सकेगा
 कोई ऐसा धीर नहीं
 बूँद बूँद गिर जाये लेकिन
 पग पीछे धरना न कभी
 बोटी बोटी कटे मगर तुम
 नतमस्तक होना न कभी
 जीवित लौटे गर कायर बन
 युग युग घृणा करें तुमसे
 हड्डी मिले अगर मृत्युञ्जय
 प्यार करेंगे हम उससे
 हम वह वृद्ध नहीं जो घर में
 प्यारे करें रण से हों भीत
 रण मानवता की पुकार यह
 छेड़ें अपना दुर्जय गीत
 आज तुम्हारे ही माहम पर
 भाग्य टिका है जग भर का
 युग युग नाम चलेगा वीरो
 आज तुम्हारी हिम्मत का
 आज तुम्हारा तन मानवता
 का प्रतीक बन उठता है
 देखो झुक पाये न कभी भी
 यह जो भंडा उड़ता है

जब जब जग पर तम छायेगा
 नाम तुम्हारा दीप बना
 फिर से सब में ज्योति भरेगा
 रिपु सेना पर तीर बना
 आज आन है आज शान है
 आज लाज है बात यहीं
 अरे सितमगर को ठिठकादो
 दे अपनी ललकार यहीं
 भूलो, करुणा आज मिटी है
 रक्त पियो तुम दुश्मन का
 बहुत बड़ा है मद बच्चों को
 मार मार कर दुश्मन का
 अरे हमें विश्वास अपरिमित
 स्तालिनघ्रेद अमर होगा
 कुचलेगा फासिस्ट शक्ति को
 रिपु का महाध्वंस होगा
 अरे हमें विश्वास कि फिर से
 जाग उठेगा स्तालिनघ्रेद
 अरे खंडहरों से अपराजित
 स्वर फूटेंगे उन्नत वेग
 आज पूर्ण सोवियत देखकर
 तुम्हें संभाले है जीवन
 अगर यहाँ से टूटा तो फिर
 सभी गिरेगा परवश बन
 और तुम्हारे श्रम निर्माणित
 घर में नाज़ी आयेगे ?
 बच्चे बूढ़े स्त्रियां बांध कर
 उनको दास बनायेंगे ?
 बोलो महाक्रान्ति के वाहक
 मरना या दासत्व कहो

बोलो वीरो के उन्मादो
 जीवित कायर सत्व कहो ?
 अरे उठाओ शस्त्र प्रबलतम
 बिजली के से टूट पड़ो
 खिड़की खिड़की मोखे मोखे
 से दुश्मन से जूझ पड़ो
 मानव मरते, कब न मरे थे ?
 पर क्या आज्ञादी खोकर ?
 रह पाओगे फिर निराश हो
 केवल कुत्तों से होकर ?
 अरे वही है शत्रु प्रबलतम
 जो फासिस्टों का है मित्र
 ऐसा फेंरो रंग बदल दे
 जो सुन्दर कर गंदा चित्र
 याद रहे जितने दुश्मन तुम
 मार सकोगे गिन गिन कर
 विश्वमुक्तिकी अवधि निकट हो
 आयेगी उतने दिन कर
 जले हृदय में घृणा भयंकर
 शस्त्र हाथ में मदा रहे
 वीरों की मर्त्यादा रण में
 गर्जन बन बन कर फहरें
 स्का शब्द हुंकार गुंजती
 आश्वासन सी देती थी
 और अमर माहम की ऊष्मा
 अङ्गों में भर देती थी
 व्याकुल यौवन गरज रहा था
 ज़ारिस्मिन का वैभव देख
 शत्रु प्रबल है—पर हम भी हैं
 निर्भय रह तू स्तालिनघ्रेद

महानगर के बाह्य भाग में
 योद्धा क्रूर मुखाकृति के
 आज पराजित से करते थे
 हमले भीषण आवृत्ति के
 दंड आज देने निकले हैं
 जर्मन ग्रामवासियों को
 उनके जुल्मों को सहते हैं
 तरु ज्यों कठिन आंधियों को
 रूसी आशा औ' साहस के
 बल पर संघर्षण करते
 बाधा पग पग डाल रहे थे
 रह रह कर रण में मरते
 नगर एक काली छाया का
 सुपना सा ही लगता था
 उधर महानद का प्रवाह भी
 लोभित मुक्त गरजता था
 जर्मन खोज रहे वेन्या को
 पार्टीजन सेना-नेता
 ग्रामीणों का मौन तड़प कर
 उनका क्रोध जगा देता
 ग्रामीणों के शुष्क मुखों पर
 दृढ़ता एक अनोखी है
 अरे जलेगी बत्ती अविरत्
 हमने ही तो जोई है
 बार बार वह मौन मचलता
 जर्मन फिर फिर पूछ रहे
 तल में अंधकार बढ़ता लख
 वे लहरों पर दृढ़ रहे

वेन्या का वह वृद्ध पिता ही
 पकड़ लिया परवश उनसे
 झुके वृद्ध के मुख पर स्मित थी
 देखा रूसी जन जन ने
 बांधे कर पग, क्रीड़ा करते
 हल्के टैंकों में भींचा
 चिथड़े चिथड़े हुए वृद्ध के
 किंतु न नयनों को मींचा
 निचला अधर काट दांतों से
 रूसी फिर भी मौन रहे
 एक मरे या लाखों ही यों
 फिर भी डर कर कौन कहे
 जैसे भंभा त्रस्त कली को
 देती है भकभोर निद्रुर
 जर्मन पूछ उठा नारी से
 डीठ बनी थी जो आतुर
 किंतु पहाड़ों से टकरा कर
 जैसे ध्वनि लौटा करती
 निष्फल लौटी घृणित गर्जना
 जर्मन के मुख पर बजती
 जैसे गिद्ध टूट गहता है
 क्रंदन करते चूहे को
 छीन लिया मां की गोदी से
 उस निर्दय ने बच्चे को
 उठे हाथ मां के समता के
 किंतु गिर गये फिर सहसा
 अरे प्रकाश मांग सकता क्या
 अंधकार से कुछ भिन्ना ?

खेली नयनों में ज्वालाएं
 मन भीतर हुंकार उठे
 किंतु मौन था, विकट मौन था
 जैसे आंधी के पहले
 लहरें ज्यों कुल कुल करती हैं
 और वेग भरती रहतीं
 बांध तोड़ने से पहले वह
 केवल निर्बल सी लगतीं
 वह रूसी अंगार नयन से
 देख रहे थे आंत रहे
 भीतर स्फोटक लावा गरजा
 पर ऊपर गिरि शांत रहे
 अपमानों का ज्वार उठा था
 पोत किनारे पर आये
 पर भाटा भी चिर निश्चित है
 वे बर्बर भूले जाते
 एक एक कर लिये बीस शिशु
 अरे दुध-मुँहे कोमल तन
 आंसू से भर भर आये थे
 जिनके निर्मल नील नयन
 जिनके स्निग्ध वदन छू छू कर
 मां सुख से भर गाती थीं
 एक एक किलकारी जिनकी
 मोद मधुरिमा लाती थीं
 नहीं हटीं माताएं डग भर
 आंखें बंद न थीं कोई
 अरे वज्र थीं आज नारियां
 कोमलता बिलकुल खोई
 यह सामंती राजकुमारी
 न थीं कि गौरव में मदमय
 मानवता की चिर समानता
 में बनतीं बाधा छविमय

यह न मध्यवर्गीय दासियां
 छुईमुई सी लजवन्ती
 फूलों की चोटों से घायल
 हो कराहतीं रसवन्ती
 यह वह थीं जो अपने हाथों
 शस्त्र उठा कर देती हैं
 और कारखानों में रण में
 जीवन नैया खेती हैं
 जब इंगलैंड फ्रांस में नारी
 जंघाएं दिखलाती हैं
 राजपूतनी यह माताएं
 जीवन ज्योति जगाती हैं
 अपनी आंखों से ही देखा
 कुचला एक टैंक ने आ
 चीत्कारों से गगन हिल गया
 शूलों ने मन को भेदा
 किंतु खड़ी थीं माताएं चुप
 एक युवक ने विचलित हो
 हैंडग्रेनेड के लिये जेब में
 डाला कर अति क्रोधित हो
 किंतु बगल के एक हाथ ने
 रोक लिया उसका उन्माद
 और मंद स्वर अस्फुट जलते
 कानों पर मंडराये जाग—
 समय नहीं है, देख रहे हो
 उनमें मेरा बालक था
 अरे खून था मेरे दिल का
 मेरे सुख का पालक था
 रोक लिया योद्धा ने वह कर
 और देखता रहा निडर
 बच्चों का कुचला मिट्टी में
 हंसता था बलिदान अमर

हड्डी मांस खून सब मिल कर
बने लोथड़े मिट्टी में
धूल सने, कुचले—जीवित थे
अरमानों की भट्टी में
धूमिल नभ था, धुंधली आंखें
पर माताएं मौन रहीं
प्रतिहिंसा क्री भीषण ज्वाला
आंसू तक को सोख रहीं
जन जन सब कुछ भूल गये थे
यौवन मादकता खोई
आज सितमगर के वारों पर
मानवता रह रह रोई
किंतु याद था महानगर के
बाह्य भाग में बच्चों को
छीना टैंक चला कर कुचला
मां दाबे थीं आहों को
किंतु सदा से साम्राज्यशाही
अपने बल से अंधी बन
जनता पर ऐसे ही करती
अत्याचारों का वर्षण
वह चंगेज कि नादिर क्या थे
वह नेपोलियन या सीजर
और आज के साम्राज्यशाही
और कि फासिस्टी हिटलर
आज करोड़ों कंठ विश्व में
त्राहि त्राहि कर उठते हैं
ये अत्याचारी धोखा दे
अपने छल पर इठते हैं
इधर अंधेरी के बीते ही
फिर थी हमले की आशा
पत्थर के हटते ही जैसे
सांप घुमा त्रिल में आता

नभ में जर्मनयानों से चल
अंगारों का झरना था
यहीं रोकना था दुश्मन को
टुकड़े टुकड़े करना था
घायल सैनिक मौन तड़पते
आशा पर थी सांस रही
किंतु खड़े थे वे साहस से
अभिलाषा थी एक रही
स्तालिनग्रेदी बाह्य भाग में
फासिस्टों ने बच्चों को
छीना टैंक चला कर कुचला
मां दाबे थी आहों को
यही बहुत था फिर जीने को
यही घृणा—अद्भुत बल था
अपनी आंखों से देखा था
उमने अपना घर जलता
और आज संगीन उठा कर
हमला ही करना होगा
हत्यारों के घृणित खून को
चरणों पर बहना होगा
उधर पौ फटी, इधर ग्राम के
संमुख मार्शन बिछा भीषण
टैंकों को लेकर पैदल ने
मार्च किया, गुंजित पगध्वनि
खुली जगह थी, सौ सौ मीटर
पार किये जब तीन उमड़
चढ़ने लगे पहाड़ी सी पर
गिर जाते थे कभी घुमड़
कॉलेन्को जो नवयौवन की
अगम पहाड़ी पर चढ़ता
देख चुका था अपनी आंखों
फासिस्टी वैभव बढ़ता

वह ब्रैटेलियन का कमान्ड ले
 खड़ा कठोर बना लोहा
 यौवन की मादकता खोई
 और घृणा का रव बोया
 भोर हो चुकी थी प्रकाश की
 किरणों दूर नगर पर थीं
 जिसकी ज्वालाएँ चिल्लातीं
 रह रह ऊपर को उठतीं
 पर आज्ञा के पहले सैनिक
 कूद कूद कर बढ़ते थे
 हत्यारों के प्रति विरोधमय
 हृदय सभी के अड़ते थे
 अब घर घर में युद्ध हो चला
 जोश भरा हर सैनिक में
 ताक ताक कर गोली चलतीं
 उठते गिरते क्षण क्षण में
 छत्तों, गौखों, वातायन से
 शत्रु दागते थे गोली
 महाराइन का वेग भरे वे
 मचा उठे खूनी होली
 किन्तु अचानक कॉलेन्को ने
 देखा—रुकती साँस वहीं
 आज असंभव संमुख जाग्रत
 होता था विश्वास नहीं
 एक धाँय—वह सैनिक तड़पा
 स्तालिनग्रेद और कायर ?
 स्तब्ध ओंठ को भींच निडर सा
 आज्ञा देता था आतुर
 वह कायर ! वह कीड़ा उमने
 जीवन भित्ता चाही थी
 मां बहिनों का मान बेच कर
 अपनी रक्षा मांगी थी

किंतु न बोला कोई सैनिक
 चोट पड़ी थी तीरों सी
 मरने दो जितने कायर हों
 यह दुनिया है वीरों की
 मृत्यु-मृत्यु जीवन परिवर्तन
 अणु अणु नर्तन चलता है
 पर वह जीवन क्या जो भुक्कर
 दुकड़ों पर ही पलता है
 अरे गुलामी के ये साथी
 यह क्या जानेंगे जीना
 जो न मृत्यु से लड़ सकते हैं
 तान सुहृद निर्भय सीना
 अपने मोह और स्वार्थों से
 छलना पैदा करते हैं
 जैसी हवा चले पौधों से
 बने नपुंसक भुक्ते हैं
 बीच गगन में सूर्य चढ़ा था
 घेर लिया सारे नभ को
 बीच गाँव में रूसी हड़ थे
 जीते ग्राम उमंग पथ को
 नभ में बादल गरज उठे अब
 जो पहले क्षितिजों पर थे
 टकरा टकरा कर आपस में
 धार बांध कर वह बरसे
 किन्तु अचानक ही जर्मन के
 पन्द्रह टैंक गरज आये
 इधर उधर थी रूसी सेना
 फाड़ भेद कर घुस आये
 चली टैंक-गन, दो में ज्वाला
 धधक उठी पर चलते थे
 ये फ़ासिस्ट—जल रहे लेकिन
 मरते मरते लड़ते थे

और फटे दो टैंक युद्ध में
 किन्तु नहीं माने अवशिष्ट
 मृत्यु कराल चरण बनकर वह
 टूटे पैदल पर अति रुष्ट
 घनी घास पर जैसे पानी
 बेग भरा चढ़ता आता
 टैंकों के नीचे पैदल का
 वैभव था पिसता जाता
 पीछे कई हाथ नीचे पर
 अतल बोल्गा धारा थी
 और सामने आँखें खोले
 महामृत्यु की ज्वाला थी
 आज रोकना होगा दुश्मन
 या फिर यह ही कब्र बने
 बूंद बूंद चुक जाय विकल हो
 आज संगठित मान घने
 जहाँ खड़ा था जो उमने भट
 वहीं दिये हथियार चला
 कॉलेन्को बन्दूकें लेकर
 सबको देता तीव्र चला
 रात आगई थी सूनी सी
 नीरवता हा हा खाती
 धाँय धाँय के महाशब्द में
 शक्का अंत नहीं पाती
 घायल डाइनौसौर कभी ज्यों
 चिल्लाता फिरता होगा
 भारी टैंक अंधेरे में चल
 रण का नाद प्रबल दोता
 अंधकार था गहन, रात भर
 केवल गोली चलती थीं
 कभी कभी घायल मरतों की
 भयद कराहें उठती थीं

पर जैसे गेंडा मुधबुध खो
 पीछे मुड़ कर धाता है
 अरे भोर के पहले ही से
 शत्रु टैंक बल जाता है
 श्मश्रुजाल ने रूप ढके थे
 रक्त बधूटी सा छलका
 पर चाणक्य बना हर सैनिक
 बूंद बूंद को निभा रहा
 और एक सूनी मुस्काहट
 खेती जलते नयनों में
 जिनमें प्रतिबिंबित था अपना
 देश—गूँजता भग्नों में
 केवल घृणा रक्त की तृष्णा
 छाया बन कर भलक रही
 करुणा लौट रही लहरों सी
 भीषण भट्टी धधक रही
 वृद्धा, शिशु नारियों वित्रस्ता
 डरे हुए मे दरियों में—
 बोल्गा तट पर खोले मुख को
 गूँज भर रहीं गिरियों में
 गाँव हो गये थे खंडहर सब
 यह पहाड़ गोवर्धन था
 अरे सहायक होकर लड़ता
 आज रूम का कण कण था
 किन्तु नारियों के नयनों में
 एक भयद सी ज्वाला थी
 बोन्दारेन्को की पुतली में
 जो प्रतिध्वनि करती जाती
 यह जो साहस आज भरा है
 नहीं कल्पना है कोई
 अंकुश से चीत्कार स्वजन के
 जगा रहे नफरत सोई

अरे सैकड़ों बरस बाद जब
 नाम सुनेंगे वीरों का
 स्तालिनग्रेद नगर के बच्चे
 जगमग जलते हीरों का
 पुलकेंगे सुन सुन कर कैसे
 दुनिया की सबसे भीषण
 अगम और दुर्भेद सैन्य ने
 पितृभूमि से छेड़ा रण
 युग युग नाम जलेगा उज्ज्वल
 जब यह सत्य बने गाथा
 आज सत्य के हेतु उठे हैं
 नये विश्व के निर्माता
 रजनी के धूमिल अंचल में
 स्मृति कर कर इन वीरों की
 विस्मय सिहरन में फड़केगी
 तृषा युगांतर धीरों की
 माताएँ अपने बच्चों को
 इसी धूलि में छोड़ेंगीं
 खेलें—लगे धूलि योद्धा हों
 चिर अपराजित, मोर्चेगाँ
 पृथ्वी पर उन्माद विखरता
 उमड़ रक्त की धारा मा
 संगीनों का जलता पानी
 चमक रहा है पारा मा
 मौन और गम्भीर हृदय ले
 रुसी मिट्टी खोद रहे
 मृत योद्धाओं के शरीर को
 कब्रों में हैं छोड़ रहे
 और हृदय को छूती छूती
 दिग्दिगंत में मंथर सी
 ध्वनि सूखे दोठों से उठती
 महापोत के लंगर सी—

'लाल सलामी वीर शहीदों
 बदला लेंगे हम पूरा
 अरे मरा है कौन-अमर सब-
 किसने आकर है पूछा
 यह जो गाँव खड़े हैं दूटे
 यह जो पेड़ खड़े सूने
 पूछो अंबर से धरणी से
 आज भरे माहस दूने
 कौन गरजता है निर्भय सा
 वीरो तुम मृत्युंजय हो
 विश्व क्रांति की सूली लेकर
 चलते तुम अभयंकर हो
 अरे गगन में भंडा फहरा
 भाँग तुम्हारे ही खूँ से
 जयनादों में मान तुम्हारे
 शत्रु हिलाते से गूँजे
 बूंद बूंद तुम इस विग्रह के
 गिर कर राह दिखाते हो
 अङ्गारा बन कर जगमग से
 बर्बर गर्व मिटाते हो
 अरे पूर्वजों ने जारिस्मिन
 की रक्षा में प्राण दिये
 उन आदर्शों को विह्वल हो
 वीरो तुमने प्राण दिये
 देखो माताएँ रोती हैं
 बधुएँ मिसकी लेती हैं
 देखो अभिवादन कर संस्कृति
 प्यार उमंग कर देती है
 महाराष्ट्र की ओ पतवारो
 व्यर्थ नहीं था यह जीवन
 बच्चे बच्चे के उर उर में
 जीवित निर्भय नव-यौवन

अपने पत रक्त से तुमने
 आज बीज जो बोया है
 फट कर वह कोंपल फूटेंगी
 महावृक्ष का कोया है
 लेनिन स्तालिन इन मानों के
 संमुख करते अभिवादन
 ब्लैडीवोस्टक तक नर नारी
 करते वीरो जय गायन
 आज खेत हैं तुम्हें बुलाते
 आज कारखाने चीखें
 ध्रुव प्रदेश से कोहकाफ तक
 आयुध हुंकरत, दृग गीले'

रुद्ध होगये कण्ठ प्रबल मन
 आंधी सा गुब्बार उठा
 हम आधार हिलादें क्षण में
 सबका मन ललकार उठा
 तब तक वायुयान के पहिये
 छोड़ चुके थे पृथ्वी तल
 यावा का वक्षस्थल चीरे
 उठते थे करते हलचल
 एक एक के लिये बीसियों
 यह ही सबकी गरज अखेद
 वीरों के भीषण माहस पर
 मुक्त शिखा था स्तालिनग्रेद

सघन पिपासा सी तन्द्रित हो
 बर्फ जमी स्तर स्तर अति पीन
 जलधारा अभिभूत रुकी थी
 और तरलता आज विलीन
 तड़क रही थी बर्फ चटकती
 और चीख सी उठती थी
 हिम से हीन किनारों में ज्यों
 नभगंगा खिल बहती थी
 हिमखंडों से सीढ़ी बनती
 जिन पर ज्योति फिसलती थी
 रुधिर धार अपनी आभा को
 प्रतिध्वनित सी भरती थी
 रुई के बे गाले चकमक
 कहीं ध्वांत में नील तले
 टकराते आपस में रह रह
 और बिखरते तार ढले
 ऐसी वोल्गा की धारा पर
 शव था एक पड़ा मोता
 रक्त जम गया था वोल्गा का
 उर भीतर भीतर रोता
 धुन्ध गगन था मोई धरणी
 आज बर्फ की चादर ओढ़
 अणुओं का संघर्ष विकल यह
 रह रह उसको देता तोड़
 उस शव पर फिर भलकी ज्योंही
 मौन भोर की मलिन प्रभा
 देखा लाल अक्षरों में थी
 लिखी हुई वह अमर कथा

कुछ काले कौए छाया को
 देख बर्फ में भ्रम करते
 चमक चिलचिलाती ज्वाला सी
 और नयन झिलमिल करते
 किन्तु उठाया—कठिन होगया
 उसे बर्फ से अलगाना
 ज्यों वोल्गा कालाल रहा कह—
 और कहीं मत लेजाना
 बर्फ टूटती थी वोल्गा की
 गिरती थी अभिभूत कड़क
 जैसे कोई कर उठता हो
 आर्त्त विकल चीत्कार तड़प
 स्टीमर बजड़े सघन बर्फ में
 ऐसे रह रह चलते हैं
 श्वेत नयन में पुतली चलती
 फिर अरमान मचलते हैं
 शीत समीरण सघन विवादी
 भूमा चलता भार लिये
 फनल और चिमनी से निकले
 धुँए को अभिभूत किये
 काले गहरे पीन धुँए को
 रह रह कर झुकभोर रहा
 और बर्फ खंडों पर उसको
 घुमा घुमा कर पटक रहा
 और धुआँ छाया मा बन कर
 मौन शिलाओं पर छाता
 जैसे काले सघन केश में
 गोरा मुख है छिप जाता

धूँआ अपने अधर हिलाता
 भुकता आता है नीचे
 श्वेत बर्फ में प्रतिबिंबित हो
 टकराता आँखें मीचे
 बजड़े के वे दाँत बगल के
 बर्फ चबाते निर्दय बन
 फाड़ कुंचलते हैं इस मद को
 तोड़ तोड़ कर कर्कश बन
 स्तलिनप्रेद नगर से वह कर
 आती है जो रक्तिम बर्फ
 भर देती है संधि-शून्य को
 और जकड़ कर करती गर्व
 नहीं कभी भी बोला नद में
 इस ऋतु में बजड़े तैरे
 नहीं कभी भी बर्फ-घरों को
 तोड़ तोड़ कर वे तैरे
 आज किन्तु जब नाज़ी बल के
 ध्वंस हेतु हैं वीर उठे
 तब बोला के सघन विधुर मद
 चूर चूर करते बढ़ते
 भरी बर्फ से नदी निःश्वसित
 नावें चलतीं कर मर्मर
 दक्षिण ध्रुव में कुक जाता ज्यों
 अभय मृत्यु के दे ठोकर
 बाह्य भाग में बनी गुफाएं
 पृथ्वी पर ज्यों बूंद गिरीं
 काली काली अगन भलकतीं
 चींटी के बिल सी लगतीं
 चिथड़ों और काठ के तस्तों
 से इनका मुख ढका हुआ
 बच्चों की रक्षा के हित ज्यों
 इनका सीना अड़ा हुआ

आज नहीं है वह कलरव कल
 आज न वे बातें तुतली
 माताओं के शंकित भय में
 करुणा की आँहें मचली
 आज देश के बच्चे बन कर
 कीड़े रहें गुफाओं में
 तभी आज प्रतिशोधजल रहा
 मृत्यु विलास शिराओं में !
 घर खंडहर में लोप पिपामा
 हैं पहाड़ियां भी जर्जर
 बम खड्डों में घुम अंधियारी
 बैठ गई सिकुड़ी जम कर
 खंडहर में टूटी मशीन हैं
 तट पर टूटे बजरे हैं
 गहन धूम-घन रवि किरणों को
 घुमड़ घुमड़ कर ढंकते हैं
 महाधूम से भरा नगर है
 बम के हृदय फटे भीषण
 मोरटार के लाल लपलपा
 होंठ गरजते घेर गगन
 स्टेपी से धूँआ उठता है
 जैसे फव्वारे उठते
 फ्रील्डकिचिन से श्वेत लहरियों
 के पंखिल पंखे उठते
 सिगरेट और पाइप का धूँआ
 तड़प तड़प कर घुटता है
 स्तालिनप्रेद आज धूँए में
 काला भीषण दिखता है
 स्फोट और फिर मिट्टी ऊपर
 उठती कर आबाज़ भयद
 गूँजा करती है गिरती है
 दबा दबा कर नीचे घर

धूमकेतु से गगन घिरा है
 या फिर पुच्छल तारे हैं
 टकराने जो पृथ्वीग्रह से
 मंडराते घिर आते हैं
 चमक रही है धरती नीचे
 ऊपर नीलम का नभ है
 मेघ धूम है रक्त वधूटी
 और प्रलय की हलचल है
 आज मितंबर का उज्ज्वल दिन
 महातेज से जागा है
 नभ में फाइटर प्लेन भड़कते
 लाल रक्त उमगाया है
 भूमि आज खुद गई खाइयों
 से जर्जर सृने मुख सी
 दूटे दांत विकल हैं उन्मत्त
 कांप रही जैसे सिकुड़ी
 यह सैनिक हैं ? नहीं ! ईंट हैं
 और खड़ा है स्तालिनप्रेद
 अरे रक्त में चिन चिन कर यह
 फिर से गढ़ते स्तालिनप्रेद
 और पास में मिट्टी की ही
 क़ब्र बनी हैं धरती पर
 अरे गगन की शुभ्र छाँह में
 वीरों के निश्चय बिम्बर
 जिमके लिये लड़े उमकी ही
 छाती में विश्राम मिला
 भूमिगर्भ में फूटा अंकुर
 ऊपर आकर फूल खिला
 हरे भरे तरु, ग्राम मौन यह
 और पहाड़ी अनजानी
 हर सैनिक की अपनी आशा—
 हर सैनिक था अभिमानी

अरे यही तो चिर सुषमा के
 जाग्रत सुन्दर स्वप्न बने
 प्रकृति मुस्कुराती उर कहते—
 हम केवल आगे बढ़ने
 गिरे शहीद, मरे अमरों से
 जीवित जैसे मृत्युंजय
 मृत्यु खेल है, जीवन हड़ता
 यौवन केवल प्रलयकर
 एक हर्ष की ध्वनि होठों के
 बाहर आकर खेल उठी
 गर्व भरे मन को छू कर जो
 बन कर साहम फैल उठी
 जैसे वृद्ध पिता रोगी हो
 अंतिम शैग्या पर मोता
 परदेसों से आता बेटा
 आशा भर हंसता रोता
 जिसकी छाया में पल कर ही
 आगे बढ़ना सीखा था
 आज वही जर्जर गिरता था
 सबका हृदय पसीजा सा
 घर न रहा था कोई साबुत
 पर वे बोले—“ज़िंदा हैं”
 इनकी ममता प्राण भर रही
 क्षण क्षण जीवन भरता है
 महाध्वंम का नृत्य चल रहा
 गिरते थे घर थिरकन में
 बीज फूटने के पहले ज्यों
 गड़ा हुआ भू-अंचल में
 जले हुए घर धुआधार में
 ज्वालाओं में मिलमिल से
 महादुर्ग के भग्न भाग से
 दिखते हैं भय भारिल से

एक इमारत में हेड क्वार्टर
 स्टाफ काम में लगा हुआ
 इस तूफ़ान में भी मिलते हैं
 सैनिक, जीवन जगा हुआ
 आँखें नींद भरी हैं लेकिन
 मन में अमर जागरण है
 दीवारों का चूना भड़ता
 ज्यों रण का आवाहन है
 आज दूर की नहीं घरों की
 रक्षा के फ़रमान चले
 ज्यों शरीर की एक एक हर
 नस में रक्त प्रवाह चले
 हवा सांस को भींच रही हैं
 मिगरेट भी पाते न जला
 स्टाफ छिपा जैसे हड्डी के
 भीतर है मस्तिष्क छिपा
 यह जीवन धारा अबाध हो
 रुके नहीं अविराम चले
 अमल शुभ्र ज्योत्स्ना भी फैले
 और स्नेह का दीप जले
 वही शेष हैं आज नगर में
 जो जिह्वा पर दांत बने
 रक्षा करते हैं उनकी रत
 तूफ़ानों की आग बने
 आज नहीं है कोई दृष्टा
 सब भङ्गति हथियारों की
 घूम रहे हैं सृष्टा बलमय
 धार बने तलवारों की
 आज कारखानों में अब भी
 टैंक बन रहे हैं क्षण क्षण
 जैसे उनकी प्रबल शक्ति को
 मांग रहा है भोषण रख

गोली से जर्जर तन में भी
 दिल तो अब भी जीवित है
 गिरी घड़ी की सूई टूटी
 फिर भी चलती टिक टिक है
 टूटे टैंक आ रहे क्षण क्षण
 बना बना कर भेज रहे
 अरे प्राण जायें तो क्या
 जीवित स्तालिनग्रेद रहे
 आज इन्हीं के भुजदण्डों पर
 खड़ा कारखाना जीता
 बाह्य भाग जो टूट गये हैं
 बनते हैं, क्षण क्षण बीता
 बीती भोर गया सारा दिन
 सन्ध्या आई चली गई
 आधी रात गये सब सहसा
 नूतन शक्ति बढ़ी आई
 खाली हैं आँगन अब जिन पर
 वायु ठहाके मार रही
 टूटी खिड़की से भर भीतर
 टकराती ललकार रही
 किन्तु श्रमिक रत निर्भय अविरत
 टैंक बन रहे थे अब भी
 जैसे घायल सेवा पाकर
 लौट रहे फिर फिर जल्दी
 बोलगा के तट पर बिखरी हैं
 कुछ हड्डियाँ जलीं काली
 गरज रही हैं बुला रही हैं
 जिन पर चमकी उजियाली
 जीवित जला दिये शिशु नारी
 यह उनकी ही हड्डी हैं
 जिनके चीत्कारों पर क्रांतिल
 हँसे उन्हीं की हड्डी हैं

वायु भर गई अस्थिशून्य में
 और गूँजती है श्रिल श्रिल
 यह हड्डी—नयनों के आँसू
 बन कर बिखरी हैं जल जल
 ऊपर आग धधकती आती
 नीचे धरती काँप रही
 और गोलियाँ इस जीवन के
 बंधन क्षण में लांघ रहीं
 मृत्यु आज जीवन की संगिनि
 गलबाँही डाले चलती
 ज्वालाओं से निकल निकल ज्यों
 धूँए की घुमड़न चलती
 और पहाड़ी पर धूँआँ है
 और सड़क पर ज्वाला है
 गगन बैजनी चमक रहा है
 आँगरों का जाला है
 शोला बन कर बम का टुकड़ा
 गिरता है ज्यों हो तारा
 पीछे अलसाहट भरता सा
 डरा रहा है अधियारा
 जर्मन नभ में ज्योति फेंकते
 इन्द्रधनुष सी गोलाकार
 बममारों से विषधर गिरते
 और तोड़ने हैं घर द्वार
 एक इंच क्या मन भी पीछे
 हटने की सोचें न कभी

बोलगा के उस पार भूमि वह
 अब है अपनी नहीं रही
 यहीं जन्म है जीवन भी है
 और मरण भी आज यहीं
 झुलसा क्या पायेगी हमको
 कैसी भी हो आग, कहीं
 मृत्यु बहुत सस्ती कीमत है
 आजादी का मोल नहीं
 रक्त मांस का ढेर कभी भी
 होता उसका तोल नहीं
 आज गँवादी यदि आजादी
 तो फिर जीने से क्या लाभ
 अरे गुलामी के सुख धोखे,
 झुका शीश माता की लाज
 आज रोकना होगा दुश्मन
 और रुकी जाती बाढ़ें
 फिर भी निकली ही पड़ती हैं
 फासिस्टी भीषण डाढ़ें
 पर सैनिक जगमगा रहे हैं
 नभ के उज्ज्वल तारों से
 घृणा और अपमान लुब्धकर
 बढ़ा रहे दिल लालों के
 यही भूमि है यही गगन है
 क्रसम आज है स्तालिनग्रेद
 युग युग तक यह उन्नत मस्तक
 खड़ा रहेगा स्तालिनग्रेद

भोर हुई थी सैनिक तत्पर
 बोल्गा तट पर देख रहे
 दूर पराजय की मलिनाभा
 नभ में घुलती देख रहे
 गदगद थे सब, और नयन में
 आशा करती खेल रही
 आज महाउत्तेजित आभा
 सबको आगे ठेल रही
 फोल पुत्र शोलन्को अपना
 शस्त्र उठाये आया है
 जारित्सिन के उस रक्तक ने
 योग्य पुत्र ही पाया है
 अरे पिता की मृत्यु हुई थी
 जारित्सिन के चरणों में
 लगा चुका जीवन शोलन्को
 स्तालिनग्रेदी शरणों में
 आज्ञा पाकर चला तीर पर
 बोल्गा की उस धारा के
 धीरे धीरे—सचल लहर के
 धक्के आतप छाया से
 द्रुत चरणों की गति थी स्तब्धा
 सहसा गरजी मशीनगन
 मरणगीत गुंजित कर गोली
 चली निकट में सनन सनन
 भग्न मौन घर, नीरव थे शैड
 भाँक रहा नभ ऊपर दीन
 पृथ्वी के केशों से नरकुल
 उगे हुए थे दुस्तरपीन

अंधियारे में मुर्गी सूअर
 खोद रहे थे मिट्टी को
 सीलन दुर्गन्धित व्यापित थी
 तन्द्रिल करती थी जी को
 रक्त बह रहा था, ताजा था
 बन्दूकों को भिगो रहा
 अरमानों की शिखा बुझाकर
 अब श्वासों को डुबा रहा
 प्रेरी में जैमे वह भैसे
 देखा करते चारों ओर
 गुंज उठा करती हरियाली
 जैसे थी नीरवता घोर
 एक सलज पगडंडी भाड़ी
 के अंचल में दबक रही
 भारी पग चिन्हों से जर्जर
 भाँग मेंह में सुबक रही
 अनाथिनी राइफिलें पड़ीं थीं
 सूने घर से बूट पड़े
 लुटे हुगे अभिमान विकल हो
 निर्जनता से ऊब रहे
 चला गाँव के दौंये दौंये
 पग लहरों से धुला हुआ
 राह किनारों पर घन सघनित
 भाड़ी नरकुल उगा हुआ
 दूर एक मोरटार चली ज्यों
 वायु फाड़ कर हँसती थी
 काँटेदार भाड़ियों में से
 रेंग चला—जो छिदती थी

सूने नयनों में अङ्गारे
धीरे धीरे बुझते थे
बुझने से पहले सहसा ही
क्षण भर उज्ज्वल चमके थे
एक एक हड्डी दिखती थी
नसें उफन आईं ऊपर
पसली का सोपान बना कर
भूख चढ़ रही थी, दूध
वह तो अपना ही साथी था
गन्दा मैला कातर सा
नंगा सा, व्याकुल भूखा वह
नंगे पैर भयातुर सा
गूँजे अस्फुट शब्द 'अरे हाँ
अपना है यह अपना है।'
मैतेरोव—कि यह निर्बलता
का चिर भीषण सपना है
शोलन्को विचलित व्याकुल सा
देख रहा था मौन अवाक
मैतेरोव हँसा क्षण भर को
आई हड्डी से आवाज़
एक एक कर सोलह भूखे
निकल झाड़ियों से आये
टूटे दीपक शिखा जली थी
शोलन्को-दृग भर आये
महाक्षुधा की जीवित प्रतिमा
हाहाकारों के आधार
दुःस्वप्नों के चित्र चले वह
गहते मानव के आकार
तीन रक्त से भीग गये थे
एक सहारा ले आया
शोलन्को के ही ग्रिनेड का
स्फोट घात यह था लाया

शोलन्को का उर चिल्लाया
भीतर ही भीतर व्याकुल
मैतेरोव कह उठा सहसा—
'और कहाँ बाकी संबल ?'
'सबको कौन ? अकेला हूँ मैं
मृत्यु अकेली साथिन है'
चूम उठा बन्दूक प्यार से—
'साथिन तो यह नागिन है।
पर तुम क्यों सूखे पत्तों से
काँप रहे हो सूने से
यहाँ कौन जीवन की खेती
करते हो श्रम देने से ?'
हँसा एक, हँस उठे सोलहों
काँपा हड्डी हड्डी तक
दृष्टि दौड़ कर गई तड़पती
खुदी हुई उस धरती पर
'कब्र खोदते थे हम अपनी
बन्दी जो हैं जर्मन के
संगीमों ने यही कहा था
चुपचुप करते ये क्रूर रे
हम जीवित हैं या शव ही हैं
यही पृच्छते हैं तुमसे
पूछो हम पिशाच या मानव-
कब्र—' हँस उठे फिर सब वे
शोलन्को का हृदय अचानक
बैठा बैठा धड़क उठा
माहस की लहरों का भीषण
ज्वार हृदय में कड़क उठा
भूखे पंजर खड़े सामने
अपनी कब्र खोदते आप
बर्बरता की सीमा थी यह
जलती थी मन मन में आग

गोली सिर पर भाग रही थीं
 चढ़ने लगा पहाड़ी पर
 खड्ड और घन तरुतल छिपता
 मघन छाँह थी धरती पर
 सहसा सन्मुख देखा उसने
 एक खड़ा भीषण जर्मन
 शोलन्को रुक गया साँस तक
 रोक, मनसनाता निर्जन
 एक खड्ड तरु पानों में चुप
 मोता था तम से भींचा
 उतरा, भस्म बिछी थी नीचे
 सीलन ने अणु अणु सींचा
 पाम आठ गज की दूरी पर
 मिले सात जर्मन आकर
 एक लेट कर फोन कर उठा
 शेष मौन बैठे जाकर
 विजय—मुस्कराहट फूटी थी
 शोलन्को के अधरों पर
 जैसे लाल रक्त वहता हो
 चिलचिल बोल्गा लहरों पर
 यह बर्बर उपहाम विताड़ित
 आये हैं बनने विजयी
 अपनी अर्जित शक्ति मत्त हो
 म्वयं मिटाते हैं जल्दी
 कौपर वायर से दो ऐन्टी—
 टैंक ग्रिनेड बाँध कर साथ
 लेट भूमि पर शोलन्को ने
 खींची एक प्राणदा श्वास
 और घुमा कर हाथ फैंकदी
 गिरी पाम में स्फोट हुआ
 जिसकी टुकड़ी का शोलन्को
 पर भी कुछ आघात हुआ

गिरी प्रलय मी—गिरी बीच में
 वे सब जर्मन मुर्दे थे
 और धूलि में धूम मिला था
 स्तब्ध मृत्यु के पर्दे थे
 पलक मारते राइफल लेकर
 माध निशाना वह झपटा
 सभी शलभ से जले मृतक थे
 नीरव मी ढीली तन्द्रा
 वह भीषण विस्फोट, मौन था
 छोर पकड़ जिसका घहरा
 वह घननाद, मौन नीरव यह
 दोनों करते थे बहरा
 जैसे हवा चले हिल उठनी
 धीरे से पत्ती एकाद
 फोन कर रहा था जो जर्मन
 कॉप उसके निर्बल हाथ
 शोलन्को ने कुचल कुचल कर
 तार फोन का तोड़ दिया
 झाड़ी की खड़खड़ ने सहसा
 उसको भयमय मोड़ दिया
 राइफल सहसा ही कन्धे पर
 खूती नयन जमा बैठी
 जर्मन आने की शक्का अब
 सहसा ही मन में ऐंठी
 पर नयनों में विस्मय छाया
 शोलन्को विश्वास तजे
 देख रहा था—नंगे भूखे
 मानवता का भार लदे
 कॉप रहा था संमुख थर थर
 सैंतेरोब हुआ जर्जर
 भौंकों में हिलता पत्ते सा
 कर उठता रह रह मर्मर

कौन ? मोवियन् के लालों का यह इतिहास न भूलेगा जब तक बर्लिन में हिटलर पर चिर प्रतिशोध न भूलेगा 'दो ऑटोमैटिक राइफल ले सैनिक हमें मारते थे साँस टूटती देख देख कर धीरे से मुस्काते थे शोलन्को ! हमतो समझे थे मृत्यु एक सुख ही होगी घृणित भीरुता से तो निर्भय मृत्यु सदा अच्छी होगी ! इस कठोर हिम प्रबल शीत में मर न सके हम नंगे भी भूख ? अरे मर गई भूख भी किन्तु रहे हम जिन्दे ही हार गये जर्मन जब हमने भेद बताया एक नहीं बोले—जिन्दा दफना देंगे हम पेसा अभिमान यहीं हँसे तभी हम—मृत्यु ? मृत्यु तो बीरों की अन्तिम जय है जीवन गीत रिझता सबको यह उसकी कोमल लय है आज सोवियन में लाखों ही झुक न रहे हैं निर्भय हैं जले घरों की काली ईंटें फिर लड़ने को तत्पर हैं फासिस्टों के पगल रौंदी दुनिया आज कराह रही खून बह रहा जो राष्ट्रों में मानों उसकी थाह नहीं

जीवित रहने का मानव को मोह रहे क्रायर बन कर अपने स्वार्थों के कारण ही युग युग कलुष चलें मंथर ? कहो गुलामी का जीवन क्या महाध्वंस से श्रेष्ठ कभी कहो प्रवाहित नद का पानी गड्ढे में है स्वच्छ कभी' शोलन्को का हृदय स्नेह से भर आया था उत्साही एक एक कण शपथ लिये है खड़ा हुआ बन कर बागी सुना दूर मॉस्को हँसता था परंपरा की धार बही ट्रॉससाइबेरियन रेल के पहियों में आवाज यही उठा उठा रिपु-मोरटार-गन चले सभी बन्दी नंगे सहसा फोन कर रहा जर्मन खड़ा हुआ कंपित तन ले मिर की पीड़ा दाब करों से देख रहा उन नंगों को जो पिशाच से देख रहे थे उस जर्मन के अङ्गों को एक भेड़िया लूट मचाता हँसता था उन्माद भरा आज शिकारी कुत्तों में फँस आर्त्तनाद करता फिरता हैडकार्टर की ओर चले सब पर शोलन्को थका हुआ मार न पाया उनने जर्मन जितना गुस्सा जगा हुआ

अरे हटा कर इतना पीछे
 बर्बर हमको लूट रहा
 किन्तु देख कर हँस ले रे मन
 उसका साहस दूट रहा
 हर सैनिक फौलाद बना सा
 स्तालिनग्रेदी प्रहरी है
 अरे आज अज्ञात भूमि यह
 बाधा बन कर गरजो है
 गरज रहे थे गाँव गाँव वह
 भाड़ी तरु आकाश सभी
 कहते थे—पग भर भी आगे
 दृश्मन बढ़ पाये न कभी
 बहुत हो गया और न पल भर
 बढ़ पायेगा वह क्रांतिल
 बोल्गा दहराती यह ही स्वर
 स्तालिनग्रेद यही धूमिल
 अनजाने यह वन पर्वत भू
 आज हमारा जीवन है
 स्तालिनग्रेद गूँज तू युग युग
 अक्षय तेरा यौवन है
 हर रूसी में बात यही हो
 हर सैनिक में आग यही
 रात दिवस सप्ताह मास थे—
 बीते फिर भी लाग यही
 जर्मन बम गिरते हैं निशिदिन
 डाइव बॉम्बर गोता मार
 धधकाते हैं भूमि गगन को
 खंडहर हैं मारे घर द्वार
 किन्तु नगर में श्रान्ति नहीं है
 शान्ति नहीं है आज कहीं
 बजते दौं भुजाएँ फड़कीं
 कण कण गरजे नहीं नहीं

बोल्गा की लहरों ने सहसा
 स्त्री का एक बहुत घायल
 मुर्दा फेंका तीर—उठा कर
 अपनी लहरों का अंचल
 जर्मन ! जर्मन !! किया उन्हीं ने
 मुँह तक की पहिचान नहीं
 जर्मन ! जर्मन !! वह हत्यारे !
 उर उर ध्वनि थी—नहीं नहीं
 वृंद वृंद का बदला लेंगे
 बदला हड़डी हड़डी का
 साम्राज्यों का दर्प मिटा कर
 कलुष मिटादे पृथ्वी का
 बहुत हट चुके हैं हम पीछे
 एक कदम अब और नहीं
 जीना है तो यहीं रहेंगे
 और कहीं भी ठौर नहीं
 जो बच्चों को जला जला कर
 रिपु की तृष्णा मुलगी है
 माँ बहिनों का मान लूट कर
 जो आँधी सी बहती है
 क्रमम आज बोल्गा की हमको
 जो कि बहा ले जाय कहीं
 अगर गिर धारा में तो वह
 फेंके तट पर पास कहीं
 स्तालिन मिटे, निमंशेंको भी
 वह चुइकोफ कि वॉरोनोव
 अनजाना हर वीर लड़ेगा
 स्तालिनग्रेद रहे चिर रोध
 यह संस्कृति अक्षय लहरों सी
 आज कँपा देगी संसार
 जिमकी विजय प्रतिध्वनि रह रह
 भरदे दिशि दिशि में भंकार

स्तालिनघेद रहेगा चाहे
पृथ्वी पर सागर छाये
सूर्य बुझे या चोंद मिटे वह
रक्त रहे या चुक नाये

अरे हमारी लाशों पर चढ़
शत्रु भले ले स्तालिनघेद
जब तक जीवित रहे एक भी
तब तक दुर्जय स्तालिनघेद

तल्लकार

शताब्दी बीत गई अभिभूत
तोड़ कर लहरों का सा वेग
अरे शृंखल प्रेमी अभिभूत
आगया नवयुग उठ कर देख
गहरते नभ में क्रन्दन मुक्त
अरे युग युग के शोषित मूक
तिमिर छाया है यह घनघोर
तोड़ दे कारा, दर्प कठोर !

सिंधु की लहरों से तो पूछ
पूछ कावेरी से उद्भांत
शतद्रू क्या कहती है देख
पूछ शिप्रा, रावी से पूछ
कर रहा था किस का जयगान
हिंद के चरणों पर वह सिंधु
रक्त से किसके भीगी भूमि
हड्डियों पर किमकी संसार
जाग मेरे मोये से हिंद
जाग मेरे प्राणों के गान
जाग उठ मेरे हिंदुस्तान

इन्द्रधनुषी जालों की याद
हो रही है मानस से दूर
पूर्वजों के वैभव का श्वास
नहीं हो सकता जीवन मूल
देख तो ले इतिहास महान
गुंजता है जैसे आकाश
मलज रसवन्ती होती भूमि
देख—

मानव निर्व्याज

सत्य का अंत न आदि
प्रगति का चिह्न यथार्थ
मानवों के सुख दुख का केन्द्र
संतुलन सा पर्याप्त

अरे जीवन है प्यास
अरे यौवन है दाह
एक सागर गंभीर
नहीं है कोई थाह
भूत चेतन संबंध
चल रहा है निर्द्वन्द्व
मदा अणु का संघर्ष
बनाता नूतन वस्तु
मदा परिवर्तन द्वन्द्व
सृष्टि का नृत्य अमंद;
गुणी है गुण की छांह
चल रहे पकड़े बांह
आत्मलय आत्म प्रकाश
यही है मृत्यु विकास
मनन चलता है नृत्य
तभी माया अभिभूत
और जीवन है सत्य
बीतते हैं दिन रात
और सप्ताह मास ऋतु अब्द
खेलते बदल रहे परिमाण
प्रकृति का मानव भाग
प्रकृति का जीवन केन्द्र;

अरे मैं आज कहूं वह बात
कि क्यों अपराजित मानव शक्ति

मृत्यु क्या है ?

न माया मूक

न छाया चित्र

भूत का जीवन तत्त्व

बनाता नूतन सत्त्व

बना मत तू अपना अज्ञान

शृंखलाओं का प्यार

चल रही है युग भूत

सतत जीवन की धार

बज उठा है लोहे पर लौह

देख जीवन रण के रणबाद्य

बढ़ावा देते तुझको आज

छोड़ यह नींद

युगों की यह कायरता आज

देख—

संस्कृति पर कैसा घोर

छा रहा है अधियारा आज

जाग उठ सोये हिंदुस्तान

मुनोगे बर्बरता का आज

रक्त से भरा हुआ इतिहास ?

स्वात की उपत्यका मधुभार

हरप्पा, मोहनजोदड़ो लुप्त

खोगये किमके कारण बोल ?

भग्न गांधार भग्न बाल्हीक

रुधिर से कपिशा धारा स्फीत

विभवमय पाटलिपुत्र महान

गिर गये किसके कारण बोल ?

रोम का दिग् दिगंत उन्माद

वैन्डलों का बर्बर उल्लास

खंडहरों में उठता है गूंज

मिट गये किमसे कारण बोल ?

अरे प्रामादों का संसार

मुक्त दिल्ली गिर आठों बार

दासियों सी है क्या अभिभूत

मौन यह किमके कारण बोल ?

आज पेरिस का गौरव लुप्त

आज युरोप में हाहाकार

आज दुनिया में भीषण आग

बोल है किसके कारण बोल ?

द्वार पर भांक रहा जापान

उड़ रहे नभ में खूनी यान

जाग मेरे सोये से हिंद

जाग मेरी कविता के छंद

अरे हमलावर पर विश्वास ?

शक्ति साम्राज्यी पर विश्वास ?

करेगी वह तेरा कल्याण ?

अश्वमेधा के भीषण पाप

देश की फूट उन्हीं की छाप !

खून से तेरे भर कर दीप

जलाते अपनी वैभव ज्वाल

मनाते दीपावलि उल्लास ?

उन्हीं पर है तुझको अभिमान

जाग उठ मेरे हिंदुस्तान

पूछ अपनी माता से पूछ

पूछ भगिनी पत्नी से पूछ

पूछ बच्चों वृद्धों से पूछ

किसे कहते बर्बर की जीत

देख घर द्वार, देख यह खेत

देख अपनी संस्कृति को देख

और तू अब भी केवल मौन

बचायेगा फिर तुझको कौन ?

अरे नालंदा, विक्रमशिला
 या कि फिर तक्षशिला संभार
 भग्न होकर करते चीत्कार
 नहीं जगते फिर भी अभिमान ?
 तड़प उठ मेरे हिंदुस्तान !

एक दिन गुप्तों से विद्रोह
 कर उठा महाराष्ट्र को भस्म
 एक दिन मुगल राज्य से उब
 बुला लाया था तू अंगरेज
 अरे तेरी करुणा को भेद
 छागये जिनके कर्म कमीन
 आज फिर पागल हो कर मूर्ख
 चाहता है आये जापान
 असंभव यह माँ का अपमान
 मोच कर देख, न बन अनजान

घिरा है ले अब स्तालिनप्रेद
 घिरा है ले यह हिंदुस्तान !
 लुट गये थे जब निर्बल ग्राम

हो गया खंडहर स्तालिनप्रेद
 लड़ा जन जन जब तक थे प्राण
 एक एके पर वह मजबूत
 सिर झुकाती थी ऐसी सैन्य
 न जो रुक पाई कहीं अबाध
 आज तेरे नेता हैं बंद
 आज तेरा यह देश विचरत
 और तू मूक भटकता हाथ
 अरे फौलाद बना उठ जाग
 जाग उठ मेरे हिंदुस्तान !
 जेल में से आती आवाज
 न सुन पाता है क्या तू बोल
 तड़प कर मरते भूखे आज
 न यह भी पाते आँखें खोल !
 भस्म के गौरव ! उड़ कर ध्वंस
 मचादे, जिससे हो निर्माण !
 जाग मेरे यौवन के गान !
 युगों के राह्वी हिंदुस्तान !

नभ से भीषण बम गिरते हैं
 उठी खाइयों से आवाज़—
 वह आवाज़ कि दुनियाँ गूँजी—
 'स्तालिनग्रेद जिन्दाबाद !'
 'जब जब बाधाएँ आयेंगी
 आयुध लेकर हम सन्नद्ध
 अरे पीढ़ियों तक तत्पर हैं
 अरे युगों तक हम कटिबद्ध
 स्तालिन का नेतृत्व स्फूर्ति दे
 हमलावर विध्वस्त करें
 पेसी हो भङ्गार कि खंडहर
 गूँजे युग युग शक्ति भरे'
 तोपों का भीषण गर्जन था
 वायुयान की भयद घहर
 बोलगा पर ज्वाला चिल्लाती
 घर घर गिरते आज थहर
 पर दीवालें फिर चिल्लाईं
 फिर से डूँट डूँट गरजी
 फिर फुङ्कार उठी भीषणतम
 भंवर भार ले मुक्त नदी
 'कौन कैस्पियन तक पहुंचेगा
 हिटलर का पेसा सपना ?
 वह क्या जाने लाल सोवियत
 एक नहीं जाने मुकना
 मॉस्को, लेनिनग्रेद जीतना
 अब मरीचिका है केवल
 तोते आम लगाये बैठे
 पायेंगे केवल सेवल

नहीं नगर के लिये अकेले
 नहीं देश के लिये यहाँ
 अरे फैसला होगा मानव—
 न्याय-शक्ति का आज यहाँ
 आज भाग्य अपनी संस्कृति का
 निर्भर है इन वृंदों पर
 आज पताका फहरायेगी
 नर्तित अपनी गूँजों पर'
 धड़क रही है दरकी धरती
 उठी खाइयों से आवाज़
 वह आवाज़ कि दशमन कौंपा
 'स्तालिनग्रेद जिन्दाबाद !'
 माँ का दूध शपथ देता है
 शपथ दे रहे प्रिया नयन
 शपथ दे रहे मधु शिशुओं के
 वे स्वच्छन्द मधुर क्रीड़न
 शपथ राष्ट्र की मानवता की
 हमें प्राण का मोह नहीं
 भय घुटने टेके रोता है
 साहस का है मोल नहीं
 अरे कौन जो छुप रह जाये
 अत्याचारों में डूबा
 देख रहे वे आशा भर भर
 बर्बर ने जिनको लूटा
 ध्वंस किया है जिसने अपना
 जिसने आग लगाई है
 अरे उमी ने विषम वायु में
 यह ज्वाला धधकाई है

वह किसान आ मिलते हमसे
 खेत जल चुके हैं जिनके
 अरमानों को हम निभायेंगे
 जो जीवित मन में इनके
 उन लपटों की याद हमें है
 जो जलतीं अपने घर में
 देखो आज धधकती हैं वह
 सैनिक के निर्भय उर में
 लाखों नयन जम हैं हम पर
 लिये स्नेह आशङ्का प्यार
 क्या हम उनको धोखा देकर
 माँगें जीवन भीख पुकार
 इन भुजदण्डों पर गौरवमय
 बदला लेंगे हम पूरा
 शत्रु मान यदि लोहा भी हो
 कर कर देंगे हम चूरा
 लूट ? लूट कर हावी है वह
 हम भी देखेंगे उसको
 पूर्वज-रक्त-मिचिता धरणी !
 मुक्त करेंगे हम इसको,
 बन्दूकों की धांय धांय में
 उठी खाइयों से आवाज
 वह आवाज कि—गिरते गरजे
 स्तालिनभेद जिन्दाबाद
 यह फासिस्टों का प्रसाद है
 देश कर दिया है कैसा
 आज धूलि में हीरे खोये
 बर्बर का साहस ऐसा ?
 बोलगा को रिपु छू न सकेगा
 आज बीच में रोकेंगे
 लक्ष लक्ष सैनिक मरणोन्मुख
 पर हम उसको टोकेंगे

वह ग्यारह सैनिक जो जीते
 पैदल टैंक यान से भी
 जीवित लड़ते हैं अब भी तो
 भुक न सकेंगे कैसे भी
 एक एक ने छः छः भीषण
 टैंकों की गति रोकी है
 भिड़े मिनेड मटा कर उर से
 रिपु की सेना तोड़ी है
 हम जारों को देख न पाये
 पर सुन पाये अत्याचार
 कौन ? रहेंगे हम गुलाम हो
 क्लीव बने निर्बल लाचार ?
 अब न कभी हम रह पायेंगे
 पूँजीवादी संस्था में
 शत्रु भूलता है मानवता
 आज विजय की तृष्णा में
 आज अनेकों राष्ट्र मिले हैं
 एक साथ हथियार उठा
 सारी जनता एक ध्येय के
 चलती है उन्माद जगा
 साथी स्तालिन ! रक्त वही है
 जो कि पूर्वजों में बहता
 आज मृत्यु को भीत करें हम
 मन में यह साहस जगता
 बस पश्चिम बरस बीते हैं
 हमने दुनिया बदली है
 अरे युगांतर की अधियारी
 में यह ज्वाला जलती है
 मशीनगन ने उगली ज्वाला
 उठी खाइयों से आवाज
 वह आवाज कि जीवन जागा
 स्तालिनभेद जिन्दाबाद

हमको है विश्वास हमारी
 अनुगामिनि हो विजय चले
 हमको है विश्वास ज्वाल में
 अपनी—सारा पाप जले
 आज रूस का बचा बचा
 आज सोवियत् का कण कण
 कर्तव्यों का पालन करता
 युद्ध कर रहा है भीषण
 पर जो हम पर आज पड़ी है
 नभ भू की जिम्मेदारी
 धन्य भाग्य ! हम ही तो हैं जो
 आज बन सके अधिकारी
 सेकेंड फ्रन्ट खुलेगा कब तक
 साथी स्तालिन पूछो तो !
 क्या फासिस्टों पर करुणा कर
 बच पायेंगे बोलो तो !
 हम प्रार्थना कर मौन न हांगे
 और न कोई हम तो हैं
 अपने तो उद्देश्य साफ हैं
 यह स्वतंत्रता सबको है
 जग भर हो आजाद किलक कर
 चाहे कितना रक्त बहे
 मांगे से आजादी किमको
 मिल पाई है आज कहे
 हमको अपने ही एके पर
 है विश्वास—अजेय रहें
 सैन्य और जनता मिलनी है
 फिर किमके हम देय रहें
 अरे बहुत हैं दुनिया भर की
 समवेदनमय वह आँखें
 आग भर रहीं हैं पल पल में
 दलितों की भीषण आहें

कितने दिन तक जाली में ढंक
 अत्याचार' सहायेंगे
 जनता के घातक दुश्मन सब
 एक दिवस मिट जायेंगे
 एका ही है शक्ति हमारी
 उठी खाइयों से आवाज
 गूँजी स्वतंत्रता की लहरें
 स्तालिनग्रेद जिंदाबाद
 अरे कौन बर्बर आया है
 जिसे प्राण का मोह नहीं
 वह नेपोलिन का घमंड भी
 दिया कहे क्या तोड़ नहीं
 तब सम्राटों के भगड़े थे
 सदा राज्य के लिये हुए
 उन्हें क्या पड़ी जनता चाहे
 मर जाये या कहीं जिये
 एक पाप वह मानवता का
 मन मजह में धोया था
 वह मजदूर किसानों की जय
 पूँजी का बल खोया था
 सड़ी गली सब चीज़ तोड़ कर
 दुनिया नई बसाई थी
 बहुत दिनों से मरमाया ने
 इस पर आँख जमाई थी
 आज ध्वंस करने आया है
 फासिस्टी बल छोड़ विवेक
 अरे क्रान्ति का पूत चिन्ह यह
 गिर न सकेगा स्तालिनग्रेद
 जारिन्मिन के उन रक्तक की
 हमको शान निभानी है
 यह जो आंधी उठ आई है
 हमको आज मिटानी है

यहाँ जीत कर दुश्मन बढ़ कर
 तेल हमारा छीनेगा
 और बिचारे हिंदुस्तान को
 खूनी पगल रौंदेगा
 यह चिनगारी यहीं बुझा दें
 फैल नहीं पाये आगे
 टूटे तो दुनिया गिरती है
 हम आजादी के तागे
 आज ईंट से ईंट बजे पर
 मुँह से उफ न सुनाई दे
 क्रान्ति प्रगति ने हममें रह रह
 ऐसी आग जगाई रे'
 गिरते हैं घर भीषण ख कर
 उठी खाइयों से आवाज
 वह आवाज कि खंडहर जागे
 स्तालिनघेद जिदाबाद
 स्तालिनघेद नगर ही केवल
 या फिर बाइ भाग केवल
 नहीं ! आज कणकण अपना है
 सभी आज है अपना बल
 बोल्गा ! लहरें मृदुल स्पर्श सी
 स्टेपी ! फर फर केशों से
 ये बर्फीले शैल हमारी
 मधु वोड़का के फेनों से
 यह आकाश अनंत कि जैसे
 माँ की समतामयि आँखें
 यह घर जो कि बसाते हमको
 जैसे प्रेयसि की बाँहें
 पर कल का सा नहीं नगर है
 श्वेत गृहों की पंक्ति गिरी
 डूबी ज्वाला अधियारी में
 कड़की है ध्वमिनि बिजली

वह छोटे छोटे कस्बे जो
 एक नगर से बने हुए
 कल तक मुस्काते थे उज्ज्वल
 आज अधरे पड़े हुए
 वह घर जिनमें धूम शिखायें
 बुला रहीं सीं उठती थीं
 आज उन्हीं से नभ भरने को
 काली आंधी उठनी सी
 वह मर्मर सा नगर जनों का
 केवल स्फोट नाद भीषण
 शैलों पर था मार थपेड़े
 गड़ गड़ कर करता गर्जन
 आज किन्तु उन खंडहर में जो
 हैं अपराजित जीवन शक्ति
 इतिहासों में चिर दुर्लभ ये
 ध्वंस मृज्जन की है अभिव्यक्ति
 पर कल तक मानवता केवल
 शांति गीत ही थी गाना
 आज मरण की दृंदुभि बजती
 और दराशा घिर आनी
 वह बोल्गा जो कल तक केवल
 एक प्यार की धारा थी
 आज लहर के पास घिर रहे
 और दुवानी कारा थी'
 आज मित्रियाँ वस्त्राँ बिहीन यह
 स्तालिनघेद शिविर कौजी
 जिमकी भंक्रुति लहरों को छू
 वलम्यानी वन में लौटी
 छोटी नैया, वजरे जल पर
 दृष्टि सदृश चंचल चलते
 वम—जल में गिर प्रबल थपेड़ों
 से व्याकुल हैं डूब रहे

भन भन स्तालिनप्रेद कर रहा
 और निकलती ज्यों बिजली
 भङ्कति सी वोल्गा की लहरें
 थहर रही नर्तित मचली
 जलती चीजें उस प्रवाह पर
 ऐसे जगमग करती हैं
 लगी आग पानी में—जैसे
 बिजली नभ में बिखरी है
 हाहाकारों से रह रह कर
 कान फट रहे हैं जग के
 महासृष्टि की गति में हलचल
 रक्त सिंधु हैं उमड़ रहे
 और शवों पर पग धर अपने
 युद्ध कर रहा है तांडव
 क्रंदन ग्रह उपग्रह से टकरा
 भर भर देता भीषण रव
 ये नभ के तारे भी सूने
 आज उगलते हैं ज्वाला
 यह चंदा भी ज्वालामुखि सा
 गरल फूँकता मतवाला
 शिशु नारी पर जुलूम किये जो
 बर्बर अट्टाहास मुखर
 दलितों मरतों के उठते हैं
 व्याकुल हाहाकार बिखर
 इन आयुध की हुंकारों में
 पृथ्वी फटती लगती है
 लपट गगन को चूम यान सी
 धू धू करती जलती है
 आतें दाबे गरजे सैनिक
 उठी खाइयों से आवाज
 मरने वाले आज अमर थे—
 स्तालिनप्रेद जिंदाबाद

कड़क रही हैं प्रबल बिजलियां
 गूँजा थंडर सा नभ में
 वोल्गा है विजुब्ध, चीर कर
 छाती बजरे चल जल में
 बम का वेग बहुत ऊँचे तक
 पानी को भरमाता है
 नैया को डगमग डगमग कर
 धार बांध भर जाता है
 कण कण में विस्फोट प्रबल है
 जन जन में है भीषण आग
 हलचल हुई पदार्थ रूप में
 हवा टूटती जैसे कांच
 बंदी नोंच रहा है मिर को
 भेरी यह ध्वंसिनि बजती
 महामृत्यु के कशाघात से
 मानवता रोती थकती
 नभ में यह लघु वर्ण बैजनी
 और बीच में फैला लाल
 एक जुलूम है—श्रान्ति दूसरा
 गुंथे आज हैं मुक्त कराल
 आज क्रान्ति के हेतु उठा है
 बंधन मुक्त बने मानव
 कांप रहा नीरो व्याकुल सा
 न्याय पूर्ण उठता मानव
 अरे कौन ताकत जो रोके
 उठे हुए इन हाथों को
 यह प्रतिशोध जागरण नूतन
 तोड़ रहा है बांधों को
 देख रहे मजलूम जगत के
 तृष्णा जीवन की सुलगी
 मदा अंधेरे में भटके जो
 उनकी भी आशा जगती

और सिंधु की लुब्ध तरंगों
 सा रूसी बल समा रहा
 घोर तिमिर में दीप्त एक कन
 आशा का टिमटिमा रहा
 लोहा टूट रहा शीशे सा
 उठी खाइयों से आवाज़
 वह आवाज़ जगाती जन जन—
 'स्तालिनप्रेद जिदाबाद'
 एक बार फिर साहस गूंजा
 एक बार फिर नभ दहला
 उठी शुष्क अधरों से ध्वनियां
 नभ के तारों को सहला—
 स्तालिनप्रेद नहीं है केवल
 रूस और जर्मन का युद्ध
 आज ज्योति पर टूट पड़ा है
 अधियारा होकर अति क्रुद्ध
 यह नवयुग की प्रभव पीर है
 आज दुमह भीषण लगती
 किन्तु इसी लोहू के ऊपर
 जागेगी नूतन जगती
 मानव का मानव न करेगा
 फिर कोई मर्दन शोषण
 भौतिक युद्ध त्याग कर यह जग
 प्रगति-पंथ पर धरे चरण
 रुढ़ि कतुप विश्वास अंध सब
 मेधा से निर्वासित हों
 जोंक बने जो चूम रहे हैं
 पृथ्वी उनसे वंचित हो
 यह मानव हो मुक्त भरा गति
 जीवन हो उल्लास भरा

मुक्त बने जो बस पूंजा का
 स्वार्थ शक्ति का दास रहा
 रोटी के हित नहीं भिखारी
 विश्व एक घर ऋद्धि भरा
 मिले प्यार से सब मुस्कार्यें
 चल विकास हो शक्ति भरा
 यह पृथ्वी न विभाजित सी हो
 सकल भूमि घर मानव का
 और गगन सी कीर्ति मनुज की
 फैले दिशि दिशि में अमला
 स्तालिनप्रेद नगर का रण है
 नये विश्व के हेतु सतत
 नई सड़क का कूट बनाना
 जिस पर चललें सभी निरत
 प्रकृति हमारी—हम मेधामय
 उसका कर निर्माण नवीन
 एक ध्येय से बने संगठित
 शांति गीत गायें अमलीन
 नयनों में है ज्योति मधुरतम
 फिर हम ही तम में डूबें ?
 सागर तक अपने स्पंदन हैं
 फिर गोपद में क्यों डूबें'
 एक और हमला लौटाया
 उठी खाइयों से आवाज़
 वह आवाज़ कि खून छायागा
 'स्तालिनप्रेद जिदाबाद'
 ऑक्टोबर की क्रान्ति अमर हो
 पितृ-भूमि यह हो आज्ञाद
 स्तालिन का नेतृत्व रहे औ'
 स्तालिनप्रेद जिदाबाद

एक बेग का भीषण धक्का
 संगीनों पर चमक उठा
 लाल रक्त की बहती धारा
 की ऊष्मा पर दमक उठा
 घर की नींवें दहल रही थीं
 युद्ध सामने आया था
 दोनों दल ने संगीनों को
 भर कर श्वाभ उठाया था
 टूटे भूखे सिंह लश्कर कर
 कोई मुँह के बल गिरता
 और पलट कर हँसता अपने
 पीछे वाले से जटता
 झनझन कर मंगाने हमकां
 धाय धाय गोली गरजीं
 मेघ फाड़ कर रश्मि फटती
 जीवन भेद मृत्यु उठती
 एक बार फिर चलीं ग्रिनेडें
 रूसी नायक उगल उठा—
 रक्त—रक्त को उगल उठा वह
 वक्त दाब कुछ निगल उठा
 लड़खड़ भीषण स्वर में गरजा
 'कितने हैं बाकी बोलो ?'
 'तीन अरे हम तीन बचे हैं'
 बोलो नायक कुछ बोलो !'
 मुस्काया वह मरता नायक—
 'जीवन है या आज मरण'
 लुढ़का नायक, गरजे मैनिक—
 'जीवन है या आज मरण'

स्तालिनभेद दूर तक गूँजा
 लौटी केवल यह प्रतिध्वनि—
 ईंट ईंट का राग वही था—
 'जीवन है या आज मरण'
 बन्दूकों की धाय धाय या
 मंगीनों की वह झनझन
 एक शब्द उठता अणु अणु से—
 'जीवन है या आज मरण'
 टीढ़ी दल सी गोली टूटीं
 तीनों लुप्त हुए, भीषण
 जर्मन बार बेग में रुँद कर
 खोये थे, जैसे प्रतिध्वनि
 किन्तु अचानक आ पीछे से
 रूसी सेना डाट उठी
 दरवाजों पर चलती गोली
 जर्मन मुँह पाट उठी
 एक तड़प हुंकार कि सहसा
 बन्दूकें मंगीनें लें
 सीधे खड़े हुए झपटे वह
 हुंकारों में मन बेधे
 जर्मन गोली तड़कीं, रूसी
 लुढ़के पर वे रुक न सके
 और घुसे घर में वे जर्मन
 गिरते रह रह उठ न सके
 चारों ओर बरसती गोलीं
 धूम धूल का अन्धड़ था
 लाखों बिन्दु रक्त के गिरते
 द्वार भूमि का बनता था

किन्तु अचानक ही ऊपर से बम गिर गिर कर दहक उठे चूने के बन्धन को तज कर पत्थर रह रह लुढ़क उठे भागे रूसी, बरसीं गोलीं लेट गये वह खंडहर पर तभी एक कर घोर नाद चिर पीछे घर गिर गया बिखर एक खड़ी चौमंजिल ऊँची सुदृढ़ इमारत 'जर्जर' मी जर्मन फौज गढ़े थी जिसको रक्षा करती तत्पर थी संमुख भूमि खुली थी फैली ज़िम पर गोली चलती थी रूसी हमलों की नाकत सब तितर बितर हो घटती थी संमुख माइन बिछा रखी थी हर खिड़की पर आयुध थे मोरटार की बौछारों से हमले विज्ञत कातर थे रात हुई तब भग्न घरों में रूसी एक छिपा जाकर गिन न सका वह रिपु के आयुध होता था रह रह आतुर ऊपर रूसी बम बरसाते जर्मन उनको छितराते पल पल बीती रात, गया दिन किन्तु रहे प्रहरी जागे 'रात और दिन में वे जर्मन चार कर रहे दोनों ओर किन्तु श्रान्ति पड़ती है थोड़ी जब फूटा करती है भोर'

भोर—और रूसी आयुध ले सात गार्ड-जन तत्पर से रेंग खंडहरों पर चलते थे धीरे धीरे आहत ले झपट बाज से बढ़े वेग से दहर उठा विचित्र पवन दुमंजिले पर गोली खड़की देर कर चुकी थी लेकिन खाई खुदी हुई थी संमुख भीतर घुसती जाती थी घुसे शक्तिमय, मीढ़ी संमुख दिखती ऊपर जाती थी टूटी थी पर क्रुद वेग से मैकेरोव बढ़ा आगे दो सैनिक रक्तक वन दृढ़ थे खड़े हुए उमको डाटे जर्मन कमरों की बगलों में ऊपर से थे उतर चुके और निकाले बन्दूकों की नलियाँ—साँसें रोक, रुके फटीं गिनेड, उठे कुछ भीषण हाहाकार प्रबल घहरे किन्तु धूम में वायु घुटी थी तम के बन्धन थे खुलते लाशों पर धर पाँव चले बढ़ दांया द्वार गरज भीषण उगल उठा गोली पर गोली उठती रह रह रोर विजन एक गिनेड तड़प कर लपकी शांत हुई वह कड़क विमौन हुड़क हुड़क कर धूँआ उठता कहता—आया भीतर कौन ?

अगले कमरे का सारा तन
 बममारी का ग्रास हुआ
 अरे ऐक्सरे में से जैसे
 हड्डी का आभास हुआ
 जर्मन गोलों ने दाबा था
 घर का बांया भाग प्रबल
 वार घोर कर राह रोकने
 सेना लौट रही निर्वल
 बाहर खाई पर रूसी थे
 किन्तु बीच की भूमि सुदूर
 आज गोलियाँ करती उसको
 करती थीं हर हमला चर
 दौड़ पड़े खाई पर जर्मन
 पर लुढ़के गोली खाकर
 टीढ़ी दल से खेत निमुँडा
 होकर ज्यों करता थर थर
 दौड़े रूसी गोली खाकर
 अब थे मुँह के बल गिरने
 और बचे खंडहर में छिप कर
 घायल से भयमय तकने
 मैकेरोव विवश रूप था
 निर्वल नीचे नोमव था
 तोड़ तोड़ कर बीच बीच में
 गरजा जर्मन कौशल था
 घर में एक भीत के कारण
 दोनों बल अवरुद्ध रहे
 बाहर दोनों रक्तक सेना
 के मन रह रह क्रुद्ध रहे
 निचली मंजिल कॉप रही थी
 बन्दूकों की कड़कों से
 बिंदु बिंदु पर दृष्टि गड़ी थी
 दोनों ही की सड़कों के

अन्धकार में ढूँढ़ ढूँढ़ कर
 तार फोन का काट दिया
 जर्मन शक्ति तिमिर में बढ़ती
 पर रिपु को फिर रोक दिया
 उधर ज्योति की क्षीण किरण ने
 ज्योंही आँखें खोलीं थीं
 इधर धड़ाधड़ करती फिर से
 नाच उठीं अब गोली थीं
 बोलगा की वह चंचल धारा
 दीख रही थी खिड़की से
 देख रहे थे रूसी जिसको
 चौकन्ने हो बन्दी से
 नगर वही विध्वंस नाद की
 हाहाकार भरी ध्वनि था
 अट्टाहासों में डूबा था
 चूम चूम उठता कन्दन था
 काट दिया अब तार फोन का
 रक्त बाहिनी नाड़ी ज्यों
 किन्तु रूमियों की सामग्री
 नयमय होती जाती ज्यों
 पर साहस के महालौह पर
 कोई जंग न छा पाई
 हँसियों की भंक्रुति में सबने
 गोली ही चलती पाई
 विजन वायु की ठंडी मिहरन
 हड्डी तक काटे खाती
 जिसके अंचल को थामे ही
 अधियाली छाती जाती
 रात हुई, मैनिक अलसाये
 मैकेरोव न मो पाया
 फटे नयन वे चमक रहे थे
 मन रह रह कर हर्षाया

आधी रात हुई, निस्तब्धा
 भंग हो रही दूर कहीं—
 नीरवता में जगा उठा वह
 साथी अपने—बात नहीं
 एक द्वार असुरक्षित देखा
 खुराटे का शब्द हुआ
 धक्के से पट खुले मौन हो
 अभियारे का मान छुआ
 धूमिल अभियारा था भीतर
 आग पाम में जलनी थी
 नाज़ी बल की क्षण की निद्रा
 नीरवता में घुलती थी
 कई ग्रिनेड फेंक कर बाहर
 मैकेरोव भगा बाहर
 भयद धड़ाकों में चीत्कारों
 की ध्वनि आई हाहाकर
 भग्न वृत्त पर मोते थे खग
 बिजली सहसा टूट पड़ी
 या घाटी पर श्रृंग टूटते,
 केवल ईंटें थीं गिरतीं
 रूसी बल भट्ट घर पर धाया
 बाहर जो तकता था राह
 उनके पीछे जर्मन बल का
 चला गरजता भीषण ग्राह
 निर्दय से दोनों जूमे फिर
 भीतर सैनिक शंकित थे
 एक भीत के बंधन ही से
 वे दो जग में सीमित थे
 बाहर टैंक मार्डन पर आया
 बिखरा चकनाचूर हुआ
 बाकी तीनों मुड़ कर भागे
 घर अब फिर से दूर हुआ

फिर सहसा ही नये वेग में
 सात टैंक लुढ़के आये
 रोका—नहीं रुके वे भीषण
 ऊपर ही चढ़ते आये
 रूसी मोच रहे थे मन में
 भिन्नी में पल पल आते
 लो फिर गेंटीटैंकगन चलीं
 लोहे बज बज टकराते
 लौटे टैंक छिपे खंडहर में
 पर जर्मन यानों का घोष
 आज मिटाने घर मँडराया
 अग्नि गिराता भर भर रोष
 बीस मिनट तक कांपा वह घर
 छत्तें दीवारें लुढ़कीं
 गड्ढों में छिपता उतरा तम
 खंडहर में लार्शें सिकुड़ीं
 अभी विमानों का वह गर्जन
 रुक न सका था पूर्णतया
 पन्द्रह टैंक—पदातिक दूटे
 घर पर वेग भरे सहसा
 घर क्या था ईंटों पत्थर का
 एक बड़ा सा मलबा था
 जिस पर टैंक धड़धड़ाते थे
 पैदल का गुस्सा छाता
 हर गोली में महा ध्वंस के
 अक्षर रह रह उमड़े थे
 बारानिक के मोरटार चल
 तपड़ तड़प कर घुमड़े थे
 मरण कथा लिख गई शत्रु के
 घायल शव की भीड़ों से
 टैंक छिपे, सैनिक छिपते थे—
 लोहे फटते चीगों से

खंडहर पर भी धांय धांय बम
 भयद धड़ाका होता था
 जर्मन हमले का निर्बल हो
 वेग भग्न हो खोता था
 किंतु लड़ रहे जर्मन नीचे
 खाई में से मार रहे
 रूसी गिरते थे रह रह कर
 गोली करती पार रहे
 कुजीकोव छिप भीत तले भट
 भीषणता से फेंक उठा—
 दो ग्रिनेड विस्फोट नाद वह
 चीत्कारों को खेंच उठा
 ऊष्ण बारि के गिरते ही ज्यों
 दादुर उल्ला करतें हैं
 और भाफ से मूर्च्छित हो कर
 उसमें ही गिर जलतें हैं
 भागे जर्मन पर ग्रिनेड की
 बाढ़ डुबानी उन्हें चली
 हाहाकारों ने नभ छूकर
 विस्फोटों की आग छली
 फिर दो धक्के महावेगमय
 रिपु के घुटने थहराते
 किंतु शनैः लहरें विलमाईं
 फेनिल तट जगते जाते

विजित खंडहरों पर बैठे वे
 अन्धकार में श्वास लिये
 अरे प्रतीक्षा में ऊषा की
 नयनों में विश्रान्ति लिये
 बत्ती एक जल रही थिर थिर
 खंडहर पर थी नाच रही
 कभी उठा देती थी छाया
 कभी भूम कर ढांक रही
 मैकेरोव देख लालच से
 स्टोव, विह्वलता बोल उठा—
 'इतने दिन के अतिथि, एक भी
 पर कब तनमने बोल सका'
 और ठहाकों के रुकने पर
 सबने देखा नीरवता
 निद्रित मैकेरोव प्रताड़ित
 खुर्रातों से थी विकला
 महाजलधि में नाव नृह की
 जैसे आशा भरी चली
 खंडहर पर बैठी वह मेना
 देख रही थी रात ढली !
 गूँज रहे थे अब भी खंडहर
 वायु दीप से उठती खेल
 आज स्नेह अंचल में निर्भय
 विद्रोही था स्तालिनग्रद

रात हुई घनघोर अंधेरा
 लगा प्लांट पर मडराने
 भीगीं मोटर और दुकानें
 लगा सभी पर घहराने
 मौन कोयले छिपे तिमिर में
 छिन्न छिन्न चीजें टूटी
 बम गिरने से खड्ड बने थे
 गहरी घूम हवा गूँजी
 लोहे के टुकड़े उड़ते थे
 जैसे कपड़ा फटा हुआ
 एक भयानकता छाई थी
 धूँएँ से नभ घुटा हुआ
 मरघट की सी वीभत्सा थी
 बम गिर जलीं चिताएँ थीं
 और घायलों की पुकार में
 नपी मृत्यु की आहें थीं
 अरे बचेगा या गिरने की
 बेला आई आज सखेद
 किंतु माइवीरियन फौज थी
 और निडर था स्तालिनप्रेम
 मुँह की हड्डी छिन जाने पर
 जर्मन चीता पागल था
 अरे खून का प्यासा अंधा
 गर्जन करता बादल था
 यह फासिस्टी आग लगी थी
 भून रही थी अपनों को
 जनता के बच्चे बे जर्मन
 भूले जनता—अपनों को

आज आदमी नहीं रहेगा
 यदि वह उनका दास नहीं
 मगर रूस का लाल मरेगा
 खायेगा वह घास नहीं
 दोनों ओर डटे हैं योद्धा
 आँखें अंगारों सी हैं
 आह भयानक हमला करतीं
 जर्मन सेना बढ़ती हैं
 एक और आवाज कि—‘साथी
 मरने, पीछे हटे न एक
 एक गरज हिल गया गगन भी
 हिल न सका पर स्तालिनप्रेम
 ऊँचे ऊँचे ज्वान खाइयों
 में डट कर थे ताक रहे
 खून जमाने वाली ठंडक
 पर वे गोली दाग रहे
 खून नहीं बम देशभक्ति ही
 नस नस में थी पुलक रही
 नहीं हड्डियाँ यह नाँवें थीं
 आज देश की गरज रहीं
 मांस नहीं था वह था लोहा
 आँखें थीं बस अंगारा
 हिम्मत खड़ी पहाड़ों सी थी
 हाथ महानद की धारा
 बलों के भीषण प्रपात का
 फेन बना धूँआ उठता
 जो भोंकों के बर्बर हाथों
 बिखर बिखर कर है लुटता

जिधर उठे बह गये शत्रु थे
 खाकर उनकी एक चपेट
 खंडहर थे घर, जिन्दी सेना
 औ' जिन्दा था स्तालिनघेद
 व्यापारी हिस्से में निर्भय
 एक प्लैट था खड़ा हुआ
 गैस यहाँ बनती थी अविरत
 उस पर दुश्मन चढ़ा हुआ
 कर्नल गर्टिव चला रहा था
 क्राज प्लैट की देख रहा
 कर्नल तरासोव गोलों में
 अब भी कागज देख रहा
 बीते थे दिन बीती रातें
 खुल न सकी पर कभी कमर
 हमें जीतना यही सत्य था
 यह जीवन ज्यों एक समर
 म्पिरिन लिये दड़ना लोहे की
 सबल मुस्कराता निर्भय
 मार्केलोव आदि उल्लासी
 गरज रहे थे मृत्युञ्जय
 फिर भी गर्टिव मन में शक्ति
 अपनी सेनाओं को देख
 मोच रहा था मानव ही है
 पर निःशक्ति स्तालिनघेद
 बढ़े टैंक जर्मन सेना के
 आग फेंकते गर्जन कर
 भीषण मोरटार का हमला
 फटती धरणी गर्जन कर
 बम के टुकड़ों से घर औ' छत
 बालू के घर बन गिरते
 और स्फोटकों की ज्वाला से
 दूधर उधर सब हैं जलते

रात—प्रबल ज्वालाएँ जैसे
 अधियारे को जला रहीं
 जिसके धूँए से ढकता दिन
 भूमि रक्त से नहा रही
 जर्मन आर्टिलरी मुखरित स्वर
 और गूँजती बन्दूकें
 विकल आर्तबन कर उन्मादिनि
 तड़प रहीं घायल हूकें
 बह गर्जन हुंकार भयानक
 दहल गये घर द्वार अनेक
 पर हर सैनिक स्वयं बना था
 दुर्गम लोहा-स्तालिनघेद
 दोनों में बन्दूक संभाले
 एक हैण्ड-ग्रीनेड उठा
 फेंक रहा था आँख मीच कर
 उधर एक चीत्कार उठा
 डूब गया वह प्रबल धोप में
 यह आँधी थी गहर रही
 या फटती थी धरणी नीचे
 ऊपर विजली कड़क रही
 पर पीछे बोल्गा बहती थी
 बोल्गा—बोल्गा तो जननी
 यह मिट्टी है—देखें किमकी
 बनने वाली है कफनी
 अभी भोर के गाल दिखे थे
 जिभ पर काली लट्टें रहीं
 तभी मृत्यु की अधियारी बन
 जर्मन सेना उमड़ पड़ी
 रुम्मी भूले—भूले जग को
 मृत्यु हुई जीवन का खेल
 स्तालिनघेद! धाय! फिर स्तालिन
 धाय धाय बम स्तालिनघेद

जर्मन युन्कर सत्तासीबें
 सिर के ऊपर उमड़ पड़े
 अधियाले बादल बन कर वे
 कड़क कड़क कर घुमड़ उठे
 कॉप उठा वह गगन दहल कर
 जैसे अब फट जायेगा
 घहर उठीं पक्की दीवारें
 अन्त सभी हो जाएगा
 तार भेजता जो भुक सैनिक
 अब गोली है दाग रहा
 घोर नाद में बहरा बन कर
 युद्ध भयंकर नाच रहा
 नीचे भुक कर महागिद्ध से
 अट्टहाम करते युन्कर
 गरज रहे थे ताक ताक कर
 गिरा रहे बम प्रलयंकर
 नभ में अंगारे गिरते थे
 पत्थर बख कड़क भू भेद
 गिरती थीं दीवारें लड़खड़
 कॉप रहा था स्तालिनभेद
 एक मिनट आराम नहीं था
 मौत खेलती थी हर क्षण
 रक्त रक्त से धरा भींगती
 दिन होता जाता भीषण
 गर्जित लहरों से सागर की
 भोंकों पर भोंके आये
 तूफानों में बिजली कड़की
 या कि फटे भूधर धाए
 साइरन बजते, थे बम फटते
 पृथ्वी हिलती नभ दहला
 धूल और धूँए ने घुट कर
 मानव को हँस कर कुचला

जर्मन वायुयान क्रोधित हो
 भ्रमण कर रहे थे नभ में
 भंवर पड़ रहे थे भोंकों से
 भैरव स्वर भर अणु अणु में
 एक एक क्षण बाद गिर रहे
 थे जर्मन बम भयद अनेक
 अधियाले में डूब गया था
 उन कुछ घंटे स्तालिनभेद
 अरे आठ घंटे बरसे बम
 छलनी करदी भूमि कड़क
 गिरते बम-हुंकार स्फोट का
 गिरते थे घर हाय तड़क
 अरे आठ घंटे तक धूँआ
 घिरा और सर पर छाया
 जिनमें कभी आग जलती थी
 कभी धूल का गुन्बारा
 जहाँ जहाँ पर बम गिरते थे
 कूँए से खुद जाते थे
 उनसे घुमड़ी धूल मेघ सी
 छाती सब मुद जाते थे
 फूटे पत्थर धधक रहे थे
 और कोयले दहक उठे
 हाहाकारों की बू पाकर
 वे हमलावर महक उठे
 अरे आठ घंटे लोहे से
 लोहा बजता था तन भेद
 रक्त रक्त की प्यास भयानक
 लाल होगया स्तालिनभेद
 तोपें धाय धाय करती थीं
 बन्दूकें थीं कड़क रहीं
 सैनिक पगध्वनि से बिजुब्ब हो
 खंड खंड हो सड़क पड़ीं

अधियाला था या संध्या थी
जिससें बिजली चमक उठी
उसी रोशनी में गोली भी
साध निशाना दमक उठी
चटक गई सोठें अर्राकर
द्वार हुए टुकड़े टुकड़े
बम के क्रांतिल टुकड़े फँसकर
दीवारों में थे जकड़े
छेद हो गये थे ज्यों जग में
आज हुई घायल दुनिया
युद्ध युद्ध ही तो सब कुछ है
युद्ध कर रही ज्यों दुनिया
दाँत पीस कर सैनिक गरजे
मौत रही थी सर पर खेल
‘आज्ञादी या कदो गुलामी’
यही पृष्ठता स्तालिनघेद
बन्दूकों की भीषणता में
बधिर बनाते तर्जन में
एन्टीएयरक्राफ्टगन के उम
अन्धकारमय गर्जन में
भीषण तोपों की दहाड़ से
महामृत्यु के जबड़ों में
ऊपर ज्वाला नीचे ज्वाला
बदले जब सब टुकड़ों में
धूल धूँए की दहलाती सी
भयद दहाड़ों में खड़खड़
चलतीं मशीनगन अविरत वह
अणु अणु गिरते हैं लड़खड़
जर्मन टैंक हवाई हमले
गोलंदाज लिये पैदल
एक शक्ति बन वेग प्रखरतम
टूट रहे हैं मत्त प्रबल

पर विस्मय से काँप गया रिपु
अब भी गोली चलती देख
अपराजित पुकार सा उठता
अब भी लोहा स्तालिनघेद
और कारखाने जलते थे
इमारतें धू धू जलतीं
खंडहर बन कर नगर चिता था
धधकाता ज्वाला बुनतीं
जर्मन गोलंदाज रात भर
फेंक रहे गोले मन्नद्ध
महागरज का महागरज से
रूसी दें बदला कटिबद्ध
अधियाला फिर ऐसा छाया
बन्दूकों के छोर विलीन
धूँआ उड़ता था जो आग
वही तनिक इंगित था दीन
हवा काटती सांय सांय सी
गिरा रही थी घर विश्वरे
जहाँ कहीं थी आग लपट पर
रह रह कर भोंके लहगे
चालिस लाग्व वॉम्बर मिर पर
लहर उठे बन कर दुर्भेद
एक भाड़ सा धधक उठा फिर
भड़क भड़क कर स्तालिनघेद
थर्राया दिल फासिस्टों का
लेनिनघेद माँस्को क्या ?
वह सेवस्तोपोल लिया था
पर इसकी सेनाएँ क्या ?
जैसे बम फिजूल गिरता है
जुगन् सा तन के ऊपर
एक कराह न हारे मन की
एक नहीं उठता ऊपर

उधर घायलों में से कोई
 संवेदनमय योद्धा देख
 कहता है—फ़ासिस्ट उधर हैं
 छोड़ मुझे—वह स्तालिनभेद !
 और हाँठ भींचे वह योद्धा
 फिर मशीन सा अड़ा हुआ
 अरे उसी के भुजदण्डों पर
 मान राष्ट्र का अड़ा हुआ
 एक और सन्नाटा बाँधे
 दफनाते बलिदानों को
 तेरे बेटे आज तुम्हीं में
 जगा रहे अभिमानों को
 एक किलोमीटर चल आये
 पर क्या एक किलोमीटर !
 क्रदम क्रदम का मूल्य रक्त दे
 ये बढ़ते थे आज निडर
 चप्पा चप्पा आज भूमि का
 कण कण अपने ही घर का
 अरे आज कीमत मालुम थी
 उन पर ही तो सब कुछ था
 उमी रात जर्मन टैंकों ने
 बाढ़ मचाई कुचल दिये
 उमी रात तोपों ने लोड़े
 रह रह कर थे उगल दिये
 उसी रात को ही मशीनगन
 अथक अरुक्त निज बैल्ट हिला
 अनगिनती गोलियाँ उगलतीं
 उमी रात पैदल बढ़ता
 किन्तु बिखर जाती थी रह रह
 फ़ासिस्टों की मानिनि रेख
 भीतर से साहस भर भर ला
 डटा हुआ था स्तालिनभेद

कई सहस्र मरे वह रूसी
 हिटलर के तृष्णानल में
 गाड़ दिये हैं उसी भूमि में
 पंक्ति पंक्ति से उज्ज्वल हैं
 कौन कहेगा उस गाथा को
 आज शहीदों की बातें
 युग युगतक दुनिया में फिर फिर
 जोश भरें वह थी रातें
 इधर साँस का तार टूटता
 उधर एक गोली की धाँय
 और एक दीपक पर लाखों
 परधानों की मृत्यु जगाँय
 गिरते बम धँस गये धरा में
 धूल धूँआ धधके बाहर
 ज्वालामुखियों फटागरज कर
 ज्वालाओं का वर्षण कर
 वायु लहर उस महाघोष से
 थी विजुब्ध विकल प्यासी
 महाध्वंस में महासृजन की
 अभिलाषा जाँचित जागी
 बढ़ते थे फ़ासिस्ट वेग से
 एक ज़ार का धक्का मार
 पर जैसे लोहा था संमुख
 लौट रहे थे बारम्बार
 रेलें उखड़ीं, प्लेट गया छिप
 इंट इंट थीं तम में लुप्त
 किन्तु साहवीरियन मिन्धु में
 ज्यों गिर बिजली होती लुप्त
 मार्कलोव का रेजीमेन्ट भी
 भोर समय बाहर आया
 महामत्स्य ज्यों साँस खींचने
 पानी के ऊपर धाया

पत्थर की वह ट्रैंच छोड़कर बाहर आकर कड़क उठा अपने प्यारे महानगर को भग्न देखकर भड़क उठा लोहे के कन्टोप शीश पर, हाथों में हथियार लिये खंडहर, रेल, 'पहाड़ी पत्थर पर' चलते थे भार लिये गिरे हुए उठ चले, अभी तक जीवित हैं ये कौन अभेद क्या दानव हैं ? नहीं ! हँस उठा 'मेरे रक्त' स्तालिनघ्रेद आज तीसरा दिन आया है और जर्मनों ने 'भर' क्रोध प्रवर्तित यान वे फिर घुमड़ाये लहर चले भीषण प्रतिशोध डूब गया रवि और रात में भयद यान वे गरज रहे जिनके भीषण चीत्कारों को सुन थे कायर दहल रहे साइरन की चिल्लाहट हंकृत वज्रों का प्रहार होता था पाषाणों के वर्षण में ज्वालामुखि फट कर रोता रौद्रनाश बस सर्वनाश ही करता हाहाकार - - रहा बारह घंटे जर्मन सेना का वह भीषण वार रहा अंधकार था, डूब गया था नगर तिमिर सागर भीतर नहीं ज्योति की क्षीण याद भी खोल सकी थी अपने पर

अपने काले केश निशा थी लाल रुधिर में सान रही जो कि भोर में दिख पायेंगे अभी किन्तु सुनसान वही ट्रैंकों की लड़खड़ बजती है कछुओं से वे लुढ़क रहे अंधकार में कुछ न दिख रहा कैसे घर हैं उजड़ रहे केवल घोर नाद होता है कभी कभी बम जल उठते चीत्कारों से भूमि थहरती भीषण रव विमान करते यान घहरते, तक कर झुकते और लगाते गोता तेज बम की आंधी सी बरसाते, गूँज रहा था स्तालिनघ्रेद कभी कभी भीषण मन्नाटा छा जाता है मन मन कर माँस रोक लेती अंधियारी रुक जाता है पवन सिहर योद्धा मिगरेट पीते, लेते बारूदों की बोतल भर बन्दूकों को फिर तत्पर कर हाथों को मलते क्षण भर वक्षस्थल सहलाते, अपनी श्रान्त मांस को बाहर छोड़ और देखकर मुस्काते निज साथी पीछे गर्दन मोड़ कितु नहीं है शांति कभी भी अब भी तत्पर इस पल भी अरे विजय या मरण आज है थकने का तो नाम नहीं

अब के बांध तोड़ बिम्बराया
 घुसे प्लैंट के संमुख तक
 जर्मन योद्धा रण से पागल
 मार मार कर रहे पुलक
 जिनके भुजदण्डों ने यूरुप
 जीत लिया था क्षण भर में
 जिनके पैरों ने कुचला था
 रूस देश बढ़ कर रण में;
 पर सन्नाटा तैर रहा है
 योद्धा देख रहे कुछ देर
 टकरा लौट निगाहें आतीं
 फिर से चलतीं चुप चुप देख
 फिर से हवा फटी चिल्लाती
 भीषण ध्वनि रह रह गूंजी
 चलते टैंकों पर बन्दूकों
 की कठोरता सी भूकी
 उस ध्वनि से दीवारें थहराईं
 दरवाजे व्याकुल काँपे
 और सैनिकों ने कन्धों पर
 भार आयुधों के साधे
 अरे अभागों हैं वे तारे
 जो यह युद्ध न पाते देख
 धरा धन्य है जो वीरों के
 लाल रक्त से रंगी सखेद
 हुक्म लेफ्टिनेन्टों के गूंजे
 गूंजे हैं स्वर चिल्लाते
 'जर्मन ऑटोराइफल वाले
 बाईं बगलों पर आते'
 सुना कि बम फिर आग लग गई
 योद्धा पल में हुए सचेत
 बर्बर के प्रति घृणा उमंगती
 हुंक्रुत क्षण भर स्तालिनभेद

आज बड़ी घुमते आते थे
 रूसी बल तृण सा समझा
 बढ़ते ही आते थे रह रह
 विजय विजय का लालच था
 संमुख थे दिख रहे लौह-मुख
 हड्डी से भीषण सैनिक
 जर्मन वे गाली देते बढ़
 रक्त बहाते वे सैनिक
 बम ऊपर से गिर फटते थे
 और गोलियों में था वेग
 मोरटार थीं आग उगलतीं
 पर लड़ता था स्तालिनभेद
 आर्टिलरी का चेनन अफसर
 फ्युगनफ़िरोव बढ़ा आगे
 फोन कर रहा था क्षण क्षण में
 घेर रहा पीछे जाके
 बोलगा के गर्जन सी भीषण
 दूरमार बन्दूकें भी
 लम्बी लम्बी चोटें देतीं
 रह रह ज्वालायें फेंकी
 जादू का सा खेल कर रही
 आर्टिलरी होकर पागल
 ढाल बन गई थी पैदल की
 उगल रही अंगार मचल
 स्नेह-पाश में बद्ध रूस वह
 शंका भय आनन्द अपार
 भेद भीचतीं दो सेनाएं
 पड़ी जर्मनों पर मिल मार
 चली एक तलवार कि धड़ से
 भिन्न हुआ ज्यों शीश अचैत
 या घुन पीसेगा उंगली में
 तड़प रहा था स्तालिनभेद

पर क्या सहज झुकेंगे जर्मन
 नहीं कभी वे दास रहे
 अपने बल से रोम राज्य को
 ढहा दिया था साहस से
 वीर, वीर वे बड़े भयानक
 आज किन्तु इस फासिस्टी
 धोखे ने जनता भरसाई
 जो वे लगते क्रांतिल ही
 अरे कौन है जो जनता से
 किसी देश की घृणा करे
 यह तो वर्गों के लालच हैं
 जो जग में यह जुलूम भरे
 स्वयं जर्मनी में मानवता
 लड़ती इन रण पशुओं से
 जो अपनी कटु स्वार्थ अग्नि में
 भोंक रहे सुख वधुओं के
 दो पहाड़ टकराये भीषण
 बिजली सी कड़की कुछ देर
 अधियारे ने भींचा जिमको
 घोर शब्दमय स्तालिनग्रेद
 चली गोलियाँ गिरे वीर फिर
 दोनों ओर मरण की आग
 गरजे रूसी काँपे जर्मन
 उखड़ा साहस उठने भाग
 'स्तालिनग्रेद' गूँज कहती थी
 बन्दूकों की धाँय निडर
 गोलंदाजी गरज प्रनिध्वनि
 करती—'जिन्दाबाद अमर'
 और महानद वोल्गा थिरका
 अन्धकार भी डरा उठा
 नाज़ी रक्त बहा धरणी पर
 जनता का अभिमान उठा

अब भी काम प्लैंट में होता
 बममारी के घुटने तोड़
 जैसे श्रम की धारा उन्नत
 चली तीर बन्धन झकझोर
 मिटे ! मिट गई रह रह सेना
 नाज़ी बल की बढ़ी लपेट
 वीरों को सलाम करता था
 वीरभोग्य वह स्तालिनग्रेद
 एक मास में जर्मन बल ने
 किये एक सौ सत्रह बार
 हमले लहरों से, जो टकरा
 चट्टानों से बिखरे हार
 एक सैन्य वह साइबेरियन
 पापागों सी खड़ी रही
 झुकी कित् फिर उठी और वह
 लड़ती निर्भय अड़ी रही
 एक बार बस एक दिवस में
 तेइस हमले किये अटूट
 टैंक और पैदल मिल आये
 जैसे सब कर देंगे चूर
 पर तेईसों हमले निष्फल
 पड़े धूल में रोते थे
 रुधिर मने सैलिक विश्रांत से
 मृत्यु अंक में सोते थे
 हलचल झुकती, शब्द रोकती
 फिर भी होता था संघाम
 सहसा घोर नाद बौराया
 गिरी अग्नि धारा अविराम
 एक बार फिर टूटीं मिल कर
 जर्मन सेनाएँ संपूर्ण
 वायु, टैंक, पैदल, तोपों की
 शक्ति उठी सब करने चूर्ण

डेढ़ किलोमीटर के ऊपर
 सौ से अधिक डिबीजन शक्ति
 बार कर उठी थी अन्धी बन
 लोमहर्षणा थी आसक्ति
 ऐसा घोर शब्द होता था
 जैसे केवल एक प्रहार
 कानों में बस गूँज, प्रतिध्वनि
 और नहीं मिलता था पार
 घोर गहन गंभीर सिन्धु में
 आया था भीषण तफ़ान
 अग्नि भयङ्कर—ज्यों सब तारे
 टकराये गर्जित घमसान
 फामिस्टी राक्षस कंकालों
 नरमुण्डों से सजित वेप
 मानव पर मँडराता भूखा
 त्रस्त क्रुद्ध था स्तालिनभेद
 जर्मन, रूसी, सैन्य, नगर, पथ
 अन्धकार, हथियार सभी
 डूब गये उस प्रबल नाद में
 प्रलय ! प्रलय ! की आग उठी
 जैसे जग भर गरज रहा था
 काँप रहा था अधियाला
 जिमको जला दिया करती थी
 बम से गिर भीषण ज्वाला
 जैसे वोल्गा बाढ़ बनी थी
 उड़ल रही थी शेरों की
 जैसे ईंटें लुढ़क रहीं थीं
 अन्धचाल में भेड़ों की
 जैसे कोहकाक फटता था
 वह चिंघाड़ पहाड़ उठे
 बिजली कड़की आँखें चौंधी
 और डुबाती बाढ़ उठे

जैसे धरणी सौर चक्र में
 घूम रही है भर कर वेग
 हवा बवंडर सी दहलाती
 भर भर देती स्तालिनभेद
 सामूहिक चीत्कार उठे वे
 सामूहिक हुँकार उठी
 और रूमियों की वह हिम्मत
 आज मौत ललकार उठी
 कोंगो के भीषण जंगल के
 जलधर ज्यों थे कड़क उठे
 धाराधार ध्वंस गिरता था
 पर वे सैनिक गरज उठे
 थहर उठी फामिस्टी शक्ति वह
 क्षणभर स्तब्ध रहे क्षणभर
 अब भी मिलता है प्रत्युत्तर
 क्या लड़ते हैं आज अमर ?
 वह रूसी आँखें अङ्गारा
 नहीं गीत या हास विलास
 बर्बर को खदेड़ने डट कर
 बने स्वयं वह सत्यानाश
 भूल गये हैं स्नेह दया को
 अब कठोरता का ही खेल
 रक्त बना छाता नयनों में
 क्रोध भरा है स्तालिनभेद
 अमानुषिक बल मार थपेड़े
 धमनी को निर्भय करता
 जर्मन सेनाओं का लाया
 क्षण भर आज प्रलय मितता
 एन्टीएयरक्राफ्ट बन्दूकें
 गिरा रहीं फामिस्टी यान
 उड़ते नगर गिरे धूँआ ले
 घघक उठे अभिभूत थकान

अंधकार बस एक धनुष सा
भूमि बन गई एक कमान
तीर बन गई हैं बंदूकें
देखें अब है कौन समान
मुख से धुं आ निकल निकल कर
शीत वायु में हुआ विलीन
जैसे सैनिक ज्वालामुखि हैं
आज जला दें दुश्मन दीन
बने आज बंदूक स्वयं वे
और फूटने वाले शेर
जिनके नख दंतों पर निर्भय
बज्र बना है स्तालिनग्रेद
बारह घंटे बीते दिन के
बारह घंटे बीती रात
दिन और रात एक बम वर्षण
आते बह जाते अज्ञात
एक गया दिन, गया दूसरा
लगा पांचवा किंतु न शांति
जर्मन सेना संमुख उठती
आती थी पहाड़ सी आंति
लोहा काट रहा था लोहा
बिजली जंगल पर गिर टूट
फाड़ रही थी चट्टानों को,
तड़पी महायुद्ध की भूख
कांप गये जर्मन हड्डी तक
फिर लड़ते हैं आँखें खोल
अभी अभी कहते थे लेकिन
क्यों न सुनाई पड़ते बोल
मुक्त हुए रूसी चीतों ने
शुरू किया खूनी आखेट
त्राहि त्राहि से गुंजित था नभ,
धड़क रहा था स्तालिनग्रेद

कर्नल गर्टिव जिसके सिर के
केश पक गये थे सारे
भेले था पचास जाड़ों को
सर्द खून जो कर जाते
सन् चौदह का महायुद्ध भी
जिसे नहीं पाया दहला
सन् सत्रह की लाल क्रान्ति भी
डरा न पाई या बहला
जिसको कभी न चिंता व्यापी
साम्राज्यवादी चालें सुन
हिटलर की बर्बरताएँ भी
हिला नहीं पाई पल क्षण
युवकों के भीषण साहस पर
वृद्ध हृदय भर आया था
लोहे की धारा पर पानी
आज उछल कर आया था
सेना है तो यही किंतु यह
सैनिक हैं कैसे दुर्भेद
सहन शक्ति लहरें लेती थीं
बच जायेंगा स्तालिनग्रेद
एक सिपाही वीर कह उठा—
साथी कर्नल काफी हैं
गर्म गर्म रोटी जो दिन में
दो बारी आ जाती हैं
किंतु हमें अब भूख नहीं है
लड़ने दो बस लड़ने दो
आज विजय दासी बन जाये
या फिर हमको मरने दो
मरण हमारा इस लोहे के
महानगर का जीवन है
शत्रु बादलों सी करि सेना
तो यह हरि का गर्जन है

शपथ लाज हो मानवता की
 जो हम पर सन्देह किया
 धन्य हुए फ़ासिस्ट कि जनता
 के हाथों ने वार किया
 गर्टिव की ममतामयि आँखें
 आज स्नेह से हँसीं अखेद
 खंड खंड होगा हर हमला
 दुहराता था स्तालिनप्रेद
 अरे कारखानों के संमुख
 हैं कारीगर इञ्जिनियर
 गड्ढे, खाई खोद रहे हैं
 गोली चलती हैं सिर पर
 दबे पाँव चलते हैं तत्पर
 जैसे हिम पर फिसल रहे
 जादू की सी नई खाइयाँ
 खुदतीं, गर्टिव चकित रहे
 और हर समय हमला करते
 जर्मन रण में लीन हुए
 असफलताओं से विचुब्ध हो
 रुद्ध सर्प से दीन हुए
 किन्तु योद्धा रूसी अपने
 बारे में सब भूल चुके
 एक ओर है नगर, सामने
 शत्रु आ रहा—जान सके
 और कि दुनिया इस साहस को
 पलक न डाले रह रह देख
 खुशियों से चिल्ला उठती है
 खिल जाता है स्तालिनप्रेद
 आज किन्तु है जन जन सैनिक
 नहीं मृत्यु का किंचित भय
 सभी उठा सकते हैं आयुध
 हँस देते हैं देख प्रलय

इधर घायलों की आशाएँ
 नसें फिर जीवित करतीं
 अपना जीवन मोह छोड़ कर
 स्पर्शों से चेतन करतीं
 जब प्यासों की तृषित कराहें
 बोलगा बुला उठा करतीं
 स्निग्ध करों से पानी देतीं
 या नव ज्योति मधुर भरतीं
 महा भयंकर रेगिस्तानों में
 एक प्यार के ओसिस सीं
 करुणा का उज्ज्वल प्रकाश वह
 फैलातीं तत्पर चलतीं
 भयद गोलियों की बौछारें
 हटा नहीं पातीं उनको
 अरे घायलों को सहलातीं
 निर्भय करती जन जन को
 सिगनलस् प्लैटून कमाण्डर
 खेमिस्की उस ढाल तले
 बैठा उपन्यास पढ़ता है
 जग भर में जब आग जले
 कलोगोव बम स्फोट भयद से
 दबा गले तक मिट्टी में
 आँख नचा निर्भय मुस्काता
 देख स्परिन को जल्दी में
 सुन्दरि कलावा अविरत तत्पर
 टाइप कर रही है रह रह
 तीन बार दब चुकी भूमि में
 तीन बार निकली दुस्सह
 और टाइप कर मोहित युवती
 हँसती हस्ताक्षर लेती
 लाल कपोलों पर वह निर्भय
 मस्ती अंगरार्ई लेती

रग रग में वीरता घुसी थी
 भय क्या जीतेंगे यह खेल
 इनको देख पुलक उठता है
 लाल दुर्ग वह स्तालिनभेद
 बीत गया सप्ताह तीसरा
 जर्मन सेना ने भीषण
 वार किया दलबल सज्जा कर
 रक्तिम छाया में गर्जन
 अस्सी घंटे बम बरसाये
 अस्सी घंटे तोप चलीं
 अस्सी घंटे मोरटार की
 आग लगाती होड़ चलीं
 रात और दिन एक हो गये
 एक बवंडर या आंधी
 धूँआधार या धूलि उमड़ती
 भयद कड़क या ज्वाला थी
 नहीं कभी भी हुआ विश्व में
 था ऐसा भीषण अभियान
 हिटलर उन्मादी चिल्लाता
 कहता—‘ध्वंस करो अभिमान
 आज बोलशेविक कीड़ों को
 कुचलूँ और ममल दृंगा
 मानवता का घृणित गेग यह
 इस पर आग उगल दृंगा’
 एक विकट सन्नाटा फिर से
 कण कण को भेंट भेद गया
 और हुआ फिर से कोलाहल
 जो अणु अणु में फैल गया
 हलकें भारी टैंक बढ़ चले
 मदिरा घूर्णित राइफलमैन
 पैदल सैनिक बड़े वेग से
 दूट पड़े खूती बैचेन

भूमि गगन सब एक कर दिये
 और मिलाने से दोनों
 आज बीच में भींच पीसने
 रूसी बल को—बढ़ दोनों
 तोड़ी प्लैंट सामने रक्षा
 घुस आये भू कंपित कर
 रेजीमेन्ट कमान्ड, डिबीज़न
 से अलगाया था लड़ कर
 किंतु बिना आज्ञा की नैया
 आज डूबने नहीं चली
 हर सैनिक अफसर था क्षण में
 हर गिरती उठ उमड़ चली
 थी कौलाद बनी हर खाई
 हर पिलवौवस अभेद बना
 हर राइफलपिट दुर्ग बन गया
 निर्भय मन में वेग ठना
 सेनानायक बिना हिचक के
 प्राइवेटोंवत् लड़ते थे
 चैमोव के संमुख दस हमले
 लौटे दूट खिखरते थे
 जिमकी गोली खत्म हो गई
 टैंक कमान्डर पत्थर से
 मार रहा है छिप कर रिपु को
 पागल सा रण के रव से
 ‘यह रूसी हटते हैं पीछे
 नहीं मानते फिर भी हार
 अभी विजय की श्वास भरें हम
 तभी शत्रु कर उठते वार
 मर जायेंगे तो भी अपना
 नहीं भुकायेंगे यह शीश
 हम हिटलर की शपथ नहीं अब
 रहने देंगे कोई चीज़’

यही इरादा कर बढ़ते हैं
 जर्मन—जाँतेगे इस बार
 पर रूसी जीवित न रहेंगे
 यदि सत्ता है केवल हार
 मिखोलेव पर फटा एक बम
 फूट एक ने स्थान लिया
 घंटों युद्ध हुआ धूँए में
 सबने मरणोन्माद पिया
 एक इंच भी नहीं हटेंगे
 यह ही मन में आग लगा
 एक कदम बढ़ आया न दुश्मन
 यह जीवन की साध लगी
 जब तक तन में वृंद खून की
 वहाँ विजय मृगतृष्णा है
 जीना है तो विजयी होकर
 या फिर केवल मरना है
 हैंड गिनेड की रक्षा-चूड़ो
 एक दाँत से खोल रहा
 महामृत्यु की गाँठ आज वह
 अपने मुँह से खोल रहा
 पीछे वोल्गा संमुख जमन
 आज देश की आन अड़ी
 एक कदम पीछे न हटेंगे
 आज वीरता सान चढ़ी
 मिखोलेव—मिट गये पिता भी
 दोपक, अपने बीच रहे
 नीप्रोपैत्रोवस्क बाँध से
 सबके उर को सींच रहे
 मरण हमारा स्वयं बाढ़ है
 जो दुश्मन को डुबा डुबा
 आज मिला देगी मिट्टी में
 रिपु माताएँ रुला रुला

आज मृत्यु से स्फूर्ति लहरती
 और क्रोध भर आता है
 मिखोलेव की वृंद वृंद सा
 हर सैनिक हुँकारा है
 मृत सोते थे, पर वे घायल
 गरज रहे थे रक्तिम-वेष
 कन्धे पर बन्दूक कि साथी
 दुश्मन है या स्तालिनभेद
 गिरने लगीं धधकतीं मी छत
 सोठें टूटीं ईंट गिरीं
 दीवारें कच्चे मटकों सी
 चटकों रह रह कर थहरीं
 किन्तु हंस उठे सैनिक सहसा
 भागा बाहर एक नहीं
 अन्तिम बारी गोली कड़कीं
 भीषण प्रतिध्वनि तड़क रहीं
 एक विकट भौंका सा दहला
 घर लड़खड़ कर बैठ गिरा
 लपटों का जाला खंडहर पर
 धूम उगलता जा गरजा
 चूना दीवारों से फरता
 ईंट ईंट थीं बोल रहीं
 बच्चों के विराट कोपों को
 डाकू बन कर खोल रहीं
 रूपित गालों पर निर्भयता
 पाषाणों सी बनी कठोर
 भरती श्वासों में निष्ठुरता
 हाथों में कर उठती रोर
 जिन्दाबाद लिख चुके मर कर
 वे मृत्युञ्जय आज अखेद
 आज मृत्यु के पथ पर अपने
 खूँ से लिखते स्तालिनभेद

और शान्ति की बीती छलना
 भग्न अनाथिनि पड़ी रही
 बूंद बूंद कर रुधिर धार वह
 रुक रुक कर थी टपक रही
 वह वोल्कोव नर्स से कहता—
 'नगरी हो अभिभूत सतत ?
 आह बना मत कायर मुझको
 अपने सुख में बद्ध निरत'
 घर थे आज पड़े खंडहर से
 कभी यहाँ भी यौवन था
 किन्तु आज जर्जर मुख विकृत
 करता नीरव क्रन्दन था
 वह भीषण प्रहार चिल्लाते
 धधक उठे अणु अणु निर्बाध
 प्रबल शक्ति का भयद प्रकंपन
 भरता था रह रह उन्माद
 उमड़ टैंक आते थे हुंकृत
 आग उगलते निर्मम से
 मानों मोटी खालों वाले
 पशु आते थे दुर्दम से
 धधकी ज्वाला प्रलय पताका
 कुछ झुलसे बाकी भागे
 और अनेकों तड़क रहे थे
 देख रहे खंडहर जागे
 सन्ध्या बीत चली तम ने था
 घूँघट सा मुख घेर लिया
 जर्मन यानों ने सहसा ही
 फिर से नभ को घेर लिया
 बम गिरने से पहिले रह रह
 ज्योतिदाय आ गिरते थे
 रात दमक उठती सहसा ही
 खंडहर गिरते दिखते थे

आज उमड़ते से यह जर्मन
 कहते—'जीता स्तालिनग्रेद
 युद्ध कारखानों का बाकी
 किन्तु नहीं होगी अब देर
 यह जो घर्षण शेष रहा है
 रोगी है छटपटा रहा
 महामृत्यु का वेग-अंग है
 जिसके रह रह गला रहा
 आग्यों के भीषण निनाद से
 काँप उठेगा अब संसार'
 हिटलर की साम्राज्यी तृष्णा
 जल जल उठती थी हुंकार
 मुखरित कलरव उमगी आँखें
 बर्लिन में नव हास्य बिछा
 वैभव के उच्छृंखल मद में
 देख रहीं जग भर गिरता
 हिटलर अपने रेखटाग से
 कहता था वहलाता सा
 जिसका हर अन्तर आग्यों के
 जन जन को वहलाता था—
 अभय रहो बस हम जीतेगे
 जग भर अपना दास रहे
 अपनी सत्ता शेष जमाने
 जर्मन जग के वार सहे ?
 यह ईश्वर के शत्रु नीचतम
 रूसी आज बनें वन्दी
 आग्य न्याय की झूले सिरपर
 फिर तलवार चमक नंगी
 जो प्रासाद सहस्रों वर्षों
 वैभव नाद गुँजायेंगे
 उनकी अपने पूत रक्त से
 हम ही नाँव जमायेंगे

बोलगा की भीषण धारा पर
 बजरा एक चला जाता
 लहू भलकता है लहरों पर
 ऊपर तक चढ़ता आता
 सांस खींच कर भाग उगलता
 अंगारों को खाता है
 ज्यों घायल विषधर मतवाला
 पटक पटक फन आता है
 धूमिल अधियारा कंपित मा
 जल की थिरकन में भरता
 महानगर में रण का गर्जन
 अपना साहस था उठता
 आग और पानी में कोई
 भेद न लगता था मन को
 उधर दहाड़ा करती तोपें
 सोते थे सैनिक क्षण को
 नींद जागरण की दासी बन
 अपना हिस्सा चाह रही
 दीर्घकाय नाविक जगते हैं
 अरमानों की थाह नहीं
 आज मरण फिर छाँह विजय की
 जीवन के उपचार सभी
 कर्तव्यों की दृढ़ थाती पर
 मानवता की लाज बची
 यह लोहा है झुक न सकेगा
 कट न सकेगा जीतेगा
 धारा का वह अन्धड़ झुक कर
 अन्त पराजित बीतेगा
 रात और दिन स्फोट नाद से
 आते हैं विलमाते हैं
 जीवन कितनी कीमत रखता
 वीर जानते—गाते हैं

यह धड़कन यह घर का गिरना
 मरण और जीवन की आग
 अरे शान्ति कहलाती है सब
 क्षण क्षण व्याकुल जलते भाग
 सैनिक पाते मम्य तनिक भी
 गाते अपने प्यारे गीत
 जिनमें भीषण स्फूर्ति मचलती
 भाँका करता मुग्ध असीत
 वह कठोर स्वर ऊपर उठता
 फिर गिरता है मंडराता
 अरे खंडहरों पर क्षण भर को
 फिर से वैभव है छाता
 यह यूरीपिडीज का गाना
 ईट ईट भी बोलेंगे
 पर हिटलर की भीषण तृष्णा
 अपना बार न रोकेंगे
 आज रुस में पैवलोव का
 घर दीपक सा जलता है
 अरे शहीदों के मज्जार पर
 नवजीवन सा जगता है
 जन जन श्रद्धा से लड़ता है
 जन जन पितृभूमि का भक्त
 नये विश्व का स्वप्न खेलता
 आँखों में भर लाता रक्त
 जिनमें सोये सुख की निदिया
 आज वहीं पर मृत्यु मिली
 पाल खोल कर तूफानों में
 डगमग करती नाव चली
 अरे सिंघमित्रा ज्यों जग में
 शान्ति जगाने जाती है
 करुणा दीपक ज्योतित करने
 लहरों पर अकुलाती है

बोल्गा के उस पार पड़े थे
 श्वास छोड़ते से मैदान
 भूमि चूर होकर करती थी
 ट्रक की लयगति पर जयगान
 बिजली के सूने खम्भों पर
 आ बैठे थे खग धूमिल
 गगन उदासी में विराग ले
 देख रहा उनको बोभिल
 चौकन्ने से उंट देखते
 नभ में विकल ललाई थी
 धूम धूल की उठती घुमड़न
 वायु सघन कर आई थी
 काले काले भूरे भूरे—
 मौँके अब लहराते थे
 चलती ट्रक की घहर रोर में
 नवल स्फूर्ति भर जाते थे
 किन्तु मोटरें चलतीं जातीं
 धधक रहे उनके इंजिन
 ब्रेक दबे—पानी पी सैनिक
 करते रह रह भूख शमन
 वे दक्षिण की ओर चले थे
 धूलि झाड़ते कपड़ों की
 जो उठती आती घिरती सी
 आहें बन कर सड़कों की
 पल पल आज विलंबित लगता
 मन कितना उन्माद भरा
 जनरल रोडिम्स सेव मौन हो
 इस गति को देख था रहा

जर्मन स्तालिनग्रेद नगर का
 द्वार तोड़ कर घुसे हुए
 आज घेरना उनको निश्चय
 यह अरमाँ ही जगे हुए
 दक्षिण पश्चिम सड़क चली मुड़
 तरु तरु धीरे हिलते थे
 चमकीले पत्ते त्वरता का
 इंगित उनको देते थे
 बोल्गा पर घनघोर मेघ सा
 धूँआँ ऐंठा चढ़ता था
 महाध्वंस की छाया सा वह
 जीवित ग्रसने बढ़ता था
 महानगर खंडहर दिखता था
 रेल बड़ी ज्यों पटरी से
 गिर कर चूर हुआ करती है
 धूँएँ में जल बिखरी रे
 और कि मेसर्समिट उड़ते थे
 पीली आँधीवन् नभ में
 डाइव-बॉम्बर तोड़ रहे थे
 तट को बोल्गा के क्षण में
 बोल्गा सागर सी लहरानी
 इनके चरणों को धोती
 महानगर के फूत्कारों सी
 उठा उठा फन को शेती
 आतुर सैनिक ले सामग्री
 त्वरता से भट बैठ गये
 और भार बढ़ते, नावों के
 घन से जल भी फैल गये

टगबोटों से उठी पुकारें
 नाव चलीं बजरे दौड़े
 तट पीछे छूटा जाता था
 लहरों के कंपन छोड़े
 भीषण बम जल में गिरते थे
 जल नभ को रह रह छूता
 फिर गिरता था बजरे कंपते
 पर बढ़ता बेड़ा जूभा
 मल्लाहों की तत्पर पेशी
 लोहे सी कठोर लगतीं
 पतवारों की ठोकर खाकर
 लहरें कटतीं सीं हटतीं
 फिर फिर लहरें घिर घिर आतीं
 नावों को थीं चूम रहीं
 बम से आहत हो चिल्लातीं
 घबरातीं सीं घूम रहीं
 पर सैकड़ों प्रबल मन सैनिक
 अति कठोर थे देख रहे
 मन की आँधी घुमड़ रही थी
 आशाएँ थे टेक रहे
 जनरल रोडिम्सेव होंठ को
 कुछ टेढ़ा कर तकता था
 मूक नयन में जल कटते ही
 नूतन बल सा बढ़ता था
 ऊपर ज्वाला नीचे लहरें
 और सामने नाश खड़ा
 आहुतियों को बुला रहा सा
 संमुख स्फोटित तीर पड़ा
 काँपी लहरें बजरे जल के
 बीच पहुँच कर रेंग रहे
 पीछे के द्रुत गति से चलते
 जो आशा से खेल रहे

धूप स्वच्छ नभ को तापित कर
 चञ्चल जल से खेल रही
 आतुरता का नर्तन करती
 यह आकुलता मेल रही
 'डाईव बॉम्बर !' चिल्लाया भट
 कोई, सब सन्नद्ध हुए
 उठे स्तम्भ से जल के ऊपर
 बजरी के चल छोर हुए
 एक स्फोट का नाद भयङ्कर
 फिर जल में कुछ अङ्गारें
 छितराते थे टुकड़े तापित
 घायल कर सैनिक सारे
 बम फटते थे अन्तराल में
 कुछ लहरों पर फटते थे
 पानी के विश्वस्त हृदय में
 हलचल करते घुसते थे
 भाग धुँएँ में नीला उठता
 कहीं भँवर पड़ जाते थे
 टुकड़े जो नावों पर लगते
 भीषण क्रोध जगाते थे
 एक भयङ्कर भीषण शल ने
 एक विकल लघु नौका पर
 पूर्ण वेग भर गिर कर गर्जित
 किया शक्ति अणु अणु जर्जर
 फटी बीच से चूर हो गई
 आग लग गई धूम चला
 चीत्कारों की घुमड़न बन कर
 कर्कश क्रन्दन घूम चला
 क्रूदे सैनिक जल में सहसा
 फिर जल पर कन्टोप दिखे
 एक लाश के पास तैरते
 जैसे कछुए घेर रहे

रोडिम्सेव अरे यौवन में
 मार रहा था हिल्लोरें
 लड़ा कीव पर, स्टालिका पर
 और ले चुका था चोटें
 भीषण था गांभीर्य नयन में
 अधरों पर स्मित उत्कट थी
 पतवारों की दृढ़ता लेकर
 उर में गति की सुलगन थी
 सैनिक अपने अंतिम पल तक
 वही डिवीजन चाह रहे
 मन सैनिक हो चेतन जाग्रत
 फिर सागर की थाह रहे
 रात घोर थी जब तट पर वे
 नावें जाकर टकराईं
 सेना के कोलाहल की चिर
 प्रतिध्वनि लहरें भर लाईं
 धधक रहा था नगर भयकर
 पल भर का विश्राम नहीं
 अंधकार में पथ खोये थे
 किंतु वेग रुकता न कहीं
 तीन भाग में सैन्य विभाजित—
 गोलंदाजी तीर रुकी
 एक बीच में डटी और वह
 प्रबल तीमरी चीर चला
 किंतु सभी थे एक—चल रहा
 तीनों में अंतर्मबंध
 अरे शत्रु की हार—सभी के
 उर में लक्ष्य रहा निर्द्वन्द्व
 सड़कों पर छिप छिप कर चलते
 जर्मन तोपें छीन रहे
 बोल्गा तट से ज्वाला फेंके
 रिपु को करते दीन बड़े

एक डिवीजन जो बोल्गा के
 उस तट पर था घिरता था
 जिसका बल जर्मन सेना के
 महा वेग से बिग्वरा था
 रोडिम्सेव उमग चिल्लाया—
 बड़ो सिंह से गर्जन कर—
 सचमुच भंक्रुति में सब झपटे
 कायरता का मर्दन कर
 तोपें गरजीं, बोलीं सहसा
 बंदूकों की भीड़ें भी
 बाजों की सम्मिलित झपट वह
 जैसे सब को चीरेंगी
 अगणित सैनिक दौट भींच कर
 दौड़े पृथ्वी कांप उठी
 हंकारों की भीषण प्रतिध्वनि
 महा गगन को नाप उठी
 वह घर चमके—बोल्गा हँसदी
 स्टेपी पर पर फहराये
 अणु अणु—‘लड़ो हमारे हित ही’
 यह रह रह कर चिल्लाये
 थंडर कड़के, बिजली कौंधी
 धूम धड़ाके भय भीषण
 एक कड़क मारे शस्त्रों की
 करती थी रह रह गर्जन
 हूब रहा था रवि बोल्गा पर
 जैसे रक्त बहा जाता
 घायल सैनिक डूबा झुक कर
 मौन कराह उठा जाता
 बोल्गा की नावें भी गरजीं
 जैसे चिल्लाये घड़ियाल
 स्तालिनग्रेद नगर भी गरजा
 गरजा अणु अणु मुक्त करात

गगन लुब्ध होकर हुंकारा
जैसे बादल कड़क उठे
यह सन्मिलित वाहिनी दूटी
गोले गिर कर भड़क उठे
रवि जाता था—लाल रश्मियाँ
घर घर पर थीं खिमल रहीं
कहीं अग्नि की ज्वालाओं में
कहीं धूम में उलभ रहीं
तीनों गार्ड अलग लड़ते थे
अब येलिन का आगे था
मध्य काटता जो जर्मन के
फन्दे वाले धागे का
बोल्गा तट पर रूमी अब भी
नहीं धकेले गये कभी
डटे और बढ़ चले प्रबल रव
शत्रु रहा निश्चित अभी
येलिन के निर्भय वीरों ने
अन्धड़ सी भीषण ठोकर
मार—बड़े घर दो जीते थे
भाग जो जर्मन खोकर
और एक घर जिममें जर्मन
प्रबल शक्ति से बैठ गये
रूमी सैपर लग घेरने
और पास में फैल गये
जर्मन स्फोट मचाते भीषण
पर सैपर तत्पर घुपते
और भयद बारूद बिछाकर
पीछे को त्वर गति हटते
रुके पास में घोर शब्द कर
पूरा घर ऊपर लपका
ज्यों जादू का किला उड़ा हो
खंड खंड हो फिर बिखरा

वह भारी दीवारें गिरती
एक लीक सी बँधी वहाँ
ज्यों नभ से तारा टूटा हो
जर्मन भागें ? किन्तु कहाँ ?
उधर एक टीला जीता था
उन दो सैन्यों ने लड़ मिल
यह था प्राण नगर का कोमल
स्मृतियों का सुपना बोफिल
शिशुओं की कोमल किलकारी
यौवन के चुम्बन गूँजे
अरे देखते वह कलरव ही
बोल्गा तट कल तक ऊँचे
स्तब्ध जागता देख रहा था
यह टीला नगरी क्षण क्षण
जिमे जीत कर मुस्काता था
जर्मन जनरल होड़त सुमन
टीला सचमुच लाल होगया
दीपक बुझे अनेकों ही
लोहे से अणु अणु छिदवा कर
तड़प दे गया मेघों की
वह प्राइवेट कॅन्तिया निर्भय
जर्मन झण्डा फाड़ उठा—
कुचला फ़ासिस्टी घमंड वह
जनता का बल गाड़ उठा
पहला हमला हाथ रहा था
तीनों सैन्य मिलीं आ कर
एक विकट स्थिति जीत चुके थे
जर्मन सेना बिखरा कर
टीला लौह वन—जर्जर भी
रह रह प्रेम बढ़ाता था
ऊपर खड़े भटों को रह रह
स्तालिनग्रेद दिखाता था

अबकें जर्मन टैंक बढ़ चले
 डाईव बॉम्बर उमड़ चले
 नीचे से सारे आयुध ले
 रूसी दल भी घुमड़ चले
 आज विकट गर्जन यह भीषण
 बन्दूकों का वज्र मिनाद
 कल बरबत की लय गुंजित थी
 आज टैंक की प्रबल दहाड़
 ट्रैक्टर मोटर बोलगा नगरी
 महानाद में डूब गये
 महानाद ही बनी स्तब्धता
 प्रबल नाद से उब गये
 बीत गये घण्टे दिन रातें
 हफ्ते फिर भी रोक नहीं
 हम विनाश की आँधी को थी
 कोई पल भर टोक नहीं
 चारों ओर अन्धेरा सा था
 जीवन निर्यत भूल रहा
 और मृत्यु का भयद खङ्ग वह
 सबके ऊपर हूल रहा
 आज न वे बालक हँसते हैं
 आज न मस्ती की घड़ियाँ
 आज न आँखों में आँखों को
 डाल हो रही हैं बतियाँ
 आज न बूढ़ी अम्मा बैठी
 लोरी गाती दीख रहा
 आज न कोई नवयुवकों के
 भुजदण्डों पर रीझ रहा
 आज न खेतों में गीतों की
 सामूहिक गुंजार उठी
 आज न बोलगा की धारा पर
 भूमी सी झट्टार उठी

सड़कों की वह हलचल खोई
 आज न विद्युत ज्योति जली
 आज शांति संस्कृति की उन्नति
 ध्वंशराग ने गूँज छली
 रण की भीषण आँखें जगमग
 मानवता पर क्रोध लिये
 देख रहीं थीं आग उगलतीं
 गति पर थीं प्रतिरोध लिये
 डिबीजनल हेडक्वार्टर पूरा
 पृथ्वी के अन्दर रहता
 जैसे खान खोद ली थी जो
 सीलन का आलम रहता
 पत्थर सोठों से ढंक कर वह
 जनरल रोडिम्सेव वहाँ
 देख रहा था नक्शे अपने
 किंगको भेजे आज कहाँ
 धुंधला दीपक उस सीलन में
 काँपा करता डरता सा
 भयद गिरा करती हिलतीं सी
 दीवारों पर चल छाया
 भिगरेट पीते निस्तब्धता में
 काम चल रहा बिना रुके
 काँप रही थी सब दीवारें
 बस की धमधम से डरके
 एक कड़ी मुट्ठी सा यह दल
 रोकें जर्मन सेना को
 चाह रहा जो आज डुवादे
 नद में रूसी सेना को
 एक बार जर्मन घुस आये
 इस गाँव के रस्ते पर
 हैंड ग्रेनेड धुमाकर फेंकी
 धूँआ उमड़ा भट आतुर

लड़ते थे सब, गिर मरते थे,
गिरते पत्थर, बम फटते
महास्फूर्ति से भर भिड़ते थे
और मरण पथ पर चलते
जनरल रोडिम्सेव न चौंका
धीरे धीरे बोल उठा—
अरे शत्रु का वेग हटा कर
दो शब्दों में तोल उठा—
बोल्गा कुछ मर्मर करती थी
उठो देश के लिये लड़ो
यह फासिस्ट रक्त का प्यासा
पग पग पर माहसी अड़ो
अरे यही तो था जो उत्तर
से दक्षिण तक भंक्रुति थी
साम्यवाद के विजय नाद की
मानवता को स्वीकृति थी
जाग्रत चेतन गरज रहे हैं
सब मिल कर हैं एक हुए
अरे एक है ध्येय सभी का
इस पथ पर सब एक हुए
लाल किले की भंक्रुति गूँजी
हँसती जग की आशा है
साम्राज्यों पर जन प्रहार का
अस्त्र घिरा ही आता है
रात हो गई, घोर रात ने
अब पलकों को भींच लिया
और बासना सा बढ़ता तम
अपने उर से भींच लिया
भरती थी फूटकार बोल्गा
तड़प रही थी विपथर सी
तीर खड़ी तरु पांति ठूँठ सी
जलती रह रह जगमग सी

नभ से अंगारे गिरते थे
डालों पर अटका करते
बोल्गा में प्रतिबिम्ब देखते
रंग विकल बदला करते
घायल लहरें आर्त्तनाद कर
उठतीं चिलबिल करतीं थीं
पीली हरी रजत मिलमिल कर
भट अंगारे प्रसर्तीं थीं
वह बैजनी और नीली सी
बम ज्वाला जल पर गिरती,
महाक्रोध से गरज रहे थे
रूसी यान हिला धरती
उनके पीछे जर्मन 'ए, ए,
बैटरियो' में से चलती
ज्वालाओं की बाढ़ चली जो
ताक ताक कर थी घिरती
रूसी बममारों की उगलन
नीचे जर्मन मशीनगन
आग धधकती थी भीषणतम
छाती जाती थी भुलसन
दाँया तीर बमों से हिलता
घर दीवार भूमि आकाश
और कारखानों-अणु अणु पर
ज्वालाओं का भैरव श्वास
वही गूँज थी ध्वंस विनाशिनि
किन्तु हृदय में साहस था
आज देश के लिये प्रलय में
भाग्य बना जन जन उठता
घोर प्रबल विध्वंस प्रतिध्वनि
भी विनाश का ताण्डव थी
ज्वालाएं जलतीं—सब जलते
पुनरावर्त्तिनि खांडव सी

धभक रही थी सारी दुनिया
 केवल बोलगा रोती थी
 झुलस रही जिसकी मृदु देही
 आग रक्त सी खोती थी
 किन्तु प्रबल लोहे से रूसी
 खूनी रिपु को भेल उठे
 बूंद बूंद से सागर बन कर
 रिपु को पीछे ठेल उठे
 यह वर्गों का ही लालच है
 जो फिर फिर होते हैं युद्ध
 अपने घर का ध्वंस देख कर
 कौन नहीं होता है क्रुद्ध
 हम सब एक और भाई हैं
 शत्रु हमारा है फासिस्ट
 कभी नहीं हम झुक पायेंगे
 चाहे महाध्वंस की वृष्टि

नहीं एक घर नहीं इमारत
 फिर भी भूमि हमारी है
 घुटनों चले यहीं खेले हम
 पितृभूमि यह प्यारी है
 हम मजदूर किसान उठे हैं
 पूंजीवादी राज नहीं
 अब न रह सकेंगे हम उसमें
 जनता पर हो पाश नहीं
 आज देश का बच्चा बच्चा
 सैनिक बन कर गरजा है
 अपना है, जो कुछ अपना है
 अपने खूँ से सिरजा है
 हमें मिटा देनी दुनिया से
 यह खूँरेजी नादानी
 सचमुच आज रक्त से लिखदी
 अमर कथा यह दीवानी

नभ में यू-२ यान उड़ रहा
घरर घरर कर निर्भय सा
नीचे डौन प्रान्त का स्टैपी
करता रह रह मर्मर सा
जर्मन सेनाएँ सज्जित सी
स्टैपी सड़कों पर धीरे
रेंग रही सी दीख रहीं थीं
घेर रहीं नगरी धीरे
ये सैनिक जो बन पिशाच में
रक्त मान के प्यासे हैं
शान्ति और मानवता में अब
रह रह आग लगाते हैं
संमुख स्तालिनग्रेद खड़ा है
जिमके पीछे बोलगा है
धक्का देकर आज डुबाने
बढ़ते, अगु अगु डोला है
लम्बा फ्रन्ट पड़ा था फैला
नभ में यू-२ यान चला
धूँआ स्टैपी से उठ ऊपर
महा तिमिर सा फैल चला
टैंकों के चलने से कुचली
भूमि विताड़ित रौंदी सी
बम गिरते ही भयद लहर बन
उठती गिर गिर चौंकी सी
चारों ओर गोलियाँ चलतीं
नभ में अंधी सी उड़तीं
यानों के पंखों पर टकरा
अट्टाहाम मचा उठतीं

यू-२ यान मगर निर्भय है
नक्शे पर है चिह्न लगा
वह चुइकोफ अमर दृढ़ता से
नीचे रह रह देख रहा
नगर जल रहा था गिरते घर
मानों भयद कराहें थीं
रिपु सेना की गोलीं चलतीं
रोक रहीं सब राहें थीं
पाइलट मौन नयन से नीचे
कभी कभी तक लेता था
और दहाड़ रहे यू-२ को
वायु लहर में खेता था
नगर उजाड़ पड़ा था लेकिन
मन मेना के उठे हुए
अरे उसी की छाया बन कर
ये विमान थे उड़े हुए
कभी कभी पृथ्वी पर खिसली
छायाएँ हैं भाग रहीं
भग्न घरों पर बह बह जातीं
ज्वालाओं को चूम चलीं
उस बाग़ठर्वी सेना का वह
स्टाफ जमा था चेतन सा
एक पहाड़ी पर स्थिति, नीचे
महा नगर समवेदन सा
दीख रहा था नगर वहाँ से
जैसे चरणों पर लुढ़का
रोता था चीत्कार मचाता
सहसा कभी कभी कड़का

ईट ईट मैदान हो गई
 लहर लहर थी पाश नहीं
 खोल रहा वोल्गा का पानी
 यह भय जाग्रति नाश बनी
 पत्थर तोड़ सड़क पर सहसा
 खाई खोद छिपे सैनिक
 'एक इंच है, एक बूंद है'
 गरज उठे निर्भय सैनिक
 कल्लेआम मच जाय नगर में
 दुश्मन का मिट जाये नाम
 बासटवीं सेना का डर है
 याद रही है भोर न शाम
 जारिस्मिन के वृद्ध साहसी
 अवशेषों का आशीर्वाद
 नये रक्त में स्मृति भर रहा
 भरता था उर उर में आग
 सेना कौमिल में बोला था
 वह चुड़कोफ गरजता सा
 'ईट ईट सा खड़ा रहेगा
 जन जन अपनी सेना का'
 उस गर्जन की प्रतिध्वनि से ही
 कांप उठा था लपटों में
 भग्न पड़ा वह महानगर हिल
 जाग्रति भरता लहरों में
 उन बच्चों का खून ! क्रम है
 जो फ्रामिस्टों ने मारे
 उन खेतों, घर, नगर, जहाजों
 उन स्टेशन, नहरों—मारे
 क्रम सभी की आज सोवियत
 संस्कृति पर दुश्मन आया
 और गुलामी फैलाने को
 फिर से ज्वर विषमय आया

बगलों पर खूनी दुश्मन है
 बढ़ता ही आता क्षण क्षण
 लहरों के प्रचंड धक्कों से
 झुकी नीर की घास विजन
 पर फिर उठती है साहस भर
 फिर फिर है झुकती जाती
 कोई रक्षा कर न सकेगा
 यही निराशा घिर आती
 वह हिटलर फिर से मुस्काया
 यूरुप में फिर तम छाया
 झोंके में लौ हिल कांपी थी
 तम—अब आया, अब आया
 क्या यह हड्डी चटक उठेंगी
 जिन पर आज्ञादी निर्भर
 और बदन से खून बह रहा
 जैसे गिरते थे निर्भर
 सांभ रोक दुनिया तकती थी
 क्या यह तारा डूबेगा
 टूट गये सब पोत मगर क्या
 यह जहाज भी टूटेगा ?
 नीप्रोपैत्रोवस्क टूट कर
 भीषण बाढ़ें लाया था
 क्या यह सेना गिर जायेगी
 फिर विनाश ही छाया सा
 'नहीं नहीं' सुन पड़ी अचानक
 और कमान्डर भारी स्वर
 बोल उठा—'इस ठौर खड़ी हों
 अपनी सेनायें जाकर'
 सघन बाढ़ थी वहाँ टैंक की
 नभ में उड़ते यान रहे
 जैसे आँधी पहले उमस
 सब पर घुमड़े और कंपे

एक और घूमा बासठवी
 सेना का फिर चिन्ह न हो
 और जर्मनों के स्वर उठते
 'रूसी ! नम्बर शीघ्र कहो'
 बाईं बगलों के वे सैनिक
 नद पर चले, रुके तट पर
 और बिलीन हुए आगे जा
 कुछ न दिखा केवल खंडहर
 उनके पीछे घन निस्तब्धा
 में झुक पूरी सैन्य चली
 खंडहर और भग्न पंथों पर
 धीरे धीरे रेंग चली
 बोल्गा औ' जर्मन गोलों के
 बीच आ चुकी थी सेना
 मन मे सब के घोर क्रोध था
 कहता अब लेना लेना
 भोर हुई फिर जर्मन दृटे
 उनके बिलुप्त सत्यानाश
 करने बासठवी सेना का
 रुद्ध हो चले शंकित श्वास
 बाईं बगलों पर प्रहार कर
 गार्ड भयानक गरज उठे
 जिनसे बिखरे जर्मन सहसा
 राह छोड़ते लरज उठे
 धरती खिसक गई नीचे से
 या पहाड़ आ टूटा था
 मार मार की भीषण भयदा
 प्रतिध्वनि में सब डूबा था
 भाग चले रिपु रक्षागृह को
 हमला चकनाचूर हुआ
 गिरी वेग से धार, तड़प कर
 भरना भरना विकल हुआ

और कड़ी पृथ्वी पहले से
 कड़ी लगी धीरे उठने
 जर्मन साहस पिटा अचानक
 अपने आप लगा घटने
 दिन दिन वेग किंतु बढ़ता था
 जर्मन करते थे अपमान
 सोलह सोलह घंटे चलतीं
 मशीनगन लड़खड़ अविराम
 रे तेरह सहस्र मुख से जब
 लाखों गोली चलतीं थीं
 रक्त रक्त की बहती धारा
 पृथ्वी दलदल लगती थी
 डेढ़ हजार यान नित्य ही
 ताक ताक गोले बरसा
 छार छार कर रहे भूमि का
 इंच इंच धूँआ उठता
 वह चालीस हजार गिरे बम
 छः हजार टन लोहा था
 जिसने स्तालिनग्रेड नगर की
 नींवों तक को तोड़ा था
 पर बासठवी सेना फिर भी
 सीना खोले खड़ी रही
 लुढ़क गया सैनिक पर उंगली
 घोड़े पर ही जड़ी रही
 नाइकन जिसने अभी कदम ही
 रखा था यौवन पथ पर
 एक अकेला ही सीढ़ी पर
 लड़ता बीसों से डट कर
 कोई भाग रहा था ऊपर
 सीढ़ी पर चढ़ते गिरते
 हैंडग्रिनेड फेंकते निर्भय
 प्राणों से खेला करते

बीत गया दिन, रात आ गई
 सोलह घण्टे तक अविराम
 युद्ध खंडहरों पर होता था
 अरे युद्ध ही था विश्राम
 वैसीली जैत्सेव तड़पता
 गरजा भेद उठा रण को
 मीलों दूर वही स्वर जाकर
 पड़ा सुनाई स्तालिन को—
 लिखा हुआ था—माथी स्तालिन
 वोल्गा के उस पार कहीं
 चप्पा भर भी इस पृथ्वी का
 आज हमारी लाज नहीं
 जर्मन यानों से कागज थे
 गिरते मिथ्या भय लाते
 पर सच था—सेना घिर आई
 कोई राह न थी आगे
 राह खुली पीछे वोल्गा थी
 जिस पर गोली चलती थी
 अंगारों की बाढ़ें आतीं
 आज हवा को छलती थी
 जर्मन तोपें ऊंची दैठों
 खड़का पत्ता, धांय उड़ा
 मोरटार और ट्रैंच गनों का
 महाक्रोध उम आगे मुड़ा
 बिंदु बिंदु अंकित गोली से
 इंगित की दासों बन कर
 मुख खोलें बन्दूकें तकती
 आज मरण प्रहरी बन कर
 चीड़ लिये मैपर आते थे
 वोल्गा की उम धारा पर
 जिसका पानी महाशीत में
 भाप दे उठा था कातर

खंडहर इतने—तैक रुक गये
 हैंड ग्रिनेड थीं या पत्थर
 दम दम गज पर शव गिरते थे
 लोहा तड़क रहा सब पर
 भोर हुई निर्मल अधियारा
 काँपा धीरे बिलमाया
 एक बड़ा बेड़ा आकर के
 नगर तीर से टकराया
 पानी के हाथों पर चल कर
 मन की अमर उमङ्ग बना
 वह आया था और रुका था
 बन कर एक अमर सुपना
 जर्जर था हर भाग भग्न सा
 क्षत विक्षत घायल सैनिक
 पड़े हुए थे उस पर मूर्छित
 माहम पर जीते सैनिक
 एक बचा जीवित बोला वह
 आँख मुंदी थी, क्षत काया
 'यह वोल्गा का कौन किनारा
 बाँया है या है दाँया ?'
 'दाँया !' एक पुकार उठी—सुन
 एक गई स्मिति मुंह पर खेल
 बुझी दीप की लौ टिमटिम कर
 खड़ा रहा पर स्तालिनभेद
 यह वोल्गा है खून हमारा
 बहता है जो नम नस में
 हमका पानी प्राण हमारा
 व्याप रहा है रग रग में
 यह लहरें हैं नहीं—बल्कि है
 अपनी उन्नति की गति ही
 चूम किनारों को बहती है
 आशाओं की चिर रति ही

मानवता की मर्यादा यह
 अरे पूर्वजों की है आन
 आज क्रान्ति नेतृत्व मिला है
 जीना है लेकर अभिमान
 युग युग की पुकार मानव की
 आज हमारा साहस है
 कम्यूनिस्त हैं हम न कभी भी
 झुकती अपनी ताकत है
 सुन यह गीत महान् महान्द
 वोल्गा में था ज्वार अखेद
 जल में छाया डाल हम उठा
 तब धीरे से स्तालिनघेद
 टूटे कवच भग्न थे आयुध
 हँटों का अभिशाप जमा
 बामठवीं सेना का उल्टा
 भीषण हमला नहीं थमा
 क्रुद्ध हुई जर्मन भीषणता
 अपने आप पुकार उठी
 महामरण की लालिम झलना
 हर घायल ललकार उठी
 चौदह अक्टूबर को सहसा
 सब भीषणता दृक्क गई
 थर्मोपाली पानीपत की
 शान लजा कर मिमट गई
 फासिस्टी बल आया लेकर
 अपना अदभुत रण कौशल
 सीज़र की सेनाओं सा जो
 सदा विजयमय उल्लूखल
 खंडहर घेरे, घर घर घेरे
 घेरा पथ, वोल्गा डाटी
 और गगन में अट्टहास कर
 प्रबल पिपासा आ नाची

वह ढाई सहस्र भीषणतम
 यान गगन को भेद उड़े
 रूसी सेना को विलक्ष्यकर
 ताक ताक कर घेर उड़े
 वायु भयद विलुब्ध हो गई
 खलबल पड़ती भोंकों में
 शीशे चटक चटक गिरते हैं
 धड़कन के उन शोरों में
 ऊंची ऊंची ठौर लुढ़कतीं
 उन पर से गन ढहा रहीं
 कमान्डरों के स्थान ढंक गये
 उड़ उड़ मिट्टी दवा रहीं
 पृथ्वी हिलती थी गर्जन में
 जैसे नाव डगमगाती
 लहरों में तूफ़ानों में टकरा
 पालें हैं फटतीं जातीं
 प्राण कंठ में समा गये थे
 खाई में सैनिक लुढ़कें
 शत्रु यान 'गायक' रव भरते
 लाखों बम फट फट तड़कें
 मिट्टी उठती, जैसे नभ से
 केवल मिट्टी बरस रही
 जो अंगारों सी दहकाती
 अणु अणु को है झुलस रही
 वोल्गा की भीषण लहरों ने
 तट पर हमला बोला था
 एक लबालब बाढ़ डुबाती
 जल ने बंधन खोला था
 प्रबल भड़ाके सुनकर लहरों
 में उन्माद भरा आता
 धूँआधार में उनका कंपन
 शक्ति अपरिमित लाता था

सहसा बोलगा पर थी ज्वाला
 फैला भयद उजाला सा
 आग जल रही थी पानी पर
 लपटों का भय जाला था
 महाप्रलय के जलप्लावन पर
 विजली कड़की और जली
 भीषण लपटों की भड़कन ले
 जल पर जलती उठी रही
 ईंधन पर बम फटे भयद वे
 खाई, सेना, हेडक्वाटर
 भीतर बाहर अणु अणु भेदे
 जैसे ज्वाला के निर्भर
 जलता तेल खौलता निर्मम
 जो झुलमाता जलता था
 ऊष्मा, धूम, ज्वाल ही थे सब
 इनका भय रव गरजा था
 स्टाफ, खून में नहा रहे थे
 अफसर उठते थे गिर गिर
 पर वह युद्ध अरुक चलता था
 शत्रु देखना विस्मय भर
 और कमाण्डर हिला न काँपा
 आज्ञा देता था अब भी
 घायल पीछे हट न रहे थे
 हाथ चलाते थे तब भी
 जले हुए तन जर्जर विक्षत
 और रक्त में लथपथ थे
 फटे शीश, कट गये अङ्ग सब
 श्वास रहे या आग लगे
 नसें मृत को, अर्ध जीवितों
 को थीं जबरन ले जातीं
 जिनकी वे कराह लड़ने को
 उन्मादिनि मचली जातीं

कैनन गर्जन बाद्य बन गये
 वह चुड़कोफ सुन रहा था
 अन्तिम गीत वीर जीवन का—
 घायल हाँफ कह रहा था—
 'माथी, जनरल, मैं मरता हूँ
 बोलगा के उम पार कहीं
 मत ले जाना मेरे शव को—
 मिट्टी हो बरवाद नहीं'
 मुड़े कमाण्डर के वह सूखे
 होठ, एक मुस्काहट थी
 लाल सैन्य के सेनापति की
 दृष्टि अचञ्चल तृप्त रही
 डूब गया रवि खूनी था नभ
 वह आता जो बोलगा में
 डमता आता था अंधियारा
 भरता अणु अणु कोला में
 रात होगई अंधकार ने
 बोलगा में गोता मारा
 वृत्त फरफराये डरते से
 आज निविड़ता की कारा
 किंतु धधकता रहा रात भर
 स्तालिनग्रेद उफनता सा
 कर्कश ध्वनियों का बोलगा पर
 बंधा रहा भीषण तांता
 दोनों ओर तड़पता बल है
 दोनों ओर नाद है घोर
 घुमड़ घुमड़ कर टकराते हैं
 जैसे वे बादल घनघोर
 वह चुड़कोफ देखता अपने
 व्यथित नयन से मौन उदास
 विद्युत् सी फिर मेधा तड़पी
 अधरों पर फिर छाया हास

अरे हँसी थी महावैद्य की
 अंतिम गोली—मंजीवन
 जो देना है उस रोगी को
 करे मृत्यु से जो घर्षण
 एक लगे धक्का फिर देखें
 बाजी किमके हाथ रहें
 अब प्यादा बजीर होने को
 फिर भी रिपु की मात रहे
 ढाई लक्ष संगठित जर्मन
 एक ठौर पर बढ़ते थे
 छः छः की टुकड़ी में बैठ कर
 रूसी सब कुछ भेले थे
 बिजली की भी त्वरगति उनकी
 हमला करते छिप जाते
 तीर बने भीषण अचूक वे
 बंधन नष्ट किये जाते
 घर घर में वे घुसे भयानक
 खंडहर तले छिपे भीषण
 उनके पीछे भारी आयुध
 आकर करते थे गजन
 खंड खंड कर बिजली टूटी
 आग लगी रिपु-कानन में
 टैंक-यान, पैदल-भीषणतम
 पर जर्मन भ्रममय मन में
 कोने कोने में यह छः छः
 चीते—मृगदल फटते थे
 टुकड़े टुकड़े किया शत्रुबल
 अधिक वेग से लड़ते थे
 पर जर्मन सेनाओं का तो
 घेरा बढ़ता जाता था
 आगे से छितराता लेकिन
 पिछे घिरता आता था

घिरे हुए सैनिक के मन में
 प्राणों की मृदु टीस जगी
 अरे एक क्षण अपनेपन की
 निर्बल करती प्रीत जगी
 आह घिरे हैं—पर दुश्मन की
 शक्ति अपरिमित बढ़ती है
 अपना बल विध्वस्त हो रहा
 बस आशा पर थाती है
 उधर एक जयनाद शत्रु का
 सहसा ही सब बोल उठे—
 'जब तक गुल्म रहे थे जीवित
 जब तक आयुध तोल सके—
 'एक नहीं जा पाये जर्मन
 एक न जाने पायेगा !
 स्तालिनप्रेमी ज्वान भला क्या
 पीछे भी हट पायेगा ?'
 युद्ध किंतु होता था अविरत
 नहीं श्वास तक लेता था
 आशा नैया उठी ज्वार पर
 खेल लहर का होता था
 जर्मन सेनाएं सुनतीं थीं
 पीछे हिटलर बढ़ा रहा—
 'है आर्य्यों का मान प्रखरतम
 इसी विजय पर अड़ा हुआ'
 'छः सप्ताह गये तो क्या है
 पर अब के तो बाजी है
 वीरों की है विजय सदा ही
 अनुगामिनि है दासी है !'
 भर भर कर विश्वास हृदय में
 जर्मन हमला बढ़ा रहे
 वे त्रिशूल से सभी दिशाएँ
 घेरे लोहा गड़ा रहे

पाषाणों में लुप्त थी सेना
 मुखरित ध्वंसिनि जागी थी
 अरे न दब पाई हैं लहरें
 विजय महत्ता जागी थी
 सेना कौमिल में विस्मिन कर
 वह चुड़कोफ पुकार उठा—
 'पृथ्वी में से चोट करेंगे
 ज्यों रहस्य का भार उठा
 ऊपर टुकड़ी, सैपर, भीषण
 हैंड ग्रिनेड उठें ललकार
 नीचे फाड़ वत्त धरणी का
 आज करेंगे माइन प्रहार'
 यह प्रस्ताव अजीब युद्ध था
 किन्तु सभी को था विश्वास
 मृत्यु कगारे पर स्थित सेना
 जैसे एक ले रही श्वास।
 जर्मन हड़ करके टीले के
 ऊपर अपनी शक्ति अपार
 बिन्दु बिन्दु बोलगा का तककर
 मार मार कर करते तार
 रूसी मौन नयन उस स्थल को
 लक्ष्य किये रह रह चुपचाप
 लगे खोदने गुफा उसी के
 नीचे घुमने, ले उन्माद
 तख्ता रख कर मांघे मिट्टी
 आज पहुँचना था उनको
 स्वैद शिथिल तन, नीरव भीषण
 मौन भयद कर जन जन को
 चौद दिन चौद रातों का
 उनको तनिक न ज्ञान हुआ
 जलते बिजली के दीपक वे
 दृष्टि कि था अंगार हुआ

जर्मन सेना के हित जैसे
 कब्र खोदते थे मिल कर
 ऊपर जर्मन बोलगा डाटे
 गरज रहे निर्भय बन कर
 झुके रहे, झुक गई कमर भी
 तन का भाव हुई पीड़ा
 काले मुख, गड़ढ़े में आँखें
 रूप हो चुप था नीला
 वेग न रुकता, गिरती पलकें
 श्वास घुट रही थीं द्रुमह
 मिट्टी में रँग हुए भूत से
 कर चलता फिर भी रह रह
 टाइखन सुन पाया अबभिरपर
 जर्मन ध्वनियाँ होतीं थीं
 खोद गुफा पगतल लाये थे
 अब कातरता खोती थी
 टाइखन मुक्काया रिपु का वह
 गर्जन सुन—होता ऊपर
 बौराया रोगी मरने की
 तन्द्रा में चिल्लाया डर !
 बारूदों के किलोग्राम वह
 तीन सहस्र भरे लाकर
 मरण-अग्नि रिपु के पगतल धर
 रूसी निकल चले बाहर
 कुछ क्षण बीते, महावेग से
 जर्मन ऊपर चला रहे—
 अपने आयुध, बोलगा बेधे
 लहर लहर को हिला रहे
 एक धड़ाका—जैसे सब ध्वनि
 स्तब्ध हो गई थी क्षण भर
 वह घननाद घोर नीरवता
 सा चिल्लाया देरी कर

कांपी बोलगा, लहरें थहरी
 मंद पड़ गये सारे स्वर
 प्रतिध्वनि में भट अट्टहास कर
 लुढ़क गये अगनित खंडहर
 तोपें सिमकीं, बंदूकें भी
 केवल फुमफुम करती थीं
 जर्मन शक्ति केन्द्र की ऊंची
 छायाएँ भी मिटतीं थी
 एक बार वह टीला सा उड़
 कांपा क्षण भर छितराया
 खंड खंड हो महावेग से
 पृथ्वी पर गिर टकराया
 टुकड़े टुकड़े होकर जर्मन
 फटे कटे मिट्टी में मिल
 और न जाने सहसा बोलगा
 पर दौड़ीं नावें चंचल
 इसके बाद अचानक ऐसी
 शक्ति भरी रूसी मन में
 हमला करते ही बढ़ते थे
 और मारते थे क्षण में
 दाब लिया था फनविपथर का
 अथ उम पर चोटें करते
 बरस रही थी ज्वाला रिपु पर
 और वज्र से थे गिरते
 टूट गया था बांध कि या फिर
 मूसलधार गिरा पानी
 युद्ध विभीषणता की सीमा
 पर पहुँचा था अभिमानी
 वायु वेग से चलती थी जो
 ज्वालाएँ उकसातीं थी
 जर्जर दीवारों से थहरा
 धक्का दे गिरता पातीं

महागरज से दोनो सेना
 हमला करतीं जूझ रहीं
 पर जर्मन चातुर्य विफल मा
 रह रह सेना टूट रहीं
 घर के भीतर, घर के बाहर
 नीचे ऊपर खंडहर के
 दीवारों की आड़ों से या
 खिड़की छज्जों से छत से
 गोली चलतीं, सैनिक गिरते
 फिर धमधम पग करते थे
 दौड़, लुढ़कते—वह भिनेड के
 थंडर बार उमड़ते थे
 मत मंजिली हमारत लुढ़की
 रूसी निम्न भाग में घोर
 रणदुर्मद होकर लड़ते थे
 जर्मन वेग रहे थे तोड़
 भुंड भुंड जर्मन आते थे
 आज क्रुद्ध हो आग लिये
 तभी एक किर्गिज छत लखकर
 बोला युद्ध सुहाग लिये—
 थका नगर है, थके हुए घर
 ईंटें तक हैं थकी हुईं
 किंतु अभी तक हम न थके हैं
 और न आशा थकी हुई
 किंतु अचानक रूसी सेना
 जर्मन बगलों पर दूटीं
 फाड़ बीच से तोड़ भुकाया
 रिपु को बिखराती जूझीं
 बासठवीं सेना का लोहा
 लोहे को था काट सका
 जिसकी चोटों से जग दहला
 कोई भेल न डाट सका

मृत्यु खोल कर पंख उतरती
 नाज़ी बल पर छाया डाल
 घेर रही थी धीरे धीरे
 झुकता था वह उन्नत भाल
 बोलगा अब स्वतन्त्र बहती थी
 नगर हो रहा था बलमान
 जर्मन सेना उखड़ रहीं थीं
 अब धीरे धीरे जयमान
 बामठवीं सेना ने मचमच
 बचा लिया था स्तालिनग्रेद
 वीर रक्त से रंजित फहरा
 भंडा बन कर स्तालिनग्रेद
 वह चुइकोफ श्रान्त नीरव सा
 धारा खे उम ओर गया
 बोलगा तट पर महाशीत में
 देख रहा था हिम जमता
 और ध्वंस में नगर घबकता
 एक तोप सा शक्ति भरा
 उगल रहा था आग शत्रु पर
 ज्यों भीषण उल्लाम भरा
 जग भर मे आ रहे मंदेशे
 स्तालिनग्रेदी सेना को
 दुगना साहस सा देते थे
 भरते विजय पिपासा को
 स्तालिन का मन्देश मिला था
 वह चुइकोफ हिला सहसा
 जो जर्मन भीषणता में भी
 खड़ा रहा रह रहा गरजा
 आज स्नेह से नयन भरे थे
 और कण्ठ था भर आया
 महामातृ के मृदुल अंक में
 शिशु ने अपना घर पाया

बोलगा, नगर, गगन धरती सब
 अंग अंग से थे उसके
 आह प्यार से सिक्त हुए थे
 जो इस रण से थे झुलसे
 नयनों में नव ज्योति जगी थी
 होठों पर कंपन छाया
 मादक सुधियों का खुमार वह
 सिहरन सी भर भर लाया
 उठा हाथ—चुइकोफ सलामी
 भग्न नगर को देता था—
 नगर—शहीद बना घायल सा
 महाक्रान्ति का नेता था !
 वह चुइकोफ—सहस्रों शीतल
 आँखें दहरातीं थीं मन,
 आज पुलकसे शिथिल गात वह
 देख रहा था नव जीवन
 पले धूल में जिमकी वह था
 आशीर्वाद उसे देता
 एक बीज फूटा था तरु सा
 चिर विश्राम सुखद देता
 सुना आज ज्यों रिफा रहीं थीं
 किलकारी मृदु शैशव की
 बुभुतीं थीं ज्यों धीरे धीरे
 आग भयङ्कर भैरव की
 मृदु मृदु आलिंगन की ऊष्मा
 आज बिमुध करती उसको
 महानगर में वह कलरव फिर
 होता दीख रहा उसको
 बोलगा की कोमल मर्मर में
 जैसे मांझी गाते थे
 और घरों से श्लथविलास स्वर
 वायु परो पर छाते थे

वह चुइकोफ मंदिर खोया सा
 रहा देखता भूला सा
 जिमके प्राणों की बाजी पर
 यह सुपना कल भूला था
 क्रांति क्रांति का जो विराट स्वर
 उम स्तालिन ने गाया था
 सफल उसे कर महाशांति का
 गीत आज दुहराया था
 माताएँ पुत्रों से मिलतीं
 छाती भर भर आतीं हैं
 सुन्दरियाँ अपने प्रियतम को
 भर भर अंग लगातीं हैं
 फिर खेतों में राग उठेंगे
 फिर मीठी हलचल होगी

फिर जीवन के मृदु उपवन में
 यौवन की क्रीड़ा होगी
 वीत चला था वह टीढ़ी दल
 खेत भग्न सा दीख रहा
 किन्तु उगेगा वह फिर कल ही
 रूप अमित था रीझ रहा
 आज बाढ़ के बाद भूमि यह
 कितनी सुखदा लगती थी
 कल फिर घर जागेंगे रह रह
 यह आशा ही जगती थी
 वह चुइकोफ देखता जैसे
 फूल खिला था हँस हँस खेल
 भग्न किन्तु चिर वैभवमय वह
 बुला रहा था स्तालिनप्रेम !

तीन मास, हाँ, नब्बे दिन तक—
 हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
 जर्मन हमला हुआ नगर पर
 और हुआ था ध्वंस विराट
 तीन मास, हाँ, नब्बे दिन तक—
 हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
 घर, मिल, पथ उपवन सबका ही
 दुश्मन करते सत्यानाश
 तीन मास, हाँ, नब्बे दिन तक—
 हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
 रूसी फौजों ने दुश्मन के
 खट्टे कर कर डाले दांत
 तीन मास, हाँ, नब्बे दिन तक—
 हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
 टैंक यान, तोपें औ' पैदल
 उतरे आज पराजय घाट
 नब्बे दिन तक फामिस्टों की
 लहरें चढ़तीं ही आईं
 नब्बे दिन तक रूसी फौजें
 हमला मढ़तीं ही आईं
 बड़ मुड़ कर पीछे न हटेंगे
 पर यह छोड़े राह नहीं
 गोता लगा रहे हैं जर्मन
 फिर भी पाते थाह नहीं
 यह माहम था लौह हृदय था
 यह थी विजय रक्त पर ही
 रक्षा पर चोटें चढ़तीं थीं
 और अंधरी में बढ़तीं

बोल्गा के तीरों से मिलना
 और कठिन सा लगता था
 हमला करता सा रूसी बल
 अधिक शक्तिमय लगता था
 जर्मन सेना के रह रह कर
 अगन डिवीजन घिरते थे
 जो अपनी ताकत पीछे से
 ला ला यहीं खपाते थे
 बाईं बगल और पीछे कुछ
 महाडॉन की धारा थी
 डॉन और बोल्गा की भू में
 शक्ति चलीं ज्यों कारा थी
 प्रबल वेग जर्मन सेना का
 आज हुआ खंडित विध्वस्त
 छिन्न भिन्न करने की चालें
 लेकर नाज़ी बल था व्रत
 बोल्गा नद यूराल प्रांत से
 कट न सका था बाकी देश
 मॉस्को की मृगतृष्णा हारी
 देती थी रह रह कर क्लेश
 उल्टे नाज़ी बल घिरता था
 घेरे बढ़तीं रूसी फौज
 दो तलवारों में गर्दन पा
 कांप रही थी जर्मन फौज
 उत्तर पश्चिम, दक्षिण पश्चिम
 से पहला हमला ले शक्ति
 हथर हुआ—उस ओर करोड़ों
 देख रहे थे अपनी मुक्ति

धूँसा सा पड़ता था मुख पर
जर्मन सके न मुँह को फेर
महाविजय की भंकारों से
प्रतिध्वनि करता स्तालिनघेद
वह प्रतिध्वनि अज्ञात शक्ति थी
शोषित मानवता का त्राण
अरे करोड़ों शीश उठा कर
देख रहे थे नूतन प्राण
इधर डॉन का हमला भीषण
उधर चीन हुंकार उठा
आजादी के लिये तड़पता
यह भारत फुंकार उठा
और कि सेना ट्यूनिशिया में
नवल शक्ति से गरज उठी
साम्राजी—कामिस्टी ताकत
लड़खड़ सुन कर दहल उठी
युग युग की शोषित जनता भी
उगता मूरज देख रही
एक मोर्चा एक लक्ष्य था
जिस पर सबकी टेक रही
उठा क्रदम जापानी रिपु का
अब पीछे जाता था हेर
मिट्टी भी अंगार हुई थी
जय जनयोद्धा स्तालिनघेद
उत्तर पश्चिम की सेनाएँ
बगलों पर करती थीं वार
तितर बितर करतीं, नाज़ीबल
भेल न पाता किंतु प्रहार
जिनके भीषण आघातों से
यूरुप के वे देश विश्रांत
हारे और गिरे मुँह के बल
छाया बर्बरता का ध्वांत

आज दूटती थीं रह रह कर
कड़ियां प्रबल गुलामी की
जिनके पाशों में दुनिया की
घुटनी सांस सताई सी
हिला पहाड़ दहल कर थहरा
लहरों की चोटों से हार
कल तक लहरों के गर्जन पर
कर उठता था अट्टाहाम
आह कराह उठा वह जालिम
अपने अरमानों पर सेक
सेक रहा अपनी जानों को
अवाँ बना था स्तालिनघेद
आज नाव पर जल दूटा था
आज बाढ़ थी जीवन की
क्षण क्षण बढ़ती ही जाती थी
भीषणता पागल रण की
अभी भयानकता छाई थी
रिपु अंगारा बुझता था
जिसको पैरों तल लालों ने
बदला लेकर कुचला था
दलितों की भीषण आहें या
मां बहिनों की इज्जत थी
लूट आग या बर्बरता के
बदले की यह लज्जत थी
अरे बच सका है क्या कोई
जनता की तलवारों से
गूँज रही दुनिया अब तक भी
सन् सत्रह के वारों से
दो बिजलियां गुंथी हैं कड़कीं
खून मांस की देकर भेंट
गिरते उठते लड़ते मरते
हँसता है पर स्तालिनघेद

घेर लिये बाईस डिवीजन
जर्मन सेना के अभिभूत
रणदुर्मद रूसी फन्दे थे
कसते जाते आज अचूक
उत्तर से दक्षिण पूरब तक
एक शक्ति कालच आई
दक्षिण से उत्तर पश्चिम तक
दूजी धारा बह आई
डॉन और वोल्गा के भीषण
दाबों में जर्मन पिसते
उगल रहे थे अंगारों को
अन्तिम चैष्टाएँ करते
जर्मन ढाल आज चटकी थी
भीतर से मणि चमक रही
और सर्प की भय लपेट थी
प्राणों को कर रुद्ध रही
वोल्गा प्रत्यंचा सी थहरी
अब रह रह टंकार उठी
शत्रु ध्वंश का तीर चढ़ा कर
वोल्गा पर कर मार उठी
वोल्गा और डॉन पर उनके
रक्षागृह जर्जर विध्वस्त
धीरे धीरे यह रूसी बल
कर लेता था बढ़ कर प्रस्त
वोल्गा और डॉन दोनों के
बीच अनेकों खड्ड बने
अन्धकार के भयद नाद से
गूँजा करते क्रुद्ध तने
किन्तु मड़क चमका करती है
स्निग्ध कपोलों सी सुन्दर
और पहाड़ी उन वीरों के
गाया करती गीत मधुर

जला चुकी मोरटार गनें थीं
पृथ्वी काली दिखती थी
जो कि डॉन के मैदानों की
छाया बन कर उठती थी
रुमानियन कि जर्मन सेना—
कोई भी न सफल होता
कोचेकोव लिये पन्द्रह जन
विजय गर्व हँस कर दोता
मरते मरते उन सोलह ने
युद्ध किया फिर खेत रहे
वह शहीद—विजयिनि सेना के
महानाद बन मुक्त रहे
एक कुहर से भरी भोर में
'एन' यूनिट ने बार किया
पाला छूता था कानों को
और वायु ने शीत पिया
टूट गया वह घन सन्नाटा
वायुयान के चलने से
और बैटरी मोरटार की
रुक न रही थी बढ़ने से
अभी नहीं वह शब्द रुका था
टूटी पैदल सेनाएँ
बड़ी मशीनें टैंक गरजते
हमला था दायें बायें
सघन कुहासे में कुछ ज्वाला
बन्दूकों की दिखती थी
लेफ्टिनेण्ट बाबायक वाले
बैटेलियन की सरुती थी
जीत लिया था मध्य केन्द्र को
तूफानी हमला कर के
मत्सोवस्की सबसे पहले
चढ़ा पहाड़ी पर लड़ के

मैकेरोव, वोल्किन पीछे
 ब्लेसो, फ्लेमिन, दोदोस्किन
 वीर सिपाही—कूक चढ़े थे
 कांप उठे व्याकुल दुश्मन
 हाथ उठ गये—त्राहि त्राहि कर
 दुश्मन हा हा खाते थे
 उनके ही पिलबॉक्सों में से
 चीत्कारों के घाते थे
 जयनादों से दूर दूर तक
 गूंजा खंडहर स्तालिनग्रेद
 गूंजी शक्ति सोवियत की थी
 आज लिये थे बर्बर घेर
 एक एक कर सांम खींच कर
 जर्मन तोपें थीं ठंडी
 और कैदियों की कतार ही
 होती जाती थी लंबी
 मुर्दों से पथ लथपथ खूनी
 पड़ी अनाथा बंदूकें
 घास उग रही ठौर ठौर पर
 और कराहों की गूंजें
 टैंक जला कर चूर कर दिये
 पूरी सेना बिखरा दी
 सैनिक उठते ज्वालामुखि से
 आग बरसती दहकाती
 बोलगा के तट पर वह जर्मन
 गड़े हुए थे स्तंभों से
 पीछे ठुकरा देते थे वह
 वेग अनेकों धक्कों के
 वह यूजीन महानगरी के
 उत्तर पश्चिम पर आया
 कभी कभी बन कर दुर्भागी
 क्रोधित होकर भरमाया

महारूस यह एक घड़ी थी
 मॉस्को सूई चला रहा
 समय बीतते चेतन करने
 रह रह घंटा बजा रहा
 वह यूजीन देखता विस्मित
 नगर नदी अब भी जलते
 और ध्वंस की उस बेला में
 जैसे सैनिक थे हंसते
 उत्तर पश्चिम के हमले से
 जर्मन सेना भागी थी
 बहुत दिनों की गड़ी चोट वह
 तोड़ी और उखाड़ी थी
 टैंक और अश्वारोही वह
 कालच तक जा पहुंचे थे
 स्तालिनग्रेद नगर का पश्चिम
 धीरे धीरे गहते थे
 कर्नल बेबिख ने रूमानि
 सेनाओं को घेरा था
 कायर बन कर जिनका जनरल
 सेना को ले आया था
 जर्मन दबे पूर्व के पीछे—
 बढ़ती लाल फौज भीषण
 मृत्यु खेलती ज्यों घायल से
 जो करबट लेता क्षण क्षण
 बूढ़े कौसक व्याकुल नारी
 जर्मन लूटों के आखेट
 मुस्काते थे धीरे धीरे
 पिघल रहा था अब निर्वेद
 व्यर्त्याची फार्म में सहसा
 देखी पड़ी हुई लाशें
 रूसी—जर्मन हाथों बंदी
 मर कर मूंदे थे आँखें

एक सलामी लाल क़सम है
 इनका बदला हम लेंगे
 राहों पर रूसी मुर्दे थे
 उनका बदला हम लेंगे
 बदला ? भरती स्फूर्ति हृदय में
 लहरें मार रहा है जोश
 मन की घृणा तड़प चिल्लाती
 प्रतिध्वनि करता भीषण रोष
 वह जर्मन की पुलिस शक्ति जो
 पथ रण में थी कुशल अतीव
 जिसने कुचला था घर की ही
 अन्य शक्तियों को निर्भीक
 साम्राज्यी ब्रिटेन अमरीका
 फ्रांस आदि तब मौन रहे
 रूस जर्मनी को लड़वाने
 जिनके सारे सोच रहे
 चाहा था जर्मनी बनेगा
 बोल्शेविक धारा का बांध
 छोड़ दिया हिटलर उपक्रम में
 शक्ति गई मर्यादा लांघ
 आज उसी से कँपे स्वयं ही
 और रूस के साथ हुए
 सिंघों की गति भला स्यार के
 घोखों से कब मात रहे
 टैंकों की यह शक्ति भयंकर
 महासैन्य से अलग चली
 साठ किलोमीटर पथ काटा
 आँखों की माया गलती
 भोर धुंधलके में कँपती थी
 घना कुहासा छाया था
 दूर दूर तक भ्रम सा फैला
 सभी छिपाता आया था

भीगा भीगा अंतराल वह
 दहल गया सारा हिल कर
 टैंकों पर से गन चिल्लाई
 एक धड़ाके में मिल कर
 फेंके रॉकेट हुआ उजाला
 मानों कुहरा जलता था
 एक हुई आवाज सभी का
 साहस आगे बढ़ता था
 उठा उठा बंदूक सिपाही
 लगे दौड़ने गोलीमार
 तार काट कर टैंक बढ़ गये
 पृथ्वी दिखती जर्जर छार
 नम्बर दो का फार्म जीत कर
 शत्रु शक्ति की दूजी पांति
 नष्ट भ्रष्ट करदी टैंकों ने
 भरती शत्रु सैन्य में भ्रांति
 दाईं बगल दाबने सहसा
 फिलिपेन्को के टैंक चले
 दीर्घकाय वह जल्दी जल्दी
 बर्फ पीमने रेंग चले
 नहीं मड़क थी, मघन बर्फ ही
 खड्डों में भी भरी हुई
 किन्तु चूर्ण हो दब जाती थी
 नील छाँह में छिपी हुई
 आगे चलते टैंक तोड़ते
 पीछे पैदल हमला कर
 क्षत विक्षत करते आते हैं
 तूफानी भक्का नत कर
 झड़ी बर्फ की आँधी—अन्धा
 करती है पर चलते हैं
 कुतुबनुमे से दिशा देख ज्यों
 जब पथ निर्मित करते हैं

घनी घास वह कुचल कुचल कर
 समतल करते टैंक चले
 जैसे महासाम्य का पथ वह
 स्वच्छ प्रशस्त किये चलते
 एक फार्म जो शून्य पड़ा था
 धधक रहा था अब सूना
 निर्जनता के महाशून्य में
 भीषण लगता था दूना
 दाईं ओर अचानक रिपु ने
 गोली बरसाई भीषण
 बत्ती बुझा चले वह आगे
 केवल था सुनमान विजन
 दुश्मन आग लगाते जो जो
 फार्म छोड़ते जाते थे
 वह मानों रण पथ के दीपक
 बन कर राह दिखाते थे
 अभी भोर थी जीत लिये थे
 ग्राम अनेकों सहसा ही
 आशा के विपरीत गिरी थी
 विजली—जड़ तक दरकाती
 नोवोजारिस्मिस्की में वह
 रूसी टैंक चला जाता
 अनजाने जर्मन मोटर से
 रुकने का इंगित पाता
 रुका—स्नेह में जर्मन आये
 चौंक गये दुश्मन पाकर
 बन्दी होकर महाहास्य में
 डूब गये वह लज्जाकर
 अरे सहस्रों के शव भू पर
 पड़े रहे थे बने अनाथ
 रण-सामग्री मिली विजय में
 लेकर बढ़ते रूसी साथ

मैरीनोव्का कारपोव्का
 वोल्गा स्टैपी में पहले
 भग्न हुए जो ग्राम खड़े हैं
 अबके रक्षित दृढ़ बल ले
 चारों ओर घेर कर जर्मन
 उन्हें कुचलने बढ़ते हैं
 भीतर रूसी हमले की अब
 चल तैयारी करते हैं
 भोर समय ही बजी गोलियों
 घनी बर्फ थी जमी हुई
 अरे देखते पलक न गिरते
 जर्मन सेना घिरी हुई
 भीषण आर्टिलरी का गर्जन
 टुकड़े टुकड़े करता है
 बगलों पर मंगीनें चलतीं
 धक्का भीषण लगता है
 रिपु की वह चट्टान बीच से
 छोड़ चुकी थी अंध दरार
 मृत्यु पराजय की पुकार थी
 किन्तु नहीं डाले हथियार
 बीत गये दो घण्टे बढ़ते
 सहसा जर्मन फिर दूटे
 रूसी योद्धा की पसली पर
 दलबल लेकर थे जूमे
 किन्तु बर्फ अब चमक रही थी
 रुधिर और शव से घिरती
 ऊपा के नभ में बादल के
 टुकड़ों की छवि ज्यों दिखती
 गई रात—रण हुआ अरुकथा
 रूसी युद्ध वस्तु धरते
 और सहस्रों वे जर्मन शव
 बने खाद से पड़े रहे

हारी हुई ठौर के पीछे
 जर्मन शक्ति लगाते थे
 फिर से जीत सकेंगे कैसे
 इतनी बाधा पाते थे
 लुढ़क पहाड़ी से घायल हो
 पंथी ज्यों फिर फिर चढ़ता
 पैर नहीं जमते रह रह कर
 फिसल फिसल कर है गिरता
 टैंक बैटरी पैदल आने
 योद्धा वीर प्रमत्त गरज
 किन्तु नहीं चल पाते आगे
 गोली खाकर सुप्त लरज
 जैसे माली की वह कैंची
 फूल काट बिखराती है
 कंबल ओढ़े पर मयुमक्खी—
 भीर विवश हो जाती है
 गरज महानद धार उमड़ कर
 चली डुबाने जग मारा
 उधर ज्वार आया सागर में
 लौट चली नद की धारा
 कहीं कहीं जो पिलबॉक्सों से
 जर्मन गोली दाग रहे
 हैंडग्रिनेड की भूख मिटाने
 खुद ही आज शिकार रहे
 जो भागे उनके पानी की
 लाज जाँचनी संगीनें
 रूसी सेना कड़ियाँ बन कर
 फैलाती हैं जंजीरें
 छूट छूट कर बन्दी रूसी
 मिलते हैं गाते जयगान
 हर कोने में नव प्रहार पा
 जर्मन साहस है लयमान

आज सन्धि की उन शर्तों पर
 दुरमन को झुकना होगा
 और नहीं तो शत्रु रक्त को
 पानी सा गिरना होगा
 हैनीबॉली गर्व धूलि में
 शीश पटक कर रोता था
 सिंदबाद का बूढ़ा मद में
 अपना जीवन खोता था
 रूसी विजय गुँजाती आती
 जोतोवस्की कामीकोव
 भोर हुए ही फिर सेनाएँ
 चलीं शीघ्र कालच की ओर
 दोब्रिका—ओस्त्रोव रोज़की
 तज कर जर्मन भागे थे
 और हँस पड़े गाँव पुलक कर
 आज भाग्य फिर जागे थे
 महाशांति थी विस्तृत स्टैपी
 में मर्मर सी अब जागी
 जो पहाड़ियों में कलकल कर
 मंभा बन टकरा जाती
 ट्रक चलनी थीं, सघन धूलि के
 अजगर रह रह उठते थे
 घुमड़ लहरते ज्योतिष्क से
 फन फैलाते हिलते थे
 जर्मा हुई थी डॉन बर्फ से
 उस पर टैंक खिसलते थे
 छायाओं के कारण अब वे
 ज्यों दो दाँ मिल चलते थे
 कहीं कहीं पतला हिम चटका
 और शीत जल बह आता
 जिस पर छीटें मार बेग से
 अश्वारोही है धाता

पुल निर्माणित आज किया है
 दूर दूर से लकड़ी ला
 खेल हो रहा है हर पथ पर
 शत्रु चलाई गोली का
 संध्या की तन्द्रिल छायाएँ
 तरु तरु बेसुध करती थीं
 और विजय की सुखमय आशा
 इनके मनको भरती थीं
 हेडक्वार्टर से मिला सन्देशा
 जीत लिया है कालच को
 मोटर राइफल डिवीजनों ने
 नष्ट किया अन्तिम रिपु को
 बेघरबार और भूखे में
 जर्मन पथ पर भाग रहे
 बर्फ और बह प्रबल भकोरे
 हड्डी तक थे काट रहे
 अश्वारोही सेना ने था
 सरपट हमला किया कठोर
 खड़े हुए थोड़ा—कृपाण थे
 उठे तड़पते नभ की ओर
 उस दिन भगे नागरिक रूसी
 जर्मन ट्रक ने कुचला था
 आज घेर कर नगर सैन्य यह
 लेती उसका बदला सा
 नव रक्षागृह हृद कर जर्मन
 देख रहे थे अधियारा
 आज निराशा बन छाता जो
 विजय घन गई थी कारा
 कदम कदम विध्वंस शंख सा
 बजता था निर्भय मन सा

भूत के पहले चमका था
 पोक फिर से जर्मन का
 जर्मन युन्कर वं बावनवें
 पथ से धम बरसाते
 गोली खाकर, हा हा करते
 गलते जलते गिर जाते
 जैसे लाश देख कर लाखों
 शील तड़प कर धाती हैं
 रूँए की वह घोर घटाएँ
 नीक बनाती आती हैं
 गोलह घंटे का भीषण ख
 टैपी पर है गूँज रहा
 वेजय विजय कानाद प्रफुल्लित
 महाडॉन को चूम रहा
 पके हुए तन, उठे हुए मन
 तैनिक मुख को धोते थे
 प्रांत अवयवों की कातरता
 हँसते हँसते खोते थे
 केन्टु विजय यह उपा सदृश थी
 उस दिन की जो आयेगा
 और युद्ध का रोग मिटा कर
 न्योतित मार्ग दिखायेगा
 एक वूँद है यह उस सुखमय
 वर्षा की, जो एक दिवस
 जग भर में हरियाली फैला
 नष्ट करेगी अन्ध कलुष
 एक एक कर लगीं टूटने
 मानवता की जंजीरें
 एक विराट लहर जाग्रति की
 धनु अणु उठते मस्ती में

वह बोल्गा पर जमता जमता
हिम आपस में टकराता
मंथन सा करता फेनों सा
हिल हिल कर है छितराता
हिम धारा पर लम्बे लम्बे
वह शहतीर बहे जाते
जनता के प्रतिशोध प्रबल में
कङ्कालों से मुरझाते
वह लो वजरे जो बर्फाली
बोल्गा पर हैं खिमक रहे
उनमें जर्मन बंदीगण के
दिल भीतर हैं धसक रहे
श्वेत बर्फ के बीच बीच में
नील लौह सा पानी है
और थिरकतीं नावें आतीं
बंदीघर लासानी है
पथ पर झुके हुए वे बंदी
लिये हुए मुँह मुरझाये
इस जीवन पर लज्जा करते
बोल्गा के पथ पर आये
कल वे सीधे खड़े गरजते
कम्पित जग को करते थे
आज गिरी सी गरदन ढीली
लम्बी श्वासों भरते थे
नत थे नयन और सूने कर
फिर भी सहते थे हारे
जनता-बन्दी श्रेष्ठ आज है
या फामिस्टी हत्यारे ?

तब हम क्रूर और बघरे थे
पशु थे अंधे लोभी थे
जग को अपना दास समझते
खूनी भीषण क्रोधी थे
माँ बहिनों के मान बिगाड़े
बच्चों के हत्यारे थे
लूट और अत्याचारों से
हमने नगर उजाड़े थे
बन्दी हंकर भी प्रसन्न मन
इच्छा से वे चलते थे
नव वर्षा की आशा से ही
इस उमस को सहते थे
बड़े वेग से लहरें आकर
चट्टानों से टकराईं
और तड़प कर तीर चरण पर
हा हा खातीं छितराईं
बर्फहीन इन मैदानों में
टीढ़ी-दल से खड़े हुए
अपने सब अरमान हार कर
आज शरण में पड़े हुए
सघन धूम में अन्ध भयद सा
कुहरा भूला पथ अपना
छिपने लगे वृक्ष धूमिल हो
जैसे खोता है सपना
बोल्गा की मर्मर पर कोई
लालिम छवि थी रेंग रही
जाते रवि की विकल रश्मियाँ
मजल व्यथित सी रुंध रहीं

बिजली के तारों पर धीरे
बर्फ जम रही थी पतली
सघन हो चली धीरे धीरे
वायु काटती थी मचली
प्रकृति मौन थी, किन्तु अभागो
मानव को विश्राम कहाँ
वर्गों की इस लूट चोट में
यहाँ शांति आवास कहाँ ?

शीत दिसम्बर सीत्कारी भर
ठिठुर रहा सा भिकुड़ा था
बम खड्डों का तम हिम में ज्यों
भू का अंचल उघड़ा था
तुहिन समीरण बोझल भूमा
आज चल रहा था पागल
खून रोकदे ऐसी चंचल
जोश भरी आतुर हलचल
ट्रैक्टर प्लैट अरे सब ही पर
चलता वह भी बाहिनि सा,
निर्भय रुक न किमी से सकता
नाद विताड़ित पगध्वनि का
बोल्गा पर प्रहार करता था
पानी सघन हुआ जाता
किंतु चटक कर भंवर मारता
विह्वल भयद हुआ जाता
तीर जम गये जैसे लहरें
बढ़ होगईं कारा में
लगीं दौड़ने बीच, शक्ति ले,
घुमड़ घुमड़ कर धारा में
और गिर रही बर्फ किलक कर
वायु फाड़ देती अञ्चल
ममता सी फिर हुई सम्मिलित
आहों सी बिखरी चंचल

आठ जनवरी को सहसा ही
रूसी बिगुल बजा निर्भय
जिसके स्वर पर नर्तन करता
भंडा श्वेत उठा लयमय
फर फर फहरा नभ में भंडा
गुञ्जित करता बलमय वेग
जर्मन सेना को देता था
आत्मसमर्पण का आदेश

‘लो बज उठा है अब बिगुल
उठो उठो सिपाहियो
कदम कदम प्रतिध्वनित
बढ़ो बढ़ो सिपाहियो
न भेद वर्ग के रहें
न भेद देश के रहें
मजूर हो किसान हो
समान हो सिपाहियो
लो जल उठा चिराग है
पुकार इन्कलाब है
ओ भूख से जले हुए
जगो जगो सिपाहियो
जो लूट है, जो स्वार्थ है
दरिद्र जिससे आर्त्त है
हमारा शत्रु है वही
हैं एक हम सिपाहियो
गरीब घर की रोशनी
महान हो सिपाहियो’

चले कमान्डर वह दो रूसी—
पर जर्मन समझे अपमान
गोली उगल उठीं बन्दूकें
करते थे अब भी अभिमान
वह खाली बादल गरजा था
मरते सैनिक की हुंकार
मृदुमृदु रुकरुफिर गुञ्जितकर
उठी संधि की यह भंकार

नौ बजने वाले थे भंडा
 ऊपर धीरे उठता था
 तोपों के पीछे से रूसी
 बल आतुर सा बढ़ता था
 नहीं भागने का पथ कोई
 चूहा बीच घिरा आकर
 भरा भराया बांध तोड़ने
 बना रहा था बिल आतुर
 लम्बी लम्बी मौन कतारें
 घेरे चलते रूसी थे
 डरी हुई आँखों के जर्मन
 निर्बल होकर बंदी थे
 महाशीत में भूखे मरते
 ठिठुर गये थे त्रस्त शरीर
 आत्म समर्पण कर देते थे
 अविश्वस्त से विकल अधीर
 हिटलर की आशाएं भग्ना
 तोड़ तोड़ छितराई थीं
 आज रूस की मधुर पिपासा
 धीरे से मुसकाई थी
 हिटलर क्रोधित तड़परहा था—
 स्तालिनग्रेद नहीं लेंगे—
 नाम घृणित स्तालिनका जिसमें
 ऐसा नगर नहीं लेंगे
 यह ईश्वर के शत्रु इन्हें तो
 मदद दे रहा है शैतान—
 अट्टहास कर उठती दुनिया
 हिटलर का करती अपमान
 लाशों से मैदान ढँक गये
 बना अहेरी स्वयं अहेर
 क्षण भर वोल्गा फिर हँसती है
 मुस्काता है स्तालिनग्रेद

सुना रूस ने सुना विश्व ने
 महा शान्ति का पहला छन्द
 मानवता का विजयकेतु वह
 बर्बरता पर हिला अमंद
 जर्मन मौन ; कमान्डर रूसी
 फर फर भंडे की लय पर
 चले समर्पण रिपु का पाने
 बजा विगुल उन्मुक्त निडर
 जर्मन दुर्बानों से तकते,
 फिर उनके नयनों को बांध
 अपनी ओर लेगये, बीता
 दिन—लौटे जब आई सांभ
 जर्मन दर्प अभी उन्नत था
 आत्मसमर्पण का आदेश
 ठुकराया था महाक्रुद्ध हो,
 नहीं पराजय में था लेश
 रात—और वह रूसी भौंपू
 वह ही बात पुकार उठे
 किंतु न जर्मन सेना दबती
 स्वर नभ में हुँकार उठे
 स्तालिनग्रेद भयंकर योद्धा
 बन कर सीधा खड़ा हुआ
 आज रूसियों की करुणा पर
 फासिस्टी शव पड़ा हुआ
 एक लाख जर्मन घायल थे
 और सहस्रों खेल रहे
 जिन पर चीलें मँडराती थीं
 और भेड़िये घेर रहे
 पर जनता के लाल सिपाही
 जनता का यह ध्वंस बिलोक
 चाह रहे थे अब भी अपने
 उठे हुए आयुध दें रोक

किंतु घिर गया है अब दुश्मन
 क्रसम नहीं जाने देंगे
 क्रांतिल के हथियार गिरा कर
 अब न उसे जाने देंगे
 एक ओर है क्रोध भयङ्कर
 एक ओर करुणा की रेख
 हमलावर के हाहाकारों
 से गूँजा फिर स्तालिनग्रेद
 जर्मन क्लिबन्धियों पर चढ़
 हमला किया रिज़ेफ पर जा
 जिसकी प्रतिध्वनि से माँस्को में
 जयध्वनि थी, नव साहस था
 रिज़ेफ व्याज्मा के हल्के में
 भीषण टैंक भड़क लड़ते
 हाँ! तेईस सहस्र मरे थे
 फासिस्टी शोले बुझते
 वायुयान पर चढ़ कर रूसी
 गिरा रहे नीचे परचे—
 'आत्मसमर्पण कर दो, कोई
 राह नहीं है जो बचते'
 हिटलर की वृष्णा हारी है
 सेना अस्त्र गिराती है
 मानवता की वर्वर्ता को
 अपने आप मिटाती है
 कहीं कहीं नीचे से उठते
 भण्डे संधिगीत से श्वेत
 घिरते ही जाते हैं जर्मन
 भूखा घायल स्तालिनग्रेद
 कबूतरों से फर फर उड़ते
 तैर रहे कागज ऊपर
 जिनको दृष्टि गड़ाये शंकित
 देख रहे जर्मन भू पर

सूखी खेती पर बूँदें ज्यों
 फिर हरियाली ले आतीं
 बुझे दीपकों में मानवता
 की बत्ती जलती जातीं
 एक रो उठा है वह जर्मन
 यह करुणा की देख प्रभा
 सोच रहा कैसे उसने ही
 हत्या की इनकी सहसा
 जिनकी लाशों पर हँसता था
 वही आज दुश्मन तक पर
 विपदाओं में फँसा देख यों
 दया कर रहे थे उस पर
 फेंक दिये हथियार हिटलरी
 गरज उठा वह मुक्त विवेक
 मानवता का पाठ सिखाया
 ओ जनता के स्तालिनग्रेद !
 आज जहाँ यह भाग मिला है
 अबीसीनिया में उस दिन
 मुसोलिनी के बेटे ने तो
 किया भयङ्कर बम वर्षण
 घायल और निहत्थों का जब
 हाहाकार उठा भीषण
 मुस्काया फासिस्ट पुत्र वह
 धधक रहे थे नगर विजन
 जिन हाथों ने बेकुसूर वह
 बच्चे बुढ़े मारे थे
 जिनकी भयद वासनाओं ने
 स्त्री के मान बिगाड़े थे
 उन्हीं दरिन्दों पर यह रहमत ?
 क्रांतिल रोता था अभिभूत
 यह करुणा की मार भयङ्कर
 गये हाथ से आयुध छूट

खुलीं आज आँखें दुनिया की
 यह जनता की जीत अभेद
 मजदूरों की हिम्मत पर ही
 था अजेय यह स्तालिनप्रेद
 थी निस्तब्धा किंतु गगन में
 ज्यों ही रवि झिलमिल आया
 गोली चटकी—आँधी बनकर,
 महावेग जीवित धाया
 धुंधला नभ मोरटार गनों की
 झुलसाती ज्वालाओं से
 फिर से क्षण भर दोम हो गया
 पागल मन सेनाओं के
 अपनी पूरी शक्ति अड़ा कर
 जर्मन बल की अगली पांति
 टूट पड़ी थी, दोनों सेना
 हिला रहीं थीं धरिणी भ्रांत
 घायल जर्मन उठ उठ आते
 हिटलर की सूनी आँखें
 मानों चमक रहीं या बुझतीं
 पर न मिली गहरी थाहें
 यूरुप जिनकी भीषण पगध्वनि
 से उठता था कांप वही
 सिंहों से दहाड़ कर झपटे
 पर लालों की शान अड़ी
 उठी भयंकर आग प्रलय की
 गोली ज्यों उन्माद भरीं
 आयुध की भीषण ध्वनियों में
 भाग रहीं थीं राग भरीं
 खूनी नयन भयद जलते थे
 पाषाणों का घर्षण था
 नाग लपलपा कड़क रही थी
 जीवन करता क्रन्दन था

लुब्ध वायु ज्यों टूट रही थी
 तड़क रहा था ज्यों आकाश
 रूसी तोपें गरज रहीं थीं
 उगल रहीं थी भीषण नाश
 वह चीत्कार पुकार गरज सब
 वह हुंकार कड़क भीषण
 एक गूंजती घहर हो रही
 भरती थी उन्मत्त गगन
 रूसी लहरें प्रबल वेग से
 चट्टानों पर आई टूट
 सागर मर्यादा उल्लंघन
 करने पर आया भर भूल
 टूटे जर्मन, तड़की सेना
 मार काट फिर उमड़ चलीं
 सागर को मथती लालों की
 फेनिल झपटें घुमड़ चलीं
 हाहाकारों से नभ गूंजा
 थहर उठा कम्पित बर्लिन
 नव किरणों में चमक रही थी
 रूसी संगीनों लालिम
 दक्षिण पश्चिम फ्रन्ट चलाता
 कर्नल जनरल वैट्यूटिन
 स्वच्छ कर रहा आज राह को
 आगे बढ़ता था क्षण क्षण
 स्तालिनप्रेद फ्रन्ट का नेता
 ऐरेमेन्को ऊब दृढ़ था
 तोड़ दिया भीषण भंभा बन
 नाजी बल उसने तृण सा
 डोंन फ्रन्ट से रोकसोवस्की
 बड़े नयन में हास्य भरे
 लहरों का सा गर्जन करता
 आता था उन्माद भरे

गोलीकोव भयंकर सेना
 वोरोनेज़ फ्रन्ट से ले
 दुस्तर कांटों सा नगरी को
 पल पल आता था घेरे
 उधर तिमोशेंको की बाहिनि
 सर्प बनी घिरती आती
 जिसकी फुङ्कारों में रिपु की
 मर्यादा जलती जाती
 सेना जनरल जुकोफ़ कर रहा
 था सब का संचालन घोर
 हँसिया घेर उठा था रिपु को
 और हथौड़े की थी चोट
 स्टैपी में अब लाखों मोटर
 बड़ी बड़ी थीं खड़ी हुईं
 जर्मन शव धर धर ले जातीं
 विकृत लाशें सड़ी हुईं
 युन्कर, मैसर्सिमट जहाज अब
 खंडहर बनकर बिखरे थे
 एक आद चीलों के दल हिल
 उड़ उड़ स्न पर बैठे थे
 स्टैपी मुग्ध गा रहा था कुछ
 नभ भी अलसा सोता था
 बहुत दिनों की जागी पृथ्वी
 हिम चादर को ओढ़ा था
 उत्तर पश्चिम दक्षिण पूरब
 की सेनाएं आ आ कर
 महानगर में विजयिनि घुसतीं
 नदियाँ ज्यों भरतीं सागर
 और नगर वह ध्वंस शेष था
 जिस पर दीपक आशा का
 विजय स्नेह से अगन प्रभा ले
 फैलाता था उजियाला

आज गया वह दिन जब पथपर
 होता था भीषण संग्राम
 आह ! औरतों बच्चों तक ने
 लगा दिया था अंतिम दांव
 वह मैनस्टीन नहीं आ पाया
 पौलस-जर्मन सेना का
 कुछ दिन पहले अभी हुआ था
 'फील्ड मार्शल', व्याकुल था
 घेर लिया रूसी-दल ने जा
 तो सब जर्मन बंदी थे
 आज पराजय की बेला में
 भेदहीन सब संगी थे
 एक ओर कुछ अफसर जाकर
 छिपे कोयलों में सहसा
 चूहों से बाहर ला खींचे
 रूसी साहस था बढ़ता
 जर्मन, रूमनियन अनेकों
 जितने देश विरुद्ध लड़े
 आज सभी के ये स्वार्थी दल
 रूसी पगतल त्रस्त पड़े
 यूनिट कोर डिबीज़न अगणित
 पैदल, मोटर टैंक अनेक
 या तो बंदी थे बिर्बल से
 या फिर आज रहे थे खेत
 जनरल, कर्नल, ऊँचे निष्ठुर
 सेना वाले वे बर्बर
 अपने अपने पद पर बंदी
 करते थे रह रह मर्मर
 हिटलर सुन पाया विह्वल सा
 पौलस भी तो बंदी था !
 आह वही जो रक्त पात में
 ज्वाल उगलता संगी था !

जो जनता की आज़ादी को
कुचल रहे सैनिक बल से
और दबाते हैं गोली से
या भूँठों से या छल से
कांप गये वह दिल ही दिल में
ऐसी चोट कड़ी खाकर
एक और जनता का साथी
गरज रहा था आज निडर
डेढ़ हज़ार स्थान जीते थे
रूसी सेना ने रिपु घेर
बाइस शत्रु डिवीज़न फाँसे
कारागृह था स्तालिनप्रेद
टैंक डिवीज़न ध्वस्त अगन वे
अगन डिवीज़न पैदल भगन
डेढ़ लाख अफसर जन बंदी
डेढ़ लाख चिर निद्रा भगन
यही शत्रु के भीषण जबड़े
चबा रहे जो जनता को
आज उखाड़े दांत भयद वे
उठते जर्मन सहसा रो
कल जो शेर बना गरजा था
खाल छीन ली ऊपर की
गीदड़ बन कर तड़प रहा था
लज्जित निर्दयता पर भी
कड़क उठा जो बिजली बनकर
पानी सा बहता तज वेग
आँख खुल गई सह न सका वह
रवि सा जलता स्तालिनप्रेद
वह फौजें जो दबी हुई थीं
देख रहीं थीं इस रण को
कांप रहीं ईरान देश में
हत्याओं के ताण्डव को

जो आशा करती थीं आया
अब आया दुश्मन भीषण
कैसे जीत सकेंगे उसको
सोच रहीं थीं मन ही मन
सिहर उठीं वे श्वास रोककर
इस घनघोर नाद को सुन
सह न सकीं विश्वास विजेता
मुँह की खाता था हर क्षण
वह हिटलर की फौज चली जो
ज्वालामुखि के लावा सी
डुबा जलाती ध्वंस मचाती
बुझती निर्बल धारा सी ?
रोक दिया था प्रबल वेग वह
रूसी बल के साहस ने
बिखर बिखर उठती वह धारा
मिटती थी जैसे सपने
खंडहर था वह ध्वस्त नगर अब
हंसते रोते रूसी जन
कूक उठे थे नव प्रभात में
गूँज रहीं थीं ज्योति किरन
बालक ढूँढ़ रहे अपने घर
नारी सुपने खोज रहीं
ज़ारित्सिन के वयोवृद्ध की
आँखें सुस्मित डोल रहीं
अरे बनेगा नया नगर फिर
बच्चे ईंट उठाते हैं
हृदय हृदय उन्मुक्त किलकते
मंगल गीत गुँजाते हैं
कल तक कैसी भीषणता थी
नगर ध्वस्त है, भूमि खुदी
नई खाद के बाद किंतु यह
मुक्ति फसल की ज्योति उगी

यूरुप के वे देश पराजित
 आया उनमें नूतन ज्वार
 हिटलर पागल सा फिरता था
 अपनी फौजों को ललकार
 पर ललकारें औ' वे जर्मन
 आज पराजय में डूबे
 नाज़ी नेताओं की भूठों
 से अब जर्मन भी उबे
 और चल उठी उल्टी आँधी
 हिले पेड़ से नाज़ी दल
 जैसे लोहे की रक्षा भी
 लोहे से हमले के बल
 चोट पड़ी चकराये जर्मन
 उधर लुब्ध था हिटलर भी
 कांप उठा था बर्केंसगोडन
 और निराशा थी घिरती
 सौ सौ दो सौ की क्रतार में
 आज हजारों ही दुश्मन
 टेड़ी मेढ़ी सड़कों पर से
 चलते निर्बल दुर्बल मन
 'हमें युद्ध से महा घृणा है
 शांति-संधि' यह चिल्लाते
 जिसको सुन सुन कर हिटलर के
 हिलकर अधर सिमट जाते
 ज्योत्स्ना खंडहर पर सोती है
 संध्या वोल्गा में न्हाती
 और भोर की नव चेतनता
 प्राणों में भरती जाती
 घोड़े विजयी हिन हिन करते
 घूम रहे हैं गलियों में
 धूँआ जली मोटरों से उठ
 छाता टूटी कड़ियों में

वे टूटे कन्दोप राह पर
 आज पत्थरों से बिखरे
 धरा रक्त से लाल सूखती
 राग उठे गिरि गह्वर से
 जहाँ मृत्यु ही खेल रही थी
 आज वहाँ नतशिर बंदी
 मौन चले जाते हैं घिर कर
 कल जिनकी तृष्णा अंधी
 जिनके पैरों की पगली ध्वनि
 से बच्चे तक भीत हुए
 जिनको देख नारियों के उर
 रुद्ध और अति दीन हुए
 जिनकी गति भीषण आँधी थी
 जिनकी इच्छाएं ज्वाला
 उजड़े ग्राम, ग्राम थे सूने
 वर घर छाया अंधियाला
 जो औरों का ले अपने में
 बल का संचय करते थे
 जनता के खूँ से शस्त्रों को
 जो निर्दय बन रंगते थे
 जिनकी तृष्णा मानवता के
 चीत्कारों पर खड़ी हुई
 आज हाय जीवन की भित्ति
 शरणागत बन पड़ी हुई
 कल जो हिम का शृङ्ग वेगमय
 महासिंधु में बहता था
 आज सूर्य की किरणें पड़कर
 खंड खंड हो गलता था
 वह जो मुँह थे बंद अचानक
 बोल उठे कुछ शब्द हुआ
 फिर चिड़ियां चहक़ीं, गल्लों का
 धीरे धीरे शोर हुआ

अब बुढ़े बच्चे तन पर के
 कोड़ों के व्रण दिखा रहे
 पथ पर छोटे छोटे बच्चे
 हँस हँस ऊधम मचा रहे
 कई मोटरों पर अब भी हैं
 भिन्न भिन्न भाषाओं में
 लिखा हुआ-बेलजियन फ्रेंच सा
 किंतु समी के छापों में
 जर्मन के साम्राज्यवाद का
 काला ईगल छपा हुआ
 शोषण और गुलामी का वह
 बर्बर लोहा गड़ा हुआ
 अभी अभी उखड़ेगा यह भी
 आज युद्ध है शुरू हुआ
 इतने ऊपर चढ़े हुए का
 अब गिरना है शुरू हुआ
 विजय विजय का झंडा फहरा
 जयनादों में उज्ज्वल वेप
 जनता के उस पूत रक्त से
 जगमग गरजा स्तालिनप्रेद
 दो फरवरी युद्ध बीता है
 स्तालिन का संदेश मिला
 महाशक्ति का नाद प्रवाहित
 गुञ्जित सा उन्मुक्त खिला
 बर्लिन रोम टोकियो थहरे
 पर जनता में हर्ष अपार
 आजादी के महासिंधु में
 नाची लहरें आया ज्वार
 बुझा हुआ भारत का दीपक
 जन गौरव से दीप्त हुआ
 साम्राज्यी वह शक्ति कांपती
 मन आशा से स्फीत हुआ

और कालिनिन बोल उठा है
 'भारत भी रक्षित है आज
 स्तालिनप्रेद, नहीं ! दूटी है
 फासिस्टों की धार अबोध'
 अरे हिंद की यह सीमाएं
 नहीं हिमालय की प्राचीर
 अरे हिंद की यह सीमाएं
 ब्रह्मपुत्र ही नहीं गभीर
 जनता के देशों की सीमा
 स्वतंत्रता औ' भ्रातृस्नेह
 जागो जग भर के मजलूमों
 आजादी है स्तालिनप्रेद
 लाल सिपाही की बाजू पर
 कोहकाफ हुंकार उठा
 जिसकी शक्ति गूंज बलखाती
 भारत भी ललकार उठा
 वह पग कुचल चुके थे अहि को
 लपटों को भी दाब दिया
 पूर्व और पश्चिम की आंधी
 मिल न सकी, अलगगाव किया
 और खंडहरों पर मिलते हैं
 बहुत दिनों के दूर हुए
 आलिंगन की चिर सुपमा में
 रण के वे दुख चूर हुए
 आज सोवियत गूंज उठा है
 गूंज उठा है जग सारा
 बाल नोंचता सा पागल है
 लो साम्राज्यी हत्यारा
 खंडहर हँसते से लगते हैं
 ज्वालामुखी से तृप्त अखेद
 धीरे धीरे नव भू उठती
 जय मृत्युञ्जय स्तालिनप्रेद

हुङ्कार

ओ
युगांतर से टपकती आँख !
पोंछ ले निज अश्रु जलते
देख तो बंदी तड़पते
देख !

उठ बागी गुलाम,
हो चुका है युद्ध
जय हो मुक्त
स्तालिनभेद

युद्ध
वर्गों का सतत संघर्ष
मानव शक्ति का अपकर्ष
पर जो युद्ध का अवसान
जय का गान
मानव त्राण
स्तालिनभेद

देख
जालिम के सुनहरे गीत
तेरे रक्त के अभिशाप
से बरबाद !

जाग
मेरे हिंद !
तेरी धूलि के जर्रे
बने सम्राट् के अभिमान,
फिर उड़े तेरी पताका
गूँज कर टकरा उठें ये
प्रबल तेरे गान !

देश बंधन से परे तू
देश को अपने उठा दे
बुद्धि का संकोच तज कर
आज सारा जग मिला ले

विजय का निर्घोष
जनता एक !
आत्मनिर्णय का मिले अधिकार
जीवन आज हो आजाद,
भंडा रक्त का उल्लास !

खंडहरों की गूँज
विजयी आज
स्तालिनभेद !

जनता की प्रबल हुंकार
मानव मुक्ति का जयनाद
शोषित क्रोध की भंकार ;
एक चेतन युद्ध—
अपनी शांति की
संस्कृति निबाहिनि क्रान्ति की
प्रिय ज्योति पर
तम का विकल आघात
एक टक्कर

हिल गये घर
जाति का वह दंभ
लुण्ठित आज अस्तः प्राय,
और वह बंधुत्व !
खलबल सिंधु में उन्मुक्त
जागो ओ किसानो आज
जागो ओ मजूरों आज

बागी के तड़पते गीत
भूखी अग्नि धूँआधार

रोकता तूफान
बोलो कौन ऐसा वीर !
आदमी हैवान
उसका दर्प करता चूर
मर कर भी न हटता आज
बोलो कौन ऐसा धीर !
वह किसान मजूर थे
युग युग रहे मजबूर
जनता की उठी तलवार
सहता कौन उसका वार ?

हो गई है भोर
मेरे हिन्दू
युग युग के तिमिर की आस—
ध्वस्त है सामंतशाही
ध्वस्त पूंजीवाद
वह उगा है लाल सूरज
जाग बंदी जाग !
देख
इटली की बड़ी मीनार
पर चढ़ कर प्रबल उन्मत्त
फाड़ डाला आज वह
फासिस्ट भंडा—
देख—
जग में आज है उन्माद
है हर देश में उत्साह,
छिन्न भिन्न हुए महानद
एक—
आज बन कर चल कि
फिर थर्रा उठे संसार
तड़क जाय बर्फ की

भिल्ली कि वह—
हुंकार !

यह करोड़ों की भुजाएं मौन
अग्नित हृदय जलते आज
आह मृत्युञ्जय प्रतिध्वनि
जग न पाई लाज ?

मरण जीवन दीप का है अंत
सत्य के हित सदा मानव
रहे—
यह है शक्ति !
अरे वह नक्षत्र—
भूत परिवर्तित सतत हैं
ज्योति बन कर लीन
ज्योति ही है ध्येय तेरा
शांति मंगल प्यार का आवास
जग बने समता प्रचुर का लाम

नृत्य सत्ता
और तू गर्हित विकल
सड़ता भुका सा मूक
उठना चाह कर भी रुद्ध
हिंदी जाग !
देख हिंदू
देख मुस्लिम
एक करुणा
एक समता
और पूंजीवाद के अभिशाप
से तू दीन और गुलाम ?
तू उगाता खेत
खाता किंतु केवल धूलि
तू मशीनों में रहा खिच
बना निर्बल तूल ?
आज पश्चिम का प्रभंजन

हट रहा अभिभूत
पूर्व की आंधी अभी
गहरा रही है पास
चोर यह घर में घुसा है
विकल सा साम्राज्य
मूर्खता पर आज तेरी
खड़ी उनकी शान ।

चेतना का भूत से संबंध
तेरा ज्ञान है निष्पीम
मानव !
देश राष्ट्र सभी निलय है
एक माध्यम मुक्ति के हैं
विश्व ही है राष्ट्र
मानव मात्र
सारे भेद हैं संकोच
गर्हित पाप है अभिमान
धन की चमक के अभिशाप,
तू अमर है
क्योंकि तेरी
धार है अविराम
तू ही ज्योति का निर्माण
आह !
ऐसा विश्व
जिसमें हो न शोषण शेष
मानव साम्य का गा गीत
करते प्रकृति से संघर्ष
अपनी ज्ञान की अभिलाष
में हों स्फीत !

आदि सभ्यों ने उठा कर एक
अल्प कंकड़ जो कि फेंका जाग
देख कितनी लहरियां उद्भूत
उससे फैलती हैं आज

भाग्य ह सभा—
उस ज्ञान की छू ज्योति
निर्मल कांति
जिसने चीन को दी शांति

आज यूगोस्लाव चेकोस्लाव
बेल्जियम बल्गेरिया औ' फ्रांस
के जागे हुए मजदूर
करते नींव पर आघात,
भागता है त्रस्त रोमेल
छोड़ मरु का देश ;
लाल सेना की भयद उन्मत्त
चरण ध्वनि पर भूमता है विश्व
रह रह कांपता बर्लिन
मौन हो जापान
अब भी ताकता है रह !

अरे हिंदी
कौन कहता है कि तू है रुद्ध
कर न पायेगा भयङ्कर युद्ध
युद्ध ही है आज सत्ता
आज जीवन
देख
संगठन कर
जातियों की लहर मिल कर
तू भयानक सिंधु,
राष्ट्र रक्षा के लिये ओ धीर
फिर उठाले आज
संस्कृति की पुरानी लाज
से भांगी हुई तलवार !

भूख से जनता मरेगी ?
बम जलायेंगे घरों को ?
और तू निर्वीर्य !
चल उठ मेघ सा

हुंकार !

हिंद

कण कण आज स्तालिनभेद

जय का वेष !

एक चिन्गी

फूंक से कल लपट बन कर

ज्वालिमों को घेर कर

धू धू जलेगी

जाग !

आह स्तालिनभेद !

आज वह खंडहर पड़ा है

हा विभव का नृत्य

कल करता जहाँ भंकार

किंतु गूंजेगी युगांतर

अमरता की धूलि से चिर

अभय अपराजित प्रबल

हुंकार !

यह प्रतीक कि

दब न पायेगी कभी

संस्कृति तुमने कल्याणदायिनि

मानवी वह ज्योति !

आज अभिवादन शहीदो

विश्व को तुमने दिखाया

सत्य का निर्वाह—

दलित शोषित त्राण

तम से मुक्ति !

अंधकलुषों के निष्ठुर आघात—

करके चूर तुमने—

जागरण का गीत गाया,

रक्त से लिख भूमि पर

दी शक्ति

यह आह्वान !

याद रखेगा तुम्हें इतिहास

गहन वन के मार्ग

धूलि से है उठ रही आवाज—

विश्व हो आजाद

जिन्दबाद !

